सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 25, नई दिल्ली । शनिवार, 05 अप्रैल 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 जहांगीरपुरी में पानी आ रहा है गंदा, परेशान है हर एक बंदा:राघव
06 भारत में दसवीं कक्षा के बाद राइट स्ट्रीम कैसे चुनें
08 आर्ट निर्भर भारत: प्रेमचंद के फटे जूते से आज के कलाकारों तक

दिल्ली के ऑटो मालिकों के लिए आई बड़ी खुशखबरी

संजय बाटला

दिल्ली में आटो तीन पहिया तीन सवारी वाहन मालिकों को दिल्ली परिवहन विभाग के एस.टी.ए. बोर्ड ने दी बड़ी खुशखबरी।

नई दिल्ली। एस.टी.ए.बोर्ड ने बैठक में फैसला लिया की अब दिल्ली के ऑटो मालिक अपने आटो को परमिट के साथ अगर खरीदना / बेचना चाहते हैं तो वह एक साल के बाद उसे हस्तांतरित कर/ करवा सकते हैं। पहले हस्तांतरण के लिए 5 (पांच) साल की बंदिश थी जिस कारण से दिल्ली में आटो मालिकों को बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता था और इस पाबंदी के कारण आटो मालिक आटो लोन करने वालों के चंगुल में फंसे रहते थे। एस.टी.ए.बोर्ड के इस निर्णय से दिल्ली में लगभग 70000 आटो मालिकों को फायदा मिलेगा और वह अपने नाम में आटो करवाकर चिन्ता और आ रही परेशानियों से मुक्त हो जाएंगे। **एस.टी.ए.बोर्ड के इस फैसले के आने पर दिल्ली की सभी आटो यूनियन और आटो मालिकों ने एस.टी.ए.बोर्ड के समस्त सदस्यों के साथ एस.टी.ए. शाखा और आटो शाखा के डीटीओ को धन्यवाद दिया।** एस.टी.ए. बोर्ड के फैसला आने के बाद इसे जल्द से कार्यान्वित करने की मांग भी सभी ने की।

हम आपको पहले ही सूचित कर चुके थे की परिवहन आयुक्त ने पूर्व में आम आदमी पार्टी सरकार के द्वारा नियुक्त सदस्यों के साथ 21 मार्च 2025 को एस.टी.ए. बोर्ड बैठक करवाई थी। जिसमें पूरे प्रयत्न के बावजूद एजेंडे की जानकारी उपलब्ध नहीं कराई गई थी। कल एस.टी.ए. बोर्ड बैठक के मिनिट्स जारी किए गए जिनमें ऐसा कोई भी एजेंडा नजर नहीं आया जो मुख्य हो मात्र एक आटो तीन पहिया तीन सवारी के एजेंडे के अतिरिक्त जिसके लिए यह बैठक अनिवार्य लगी। पिछले कई सालों से परिवहन आयुक्त द्वारा एस.टी.ए. बोर्ड की कोई भी बैठक नहीं करवाई गई थी। इस बैठक में एजेंडा नंबर 6a और 6b और उस पर लिए गए फैसले से दिल्ली में लगभग 70000 आटो मालिकों को फायदा प्राप्त होगा और उनसे अधिक फायदा दिल्ली की जनता को सुरक्षा के प्रति प्राप्त होने की आशा बंधी है। दिल्ली की जनता आज भी सबसे ज्यादा आटो की सेवा लेना पसंद करती है और आटो अगर सही मालिक के नाम पर पंजीकृत ना हो तो जनता के सुरक्षा को खतरा उत्पन्न होता ही है। एस.टी.ए. बोर्ड बैठक में लिए गए इस फैसले की मांग काफी समय से चल रही थी। आप भी जाने क्या था एजेंडा 6a और 6b और क्या फैसला किया गया उसका हिन्दी रूपांतर प्रस्तुत है

एजेंडा संख्या 6/2025 (एआरयू और टीयू शाखा)

विषयः परमिट शर्तों में संशोधन हेतु प्रस्ताव दिनांक 08.08.2012।

(क) परमिट शर्त के खंड 4 में संशोधन करके ऑटो रिक्शा के स्वामित्व के हस्तांतरण की शर्त को पांच वर्ष से घटाकर एक वर्ष करना, जिसे नीचे पुनः उद्धृत किया गया हैः-

खण्ड-4ः

ऑटो-रिक्शा परमिट पांच साल तक हस्तांतरित नहीं किया जा सकेगा, सिवाय परमिट धारक की मृत्यु के मामले में, जैसा कि मोटर वाहन अधिनियम, 1988 की धारा-82 और उसके तहत बनाए गए नियमों में निर्धारित है। उसके बाद, उसी श्रेणी के किसी व्यक्ति को हस्तांतरण पर विचार किया जा सकता है। यदि मृतक परमिट धारक का कानूनी उत्तराधिकारी नाबालिग, विधवा, दिव्यांग है और उसके पास वैध ड्राइविंग लाइसेंस और पीएसवी बैज नहीं है, तो वह परिवहन विभाग, दिल्ली द्वारा जारी वैध ड्राइविंग लाइसेंस और बैज वाले ड्राइवर को काम पर रख सकता है।

इस संबंध में यह बताना उचित है कि उक्त परमिट शर्त का संशोधन आवश्यक है क्योंकि उक्त शर्त वर्तमान समय में प्रासंगिक नहीं रह गई है और इन तथ्यों के मद्देनजर इसकी वैधता समाप्त हो गई है कि दिनांक 08.08.2012 की उक्त परमिट शर्त माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा लगाए गए 1,00,000 ऑटो रिक्शा के सीएपी के मद्देनजर पेश की गई थी, इसलिए इन परिस्थितियों में ऑटो डीलरों के साथ-साथ एनबीएफसी फर्मों द्वारा ऑटो रिक्शा मालिकों और चालकों के शोषण का विरोध और हतोत्साहित करने के लिए। अब लगाया गया प्रतिबंध लगभग तेरह साल पुराना है और 2018 तक की अवधि के दौरान, आवेदन आमंत्रित करके ऑटो रिक्शा का 95% कोटा आवंटित किया गया था और इस प्रकार दिए गए परमिट को पांच साल की निर्धारित अवधि के बाद समय-समय पर नवीनीकृत किया गया है। यह भी संज्ञान में आया है कि ऑटो डीलर और एनबीएफसी फर्म अब जारी किए गए ऑटो का शोषण कर रहे हैं, लेकिन डीएमवीआर, 1993 के नियम 7 में निर्धारित प्रावधानों के साथ इसके विरोधाभास के कारण, अदालत में याचिका दायर करके पहले उत्पन्न होने वाले किसी भी कानूनी उलझन से बचने के लिए यह आवश्यक हो गया है।

प्रस्ताव

यात्री वाहनों के चालकों/परिचालकों द्वारा पोशाक पहनने के संबंध में अस्पष्टता को दूर करने के लिए, क्योंकि डी.एम.वी.आर. के नियम 7 के प्रावधानों और स्टील ग्रे वर्दी पहनने के बाद के आदेशों के बीच विरोधाभास है, ताकि डी.एम.वी.आर., 1993 के नियम 7 में तदनुसार संशोधन किया जा सके।

संकल्प - 6(ए)/2025

एसटीए बोर्ड ने इस प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।

दिनांक 08.08.2012 के परमिट शर्त के खंड 4 में संशोधन करके ऑटो रिक्शा के स्वामित्व के हस्तांतरण की अवधि को पांच वर्ष से घटाकर एक वर्ष कर दिया गया।

(ख) ऑटो रिक्शा चालक की पोशाक.

डीएमवीआर, 1993 के नियम 7 के प्रावधानों के तहत यात्री वाहन चलाते समय वर्दी पहनना अनिवार्य है। अनुशासन और कानून के प्रावधानों को लागू करने के संबंध में कोई समझौता नहीं किया जा सकता है। वर्तमान में, ऑटो रिक्शा चालक द्वारा ग्रे रंग की वर्दी पहनना अनिवार्य है, लेकिन दिनांक 08.08.2012 की परमिट शर्त में ऐसी कोई शर्त निर्धारित नहीं की गई है। बार-बार, विभाग को विभिन्न न्यायालयों को अवगत कराने और आरटीआई अधिनियम, 2005 के माध्यम से मांगी गई जानकारी प्रस्तुत करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसलिए, स्पष्टता के लिए, उक्त शर्त को परमिट शर्त में शामिल किया जाना आवश्यक है। इसके अलावा, वर्ष 1993 में, यात्री वाहनों के चालक / कंडक्टर के लिए खाकी वर्दी पहनना अनिवार्य कर दिया गया था, लेकिन बाद में उक्त वर्दी होमगार्ड और नागरिक सुरक्षा कर्मियों आदि की वर्दी बन गई। इसलिए, अलग दिखने के लिए स्टील ग्रे वर्दी पहनने के लिए प्रशासनिक आदेश बार-बार परमिट धारक का अनुरोध था, जो अब या तो अनुमोदित है या STAT द्वारा पारित कोई अन्य आदेश है।

संकल्प 6(बी)/2025

एसटीए बोर्ड ने दिल्ली मोटर वाहन नियम, 1993 (डीएमवीआर) के नियम 7 में संशोधन करके प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है, ऑटो रिक्शा शाखा इस संबंध में उचित और आवश्यक कदम उठा सकती है।

अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर.एन.आई. द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर रहा है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद- विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वींएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योताचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला
संपादक

ई-रिक्शा चालकों पर धड़ाधड़ एक्शन, पुलिस ने 278 किए जब्त; 429 का चालान

गाजियाबाद संभाग के चारों जिलों में अवैध ई-रिक्शा के खिलाफ चेकिंग अभियान जारी है। नियमित रूप से ई-रिक्शा का चालान करने के साथ ही उन्हें जब्त भी किया जा रहा है। परिवहन कार्यालय में आरटीओ प्रवर्तन और आरटीओ प्रशासन ने प्रवर्तन टीमों के साथ अभियान की समीक्षा की और जरूरी निर्देश दिए। चौथे दिन गाजियाबाद जिले में 30 ई-रिक्शा का चालान और 19 को जब्त किया गया।

गाजियाबाद। शासन के निर्देश पर अवैध रूप से संचालित ई-रिक्शा के खिलाफ गाजियाबाद संभाग के चारों जिले गाजियाबाद, गौतमबुद्धनगर, हापुड़ व बुलंदशहर में चेकिंग अभियान जारी है। नियमित रूप से चारों जिलों ई-रिक्शा का चालान करने के साथ जब्त किया जा रहा है। वहीं शुक्रवार को परिवहन कार्यालय में आरटीओ प्रवर्तन केडी सिंह व आरटीओ प्रशासन प्रमोद कुमार सिंह ने प्रवर्तन टीमों के साथ अभियान की समीक्षा करते हुए प्रवर्तन टीमों को जरूरी निर्देश दिए। इस दौरान एआरटीओ प्रशासन राहुल श्रीवास्तव व अन्य अधिकारी मौजूद रहे। आरटीओ प्रवर्तन ने बताया कि अवैध, अपंजीकृत, नाबालिग चालकों द्वारा संचालित ई रिक्शा के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के चौथे दिन गाजियाबाद जिले में 30 ई-रिक्शा का चालान व 19 को जब्त किया गया। आरटीओ प्रशासन ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि सभी वाहन स्वामी अपने वाहनों के दस्तावेज पूरे रखें और नियमानुसार ही वाहनों का संचालन करें।

दिल्ली मेट्रो के मोमेंटम दिल्ली सारथी 2.0 एप से होगी यह परेशानी दूर होगी

दिल्ली मेट्रो का नया मोमेंटम दिल्ली सारथी 2.0 एप पर यात्रियों को टैक्सी सेवाएं भी मिलेगी। यह एप घर से स्टेशन और स्टेशन से गंतव्य तक आसान सफर का विकल्प देगा। इस एप से मेट्रो टिकट के साथ बाइक टैक्सी और ऑटो रिक्शा भी बुक हो सकेंगे। ऑटो-पे के सहयोग से शुरू हुई यह 'स्मार्ट डोर-टू-डोर ट्रैवल' सेवा अलग-अलग बुकिंग की जरूरत को खत्म करेगी।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। मेट्रो यात्रियों को अब न घर और कार्यालय से मेट्रो स्टेशन जाने में परेशानी होगी और न अंतिम स्टेशन से गंतव्य तक पहुंचने में। दिल्ली मेट्रो के मोमेंटम दिल्ली सारथी 2.0 एप से उनकी यह परेशानी दूर होगी। इस एप से वह मेट्रो टिकट के साथ ही बाइक टैक्सी और ऑटो रिक्शा भी बुक कर सकेंगे।

दिल्ली मेट्रो ने मोमेंटम दिल्ली सारथी 2.0 एप के माध्यम से 'स्मार्ट डोर-टू-डोर ट्रैवल' सेवा की शुरुआत की है। ऑटो-पे पेमेंट साल्यूशंस लिमिटेड के सहयोग से विकसित इस पहल से अब अलग-अलग बुकिंग की आवश्यकता समाप्त हो गई है।

फर्स्ट एंड लास्ट माइल कनेक्टिविटी की समस्या का समाधान होगा

दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) के प्रबंध निदेशक डॉ. विकास कुमार ने कहा, ₹इस एकीकृत सेवा की शुरुआत से शहरी आवागमन में फर्स्ट एंड लास्ट माइल कनेक्टिविटी की समस्या का समाधान होगा।₹

यात्रियों को यह सेवा उपलब्ध कराने के लिए डीएमआरसी ने बाइक टैक्सी और आटो-रिक्शा के लिए रैपिडो और महिलाओं के लिए बाइक टैक्सी उपलब्ध कराने वाली कंपनी शीराइड्स के साथ समझौता किया है।

इस तरह बुकिंग कर सकेंगे यात्री

1. उपयोगकर्ता एप पर अपने गंतव्य स्थल की जानकारी प्रविष्ट करता है। एप निकटतम मेट्रो स्टेशन और सबसे बेहतर फर्स्ट/ लास्ट माइल परिवहन विकल्पों का सुझाव देता है।

2.उपयोगकर्ता के स्थान से निकटतम मेट्रो स्टेशन तक पिक-अप के लिए बाइक टैक्सी या ऑटो-रिक्शा बुक किया जा सकता है।

3. अपनी यात्रा के अंतिम स्टेशन पर पहुंचने से पहले यात्री गंतव्य तक के लिए एक और राइड बुक कर सकता है।

4. यदि मेट्रो स्टेशन से गंतव्य नजदीक है तो तो एप में वाहन का कोई सुझाव नहीं मिलता है। इसके लिए पैदल नेविगेशन विकल्प उपलब्ध होगा।

साहिबी नदी के किनारे बनेगा नया सड़क कॉरिडोर; एनएचएआई को चार मार्गों का जिम्मा

राजधानी दिल्ली में बुनियादी ढांचे को बढ़ावा देने के लिए एक बड़ा कदम उठाया गया है। साहिबी नदी के दोनों किनारों पर ढांसा से बसई दारापुर तक एक सड़क कॉरिडोर विकसित किया जाएगा। इसके साथ ही पीडब्ल्यूडी की चार प्रमुख सड़कों को अब आधिकारिक रूप से एनएचएआई को सौंप दिया गया है जिससे इनके विस्तार और रखरखाव में तेजी आएगी।

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार ने राष्ट्रीय राजधानी में विश्वस्तरीय सड़क नेटवर्क स्थापित करने और यातायात को सुगम बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया गया है। सरकार ने साहिबी नदी के दोनों किनारों पर ढांसा से बसई दारापुर तक एक सड़क कॉरिडोर विकसित करने की योजना को मंजूरी दे दी है। इसके साथ ही सरकार ने पीडब्ल्यूडी की चार प्रमुख सड़कों को अब आधिकारिक रूप से एनएचएआई (राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण) को सौंप दिया है, जिससे इनके विस्तार और रखरखाव में तेजी आएगी।

पीडब्ल्यूडी मंत्री प्रवेश वर्मा की अध्यक्षता में शुक्रवार को हुई उच्च स्तरीय समन्वय समिति की पहली बैठक में दिल्ली में यातायात अवरोधों को दूर करने, विभिन्न एजेंसियों के ओवरलैप को रोकने और प्रमुख सड़क परियोजनाओं को गति देने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। पीडब्ल्यूडी मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के गतिशील नेतृत्व में दिल्ली को एक आधुनिक, सुव्यवस्थित और विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचे से सुसज्जित करने के लिए सरकार पूरी प्रतिबद्धता से कार्य कर रही है।

यातायात व्यवस्था में क्रांतिकारी बदलाव लाएगा नया कॉरिडोर

उन्होंने कहा कि साहिबी नदी किनारे नया कॉरिडोर राजधानी की यातायात व्यवस्था में क्रांतिकारी बदलाव लाएगा। यह परियोजना दिल्लीवासियों को जाम की समस्या से राहत देने के साथ-साथ एक वैकल्पिक यातायात मार्ग भी प्रदान करेगी। कहा कि इन फैसलों से दिल्ली को बेहतर कनेक्टिविटी, यातायात की समस्या से राहत और विश्वस्तरीय सड़क सुविधाएं मिलने का मार्ग प्रशस्त होगा।

साहिबी नदी किनारे बनने वाली नई सड़कें यातायात के बोझ कम करेंगी

दिल्ली में बढ़ते यातायात दबाव को कम करने के लिए साहिबी नदी के दोनों किनारों पर धांसा से वसई धरापुरी तक दोनों तरफ एक समर्पित सड़क कॉरिडोर विकसित किया जाएगा। यह नई सड़कें राजधानी में ट्रैफिक का बोझ कम करेंगी और वैकल्पिक मार्ग के रूप में काम करेंगी।

एनएच-48 से नारायणा के लिए समर्पित स्लिप रोड

धौला कुआं मेट्रो स्टेशन के पास स्थित पुलिस स्टेशन को स्थानांतरित कर एनएच-48 से नारायणा के लिए एक समर्पित स्लिप रोड बनाई जाएगी। इससे इस मार्ग पर वाहनों की निर्बाध आवाजाही सुनिश्चित होगी और यातायात जाम की समस्या कम होगी।

चार प्रमुख पीडब्ल्यूडी सड़कें अब एनएचएआइ के अधीन

दिल्ली की सड़क संरचना को और अधिक उन्नत और व्यवस्थित बनाने के लिए चार प्रमुख पीडब्ल्यूडी सड़कों को अब आधिकारिक रूप से एनएचएआइ को सौंप दिया गया है।

ये हैं सौंपी गई सड़कें

- दिल्ली-रोहतक रोड (एनएच-10): पीरागढ़ी से टिकरी बार्डर (13.2 किमी)
- दिल्ली-रोहतक रोड (एनएच-10): पीरागढ़ी से जखीरा (6.8 किमी)
- एनएच-2 (मथुरा रोड): आली गांव से रिंग रोड, आश्रम जंक्शन (7.5 किमी)

माता का आठवां स्वरूप : माँ महागौरी

माँ दुर्गाजी की आठवीं शक्ति का नाम महागौरी है। दुर्गापूजा के आठवें दिन महागौरी की उपासना का विधान है। इनकी शक्ति अमोघ और सद्यः फलदायिनी है। इनकी उपासना से भक्तों को सभी कल्मष धुल जाते हैं, पूर्वसंचित पाप भी विनष्ट हो जाते हैं। भविष्य में पाप-संताप, दैन्य-दुःख उसके पास कभी नहीं जाते। वह सभी प्रकार से पवित्र और अक्षय पुण्यों का अधिकारी हो जाता है।

इनका वर्ण पूर्णतः गौर है। इस गौरता की उपमा शंख, चंद्र और कुंद के फूल से दी गई है। इनकी आयु आठ वर्ष की मानी गई है- 'अष्टवर्षा भवेद् गौरी।' इनके समस्त वस्त्र एवं आभूषण आदि भी श्वेत हैं। महागौरी की चार भुजाएँ हैं। इनका वाहन वृषभ है। इनके ऊपर के दाहिने हाथ में अभय मुद्रा और नीचे वाले दाहिने हाथ में त्रिशूल है। ऊपरवाले बाएँ हाथ में डमरू और नीचे के बाएँ हाथ में वर-मुद्रा हैं। इनकी मुद्रा अत्यंत शांत है।

माँ महागौरी ने देवी पार्वती रूप में भगवान शिव को पति-रूप में प्राप्त करने के लिए कठोर तपस्या की थी, एक बार भगवान भोलेनाथ ने पार्वती जी को देखकर कुछ कह देते हैं। जिससे देवी के मन का आहत होता है और पार्वती जी तपस्या में लीन हो जाती हैं। इस प्रकार वर्षों तक कठोर तपस्या करने पर जब पार्वती नहीं आती तो पार्वती को खोजते हुए भगवान शिव उनके पास पहुँचते हैं। वहाँ पहुँचे तो वहाँ पार्वती को देखकर आश्चर्य चकित रह जाते हैं। पार्वती जी का रंग अत्यंत ओजपूर्ण होता है, उनकी छटा चांदनी के सामन श्वेत और कुन्द के फूल के समान धवल दिखाई पड़ती है, उनके वस्त्र और आभूषण से प्रसन्न होकर देवी उमा को गौर वर्ण का वरदान देते हैं।

एक कथा अनुसार भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिए देवी ने कठोर तपस्या की थी जिससे इनका शरीर काला पड़ जाता है। देवी की तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान इन्हें स्वीकार करते हैं और शिव जी इनके शरीर को गंगा-जल से धोते हैं तब देवी विद्युत के समान अत्यंत कांतिमान गौर वर्ण की हो जाती हैं तथा तभी से इनका नाम गौरी पड़ा। महागौरी रूप में देवी करूणामयी, स्नेहमयी, शांत और मृदुल दिखती हैं। देवी के इस रूप की प्रार्थना करते हुए देव और ऋषिगण कहते हैं- "सर्वमंगल मंग्ल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके. शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ।" महागौरी जी से संबंधित एक अन्य कथा भी प्रचलित है इसके जिसके अनुसार, एक सिंह काफी भूखा था, वह भोजन की तलाश में वहाँ पहुँचा जहाँ देवी उमा तपस्या कर रही होती हैं। देवी को देखकर सिंह की भूख बढ़ गयी परन्तु वह देवी के तपस्या से उठने का इंतजार करते हुए वहीं बैठ गया। इस इंतजार में वह काफी कमजोर हो गया। देवी जब तप से उठी तो सिंह की दशा देखकर उन्हें उस पर बहुत दया आती है और माँ उसे अपना सवारी बना लेती हैं क्योंकि एक प्रकार से उसने भी तपस्या की थी। इसलिए देवी गौरी का वाहन बैल और सिंह दोनों ही हैं।

> **माँ महागौरी ने देवी पार्वती रूप में भगवान शिव को पति-रूप में प्राप्त करने के लिए कठोर तपस्या की थी, एक बार भगवान भोलेनाथ ने पार्वती जी को देखकर कुछ कह देते हैं। जिससे देवी के मन का आहत होता है और पार्वती जी तपस्या में लीन हो जाती हैं। इस प्रकार वषों तक कठोर तपस्या करने पर जब पार्वती नहीं आती तो पार्वती को खोजते हुए भगवान शिव उनके पास पहुँचते हैं। वहाँ पहुँचे तो वहाँ पार्वती को देखकर आश्चर्य चकित रह जाते हैं। पार्वती जी का रंग अत्यंत ओजपूर्ण होता है, उनकी छटा चांदनी के सामन श्वेत और कुन्द के फूल के समान धवल दिखाई पड़ती है, उनके वस्त्र और आभूषण से प्रसन्न होकर देवी उमा को गौर वर्ण का वरदान देते हैं।**

माँ महागौरी का ध्यान, स्मरण, पूजन-आराधना भक्तों के लिए सर्वविध कल्याणकारी है। हमें सदैव इनका ध्यान करना चाहिए। इनकी कृपा से अलौकिक सिद्धियों की प्राप्ति होती है। मन को अनन्य भाव से एकनिष्ठ कर मनुष्य को सदैव इनके ही पादारविन्दों का ध्यान करना चाहिए। महागौरी भक्तों का कष्ट अवश्य ही दूर करती हैं। इनकी उपासना से आर्तजनों के असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं। अतः इनके चरणों की शरण पाने के लिए हमें सर्वविध प्रयत्न करना चाहिए।

अष्टमी के दिन महिलाएं अपने सुहाग के लिए देवी मां को चुनरी भेंट करती हैं। देवी गौरी की पूजा का विधान भी पूर्ववत है अर्थात जिस प्रकार सप्तमी तिथि तक आपने माँ की पूजा की है उसी प्रकार अष्टमी के दिन भी प्रत्येक दिन की तरह देवी की पंचोपचार सहित पूजा करते हैं।

पुराणों में माँ महागौरी की महिमा का प्रचुर आख्यान किया गया है। ये मनुष्य की वृत्तियों को सत्‌ की ओर प्रेरित करके असत्‌ का विनाश करती हैं। हमें प्रपत्तिभाव से सदैव इनका शरणागत बनना चाहिए।

या देवी सर्वभूतेषु माँ गौरी रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ :- हे माँ ! सर्वत्र विराजमान और माँ गौरी के रूप में प्रसिद्ध अम्बे, आपको मेरा बार-बार प्रणाम है। हे माँ, मुझे सुख-समृद्धि प्रदान करो।

"जय माता दी"

चैत्र नवरात्रा की दुर्गाष्टमी

चैत्र का महीना जगत जननी मां दुर्गा को समर्पित होता है। इस महीने में चैत्र नवरात्र मनाया जाता है। इस दौरान देवी मां दुर्गा और उनके नौ रूपों की भक्ति भाव से पूजा की जाती है। साथ ही मनचाहा वरदान पाने के लिए साधक व्रत रखते हैं। वहीं, विशेष विद्या सीखने वाले साधक देवी मां दुर्गा की कठिन साधना करते हैं। जगत जननी मां दुर्गा की पूजा करने से साधक को मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। साथ ही जीवन में सुखों का आगमन होता है। चैत्र नवरात्र के शुभ अवसर पर साधक श्रद्धा भाव से देवी मां दुर्गा और उनके सभी रूपों की पूजा करते हैं।

दुर्गा अष्टमी का शुभ मुहूर्त

वैदिक पंचांग के अनुसार, चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि 04 अप्रैल को भारतीय समयानुसार रात 08 बजकर 12 मिनट पर शुरू होगी। वहीं, अष्टमी तिथि का समापन 05 अप्रैल को शाम 07 बजकर 26 मिनट पर होगा। सनातन धर्म में उदया तिथि मान है। अतः 05 अप्रैल को चैत्र नवरात्र की दुर्गा अष्टमी मनाई जाएगी।

दुर्गा अष्टमी पर शुभ योग

ज्योतिषियों की मानें तो चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि पर भद्रावास योग का निर्माण हो रहा है। दुर्गा अष्टमी पर सुकर्मा योग का भी संयोग बन रहा है। इसके अलावा, पुनर्वसु नक्षत्र का भी संयोग है। इन योग में मां दुर्गा की पूजा करने से साधक की हर मनोकामना पूरी होगी। साथ ही सुख और सौभाग्य में वृद्धि होगी।

दुर्गा अष्टमी की पूजा विधि

दुर्गाष्टमी के दिन सुबह जल्दी उठकर सबसे पहले स्नान करें और साफ-सुथरे कपड़े पहनें। मंदिर की सफाई करें और गंगाजल का छिड़काव करें। अब एक चौकी पर मां दुर्गा की मूर्ति या फिर तस्वीर स्थापित करें और देवी का गंगाजल से अभिषेक करें। पूजा के दौरान माता रानी को लाल रंग के वस्त्र, फूल और श्रृंगार का सामान अर्पित करें और घी का दीपक जलाएं।

माता को हलवा, खीर और काले चने आदि का भोग लगाएं। इसके बाद दुर्गा सप्तशती और दुर्गा चालीसा का पाठ करें और अंत में आरती करें। कई साधक इस दिन पर कन्या पूजन भी करते हैं। इस दौरान कन्याओं को भोजन कराएं और उन्हें कुछ-न-कुछ उपहार दें। साथ ही इस दिन पर हवन कराना भी काफी शुभ माना जाता है।

क्यों खास है यह तिथि

दुर्गा अष्टमी की पूजा में देवी दुर्गा के सभी नौ रूपों की पूजा-अर्चना का विधान है। इस दिन खासतौर से मां महागौरी की पूजा-अर्चना की जाती है, जो मान्यताओं के अनुसार, राहु ग्रह को शासित करती हैं। ऐसे में दुर्गा अष्टमी के अवसर पर विधिवत रूप से मां महागौरी की पूजा करने से साधक को राहु ग्रह के दुष्प्रभाव से मुक्ति मिल सकती है।

कामदेव के तेरह तथ्य जानकर चौंक जाएंगे आप

हिन्दू धर्म में कामदेव, कामसूत्र, कामशास्त्र और चार पुरुषार्थों में से एक काम की बहुत चर्चा होती है। खजुराहो में कामसूत्र से संबंधित कई मूर्तियां हैं। अब सवाल यह उठता है कि क्या काम का अर्थ सेक्स ही होता है? नहीं, काम का अर्थ होता है कार्य, कामना और कामेच्छा से। वह सारे कार्य जिससे जीवन आनंददायक, सुखी, शुभ और सुंदर बनता है काम के अंतर्गत ही आते हैं। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

आपने कामदेव के बारे में सुना या पढ़ा होगा। पौराणिक काल की कई कहानियों में कामदेव का उल्लेख मिलता है। जितनी भी कहानियों में कामदेव के बारे में जहां कहीं भी उल्लेख हुआ है, उन्हें पढ़कर एक बात जो समझ में आती है वह यह कि कि कामदेव का संबंध प्रेम और कामेच्छा से है।

लेकिन असल में कामदेव हैं कौन? क्या वह एक काल्पनिक भाव है जो देव और ऋषियों को सताता रहता था या कि वह भी किसी देवता की तरह एक देवता थे?आजो जानते हैं कामदेव के बारे में 13 रहस्य...

कामदेव का परिवार :पौराणिक कथाओं के अनुसार कामदेव भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी के पुत्र हैं। उनका विवाह रति नाम की देवी से हुआ था, जो प्रेम और आकर्षण की देवी मानी जाती है। कुछ कथाओं में यह भी उल्लिखित है कि कामदेव स्वयं ब्रह्माजी के पुत्र हैं और इनका संबंध भगवान शिव से भी है। कुछ जगह पर धर्म की पत्नी श्रद्धा से इनका आविर्भाव हुआ माना जाता है।

प्रेम के देवता :जिस तरह पश्चिमी देशों में क्यूपिड और यूनानी देशों में इरोस को प्रेम का प्रतीक माना जाता है, उसी तरह हिन्दू धर्मग्रंथों में कामदेव को प्रेम और आकर्षण का देवता कहा जाता है।

कामदेव के अन्य नाम: 'रागवृंत', 'अनंग', 'कंदर्प', 'मनमथ', 'मनसिजा', 'मदन', 'रतिकांत', 'पुष्पवान' तथा 'पुष्पधंव' आदि कामदेव के प्रसिद्ध नाम हैं। कामदेव को अर्धदेव या गंधर्व भी कहा जाता है, जो स्वर्ग के वासियों में कामेच्छा उत्पन्न करने के लिए उत्तरदायी हैं। कहीं-कहीं कामदेव को यक्ष की संज्ञा भी दी गई है।

कामदेव का स्वरूप :कामदेव को सुनहरे पंखों से युक्त एक सुंदर नवयुवक की तरह प्रदर्शित किया गया है जिनके हाथ में धनुष और बाण हैं। ये तोते के रथ पर मकर (एक प्रकार की मछली) के चिह्न से अंकित लाल ध्वजा लगाकर विचरण करते हैं। वैसे कुछ शास्त्रों में हाथी पर बैठे हुए भी बताया गया है।

कामदेव के धनुष और बाण :उनका धनुष मिठास से भरे गन्ने का बना होता है जिसमें मधुमक्खियों के शहद की रस्सी लगी है। उनके धनुष का बाण अशोक के पेड़ के महकते फूलों के अलावा सफेद, नीले कमल, चमेली और आम के पेड़ पर लगने वाले फूलों से बने होते हैं।

कामदेव के पास मुख्यत:5 प्रकार के बाण हैं।कामदेव के 5 बाणों के नाम :1. मारण, 2. स्तम्भन, 3. जृम्भन, 4. शोषण, 5. उम्मादन (मन्मन्थ)।

मदन-कामदेव मंदिर :मदन-कामदेव मंदिर को 'असम का खजुराहो' के नाम से जाना जाता है। वहां की मैथुन-प्रतिमाएं मध्यप्रदेश के खजुराहो की याद दिलाती हैं। सेक्स के देवता कामदेव और उनकी पत्नी रति की कथा को आज भी ये जीवंत बना रही हैं। यह मंदिर घने जंगलों के भीतर पेड़ों से छुपा हुआ है। कहते हैं कि भगवान शंकर द्वारा तृतीय नेत्र खोलने पर भस्म हो गए कामदेव का इस स्थान पर पुनर्जन्म तथा उनकी पत्नी रति के साथ पुनः मिलन हुआ था।

कामदेव की ऋतु वसंत :वसंत पंचमी के दिन कामदेव की पूजा की जाती है। वसंत कामदेव का मित्र है इसलिए कामदेव का धनुष फूलों का बना हुआ है। इस धनुष की कमान स्वरविहीन होती है यानी जब कामदेव जब कमान से तीर छोड़ते हैं तो उसकी आवाज नहीं होती है।

कामदेव का एक नाम 'अनंग' है यानी बिना शरीर के ये प्राणियों में बसते हैं। एक नाम 'मार' है यानी यह इतने मारक हैं कि इनके बाणों का कोई कवच नहीं है। वसंत ऋतु को प्रेम की ही ऋतु माना जाता रहा है। इसमें फूलों के बाणों से आहत हृदय प्रेम से सराबोर हो जाता है।

यहां रहता है कामदेव का वास :

यौवनं स्त्री च पुष्पाणि सुवासानि महामतेः।
गानं मधुरश्चैव मृदुलाण्डजशब्दकः।।
उद्यानानि वसन्तश्च सुवासाश्चन्दनादयः।
सङ्गो विषयसक्तानां नराणां गुह्यदर्शनम्।।
वायुर्मदः सुवासश्च वस्त्राण्यपि नवानि वै।
भूषणादिकमेवं ते देहा नाना कृता मया।।

मुद्गल पुराण के अनुसार कामदेव का वास यौवन, स्त्री, सुंदर फूल, गीत, पराग कण या फूलों का रस, पक्षियों की मीठी आवाज, सुंदर बाग-बगीचों, वसंत ऋतु, चंदन, काम-वासनाओं में लिप्त मनुष्य की संगति, छुपे अंग, सुहानी और मंद हवा, रहने के सुंदर स्थान, आकर्षक वस्त्र और सुंदर आभूषण धारण किए शरीरों में रहता है। इसके अलावा कामदेव स्त्रियों के शरीर में भी वास करते हैं, खासतौर पर स्त्रियों के नयन, ललाट, भौंह और होठों पर इनका प्रभाव काफी रहता है।

1.कामदेव और शिव :जब भगवान शिव की पत्नी सती ने पति के अपमान से आहत और पिता के व्यवहार से क्रोधित होकर यज्ञ की अग्नि में आत्मदाह कर लिया था तब सती ने ही बाद में पार्वती के रूप में जन्म लिया। सती की मृत्यु के पश्चात भगवान शिव संसार के सभी बंधनों को तोड़कर, मोह-माया को पीछे छोड़कर तप में लीन हो गए। वे आंखें खोल ही नहीं रहे थे।

ऐसे में सभी देवों की अनुशंसा पर कामदेव ने उन पर अपना बाण चलाकर शिव के भीतर देवी पार्वती के लिए आकर्षण विकसित किया। शिव ने क्रोधित होकर जब आंखें खोलीं तो उससे कामदेव भस्म हो गए। हालांकि बाद में शिवजी ने उन्हें जीवनदान दे दिया था, लेकिन बगैर देह के।

श्रीकृष्ण और कामदेव :पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण को भी कामदेव ने अपने नियंत्रण में लाने का प्रयास किया था। कामदेव ने भगवान श्रीकृष्ण से यह शर्त लगाई कि वे उन्हें भी स्वर्ग की अप्सराओं से भी सुंदर गोपियों के प्रति आसक्त कर देंगे। श्रीकृष्ण ने कामदेव की सभी शर्त स्वीकार की और गोपियों संग रास भी रचाया लेकिन फिर भी उनके मन के भीतर एक भी क्षण के लिए वासना ने घर नहीं किया।

रति ने पाला कामदेव को पुत्र की तरह फिर उनसे कर लिया विवाह :जब शिव ने कामदेव को भस्म कर दिया तब ये देख रति विलाप करने लगी तब जाकर शिव ने कामदेव के पुनः कृष्ण के पुत्र रूप में धरती पर जन्म लेने की बात बताई। शिव के कहे अनुसार भगवान श्रीकृष्ण और रुक्मणि को प्रद्युम्न नाम का पुत्र हुआ, जो कि कामदेव का ही अवतार था।

कहते हैं कि श्रीकृष्ण से दुश्मनी के चलते राक्षस शंभरासुर नवराज प्रद्युम्न का अपहरण करके ले गया और उसे समुद्र में फेंक आया। उस शिशु को एक मछली ने निगल लिया और वो मछली मछुआरों द्वारा पकड़ी जाने के बाद शंभरासुर के रसोई घर में ही पहुंच गई।

तब रति रसोई में काम करने वाली मायावती नाम की एक स्त्री का रूप धारण करके रसोईघर में पहुंच गई। वहां आई मछली को उसने ही काटा और उसमें से निकले बच्चे को मां के समान पाला-पोसा। जब वो बच्चा युवा हुआ तो उसे पूर्व जन्म की सारी याद दिलाई गई। इतना ही नहीं, सारी कलाएं भी सिखाईं तब प्रद्युम्न ने शंभरासुर का वध किया और फिर मायावती को ही अपनी पत्नी रूप में द्वारका ले आए।

भगवान ब्रह्मा ने दिया वरदान: पौराणिक कथाओं के अनुसार एक समय ब्रह्माजी प्रजा वृद्धि की कामना से ध्यानमग्न थे। उसी समय उनके अंश से तेजस्वी पुत्र काम उत्पन्न हुआ और कहने लगा कि मेरे लिए क्या आज्ञा है? तब ब्रह्माजी बोले कि मैंने सृष्टि उत्पन्न करने के लिए प्रजापतियों को उत्पन्न किया था किंतु वे सृष्टि रचना में समर्थ नहीं हुए इसलिए मैं तुम्हें इस कार्य की आज्ञा देता हूं। यह सुन कामदेव वहां से विदा होकर अदृश्य हो गए।

यह देख ब्रह्माजी क्रोधित हुए और शाप दे दिया कि तुमने मेरा वचन नहीं माना इसलिए तुम्हारा जल्दी ही नाश हो जाएगा। शाप सुनकर कामदेव भयभीत हो गए और हाथ जोड़कर ब्रह्माजी के समक्ष क्षमा मांगने लगे। कामदेव की अनुनय-विनय से ब्रह्माजी प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा कि मैं तुम्हें रहने के लिए 12 स्थान देता हूं- स्त्रियों के कटाक्ष, केश राशि, जंघा, वक्ष, नाभि, जंघमूल, अधर, कोयल की कूक, चांदनी, वर्षाकाल, चैत्र और वैशाख महीना। इस प्रकार कहकर ब्रह्माजी ने कामदेव को पुष्प का धनुष और 5 बाण देकर विदा कर दिया।

ब्रह्माजी से मिले वरदान की सहायता से कामदेव तीनों लोकों में भ्रमण करने लगे और भूत, पिशाच, गंधर्व, यक्ष सभी को काम ने अपने वशीभूत कर लिया। फिर मछली का ध्वज लगाकर कामदेव अपनी पत्नी रति के साथ संसार के सभी प्राणियों को अपने वशीभूत करने बढ़े। इसी क्रम में वे शिवजी के पास पहुंचे। भगवान शिव तब तपस्या में लीन थे तभी कामदेव छोटे से जंतु का सूक्ष्म रूप लेकर कर्ण के छिद्र से भगवान शिव के शरीर में प्रवेश कर गए। इससे शिवजी का मन चंचल हो गया।

उन्होंने विचार धारण कर चित्त में देखा कि कामदेव उनके शरीर में स्थित है। इतने में ही इच्छा शरीर धारण करने वाले कामदेव भगवान शिव के शरीर से बाहर आ गए और आम के एक वृक्ष के नीचे जाकर खड़े हो गए। फिर उन्होंने शिवजी पर मोहन नामक बाण छोड़ा, जो शिवजी के हृदय पर जाकर लगा। इससे क्रोधित हो शिवजी ने अपने तीसरे नेत्र की ज्वाला से उन्हें भस्म कर दिया।

कामदेव को जलता देख उनकी पत्नी रति विलाप करने लगी। तभी आकाशवाणी हुई जिसमें रति को रुदन न करने और भगवान शिव की आराधना करने को कहा गया। फिर रति ने श्रद्धापूर्वक भगवान शंकर की प्रार्थना की।

रति की प्रार्थना से प्रसन्न हो शिवजी ने कहा कि कामदेव ने मेरे मन को विचलित किया था इसलिए मैंने इन्हें भस्म कर दिया। अब अगर ये अनंग रूप में महाकाल वन में जाकर शिवलिंग की आराधना करेंगे तो इनका उद्धार होगा।

तब कामदेव महाकाल वन आए और उन्होंने पूर्ण भक्तिभाव से शिवलिंग की उपासना की। उपासना के फलस्वरूप शिवजी ने प्रसन्न होकर कहा कि तुम अनंग, शरीर के बिन रहकर भी समर्थ रहोगे। कृष्णावतार के समय तुम रुक्मणि के गर्भ से जन्म लोगे और तुम्हारा नाम प्रद्युम्न होगा।

कामदेव मंत्र :कामदेव के बाण ही नहीं, उनका 'क्लीं मंत्र' भी विपरीत लिंग के व्यक्ति को आकर्षित करता है। कामदेव के इस मंत्र का नित्य दिन जाप करने से न सिर्फ आपका साथी आपके प्रति शारीरिक रूप से आकर्षित होगा बल्कि आपकी प्रशंसा करने के साथ-साथ वह आपको अपनी प्राथमिकता भी बना लेगा।

कहा जाता है कि प्राचीनकाल में वेश्याएं और नर्तकियां भी इस मंत्र का जाप करती थीं, क्योंकि वे अपने प्रशंसकों के आकर्षण को खोना नहीं चाहती थीं। ऐसा माना जाता है कि इस मंत्र का लगातार जाप करते रहने की वजह से उनका आकर्षण, सौंदर्य और कांति बरकरार रहती थी।

कब है हनुमान जन्मोत्सव ?

देश के कोने-कोने में भक्तगण अपनी स्थानीय मान्यताओं के आधार पर वर्ष में भिन्न-भिन्न समय पर हनुमान जन्मोत्सव के रूप में हनुमान जी का जन्मोत्सव मनाते हैं। विशेषकर उत्तर भारतीय राज्यों में इस पर्व को अत्यंत उत्साह के साथ मनाया जाता है, जोकि सबसे अधिक लोकप्रिय भी है।

हनुमान जन्मोत्सव - 12 अप्रैल 2025, शनिवार (चैत्र पूर्णिमा)
पूर्णिमा तिथि प्रारम्भ- 12 अप्रैल 2025, 03:21 AM
पूर्णिमा तिथि समापन 13 अप्रैल, 2025, 05:51 AM
इस दिन के अन्य मुहूर्त
ब्रह्म मुहूर्त - 04:08 AM से 04:53 AM
अमृत काल- 11:23 AM से 01:11 PM
अभिजीत मुहूर्त - 11:33 AM से 12:24 PM
राहुकाल - 08:49 AM से 10:24 AM
सूर्योदय- 05:38 AM
सूर्यास्त - 06:19 PM
चंद्रोदय- 05:52 PM
चन्द्रास्त - 05:33 AM, 13 अप्रैल
नक्षत्र- हस्त
योग- व्याघात

ऐसी मान्यता है कि कपीश हनुमान सूर्योदय के समय जन्मे थे इसलिए इस पर्व पर मन्दिरों में प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में आध्यात्मिक प्रवचनों का आयोजन होता है।

फेफड़ो की सफाई करने का घरेलू नुस्खा

यह नुस्खा फेफड़ों को, धूम्रपान या किसी और तरह से होने वाले नुक्सान से बचा कर रखेगा।

जानिये इस नुस्खे के बारे में

सामग्री :-

1 इंच अदरक
400ग्राम प्याज
400 ग्राम शुद्ध शहद
2 चम्मच हल्दी पाउडर
1 लीटर पानी

विधि/इस्तेमाल करने का तरीका :-

पानी और शहद को आग पर रखे और उबालें।

जब यह मिश्रण उबलने लगे तो इसमें कटा हुआ अदरक और प्याज डालें।

अब मिश्रण में हल्दी डाल कर इसे तब तक धीमी आग पर रखें जब तक यह सारा मिश्रण कम हो कर आधा नहीं रह जाता।

जब यह मिश्रण आधा रह जाए तो इसे आग से हटा लें और इस मिश्रण को सामान्य तापमान तक ठंडा होने दें।

मिश्रण ठंडा होने के बाद इस मिश्रण को ग्लास जार में निकाल कर फ्रिज में स्टोर करके रखें।

2 चम्मच रोजाना खाली पेट
और 2 चम्मच रात को सोने से 2 घंटे पहले
इस मिश्रण का सेवन
आपके फेफड़ों को समय से पहले खराब होने से बचा सकता है। धूम्रपान आपकी और आपके आस पास के लोगों की सेहत के लिए बहुत हानिकारक है इसे जल्द से जल्द त्याग कर स्वस्थ जीवन का आनंद प्राप्त करें।

भारत कुमार को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

मनोज कुमार — एक युग, एक विचार, एक भावना

24 जुलाई 1937 को अविभाजित भारत के अब्बोटाबाद (अब पाकिस्तान में) में जन्मे हरिकृष्ण गिरि गोस्वामी, विभाजन के समय अपने परिवार के साथ दिल्ली आ बसे। यहीं से उनके जीवन की कठिन यात्रा शुरू हुई, जिसने आगे चलकर उन्हें 'मनोज कुमार' के रूप में नई पहचान दी। दादी के कहने पर उन्होंने दिलीप कुमार से प्रेरणा लेकर अपना नाम 'मनोज' रखा। उनके भीतर राष्ट्रप्रेम का बीज बचपन से ही रोपित हो चुका था। 4 अप्रैल की सुबह, जैसे ही यह दुःखद समाचार आया कि मनोज कुमार जी अब हमारे बीच नहीं रहे, देशभर में एक भावनात्मक शून्यता फैल गई। ऐसा लगने लगा जैसे भारतीय सिनेमा का एक पूरा युग अपने परदे से विदा ले चुका है। उनके निधन ने फिल्म प्रेमियों, कला साधकों और आम जनमानस को झकझोर दिया।

प्रियंका सौरभ

जब भी भारतभूमि से जुड़ी फिल्मों और कलाकारों की बात होती है, तो एक नाम स्वाभाविक रूप से मन में आता है – मनोज कुमार। यह नाम सिर्फ एक अभिनेता का नहीं, बल्कि एक विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता है। वह विचारधारा, जो देशभक्ति, मानवीयता, समाजिक चेतना और आत्मीयता को अपने कलेवर में समेटे हुए है। मनोज कुमार को 'भारत कुमार' की उपाधि यूँ ही नहीं मिली – यह उनके जीवन, उनके काम और उनके नज़रीये की स्वाभाविक परिणति थी।

4 अप्रैल की सुबह, जैसे ही यह दुःखद समाचार आया कि मनोज कुमार जी अब हमारे बीच नहीं रहे, देशभर में एक भावनात्मक शून्यता फैल गई। ऐसा लगने लगा जैसे भारतीय सिनेमा का एक पूरा युग अपने परदे से विदा ले चुका है। उनके निधन ने फिल्म प्रेमियों, कला साधकों और आम जनमानस को झकझोर दिया।

प्रारंभिक जीवन – एक साधारण बालक से भारत कुमार तक

24 जुलाई 1937 को अविभाजित भारत के अब्बोटाबाद (अब पाकिस्तान में) में जन्मे हरिकृष्ण गिरि गोस्वामी, विभाजन के समय अपने परिवार के साथ दिल्ली आ बसे। यहीं से उनके जीवन की कठिन यात्रा शुरू हुई, जिसने आगे चलकर उन्हें 'मनोज कुमार' के रूप में नई पहचान दी। दादी के कहने पर उन्होंने दिलीप कुमार से प्रेरणा लेकर अपना नाम 'मनोज' रखा।

उनके भीतर राष्ट्रप्रेम का बीज बचपन से ही रोपित हो चुका था। विभाजन की त्रासदी ने उनके भीतर देश और समाज के प्रति गहरी संवेदना पैदा की। यही कारण था कि जब उन्हें सिनेमा में अवसर मिला, उन्होंने उसका उपयोग मात्र प्रसिद्धि के लिए नहीं, बल्कि जन-जागरण के माध्यम के रूप में किया।

सिनेमा में पदार्पण और पहचान

मनोज कुमार ने अपने फिल्मी करियर की शुरुआत 1957 में फिल्म 'फैशन' से की। शुरुआती वर्षों में उन्होंने कई रोमांटिक और पारिवारिक फिल्मों में काम किया – 'हरियाली और रास्ता', 'वो कौन थी', 'हिमालय की गोद में' जैसी फिल्में उन्हें लोकप्रिय बनाती रहीं।

परंतु 1965 में आई फिल्म 'शहीद' ने उन्हें एक नई पहचान दी। यह भगत सिंह के जीवन पर आधारित फिल्म थी, और मनोज कुमार ने इसमें जिस समर्पण से भूमिका निभाई, वह लोगों के दिलों में बस गई। इसके बाद उन्होंने 'राष्ट्रप्रेम' को अपनी फिल्मों का मुख्य तत्व बना लिया।

'उपकार' और भारत कुमार की स्थापना

1967 में रिलीज़ हुई 'उपकार' उनके जीवन का टर्निंग पॉइंट बनी। यह फिल्म तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के 'जय जवान, जय किसान' के नारे से प्रेरित थी। मनोज कुमार ने इसमें न केवल अभिनय किया, बल्कि निर्देशन और लेखन भी किया। फिल्म के माध्यम से उन्होंने किसान और सैनिक के जीवन को जिस आत्मीयता और यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया, वह सिनेमा के इतिहास में मील का पत्थर बन गया।

₹मेरे देश की धरती सोना उगले, उगले हीरे मोती₹

यह गीत आज भी हर भारतीय के हृदय में देशभक्ति की भावना को जीवंत कर देता है। यही वह फिल्म थी जिसने मनोज कुमार को 'भारत कुमार' बना दिया।

सिनेमा और सामाजिक सरोकार

मनोज कुमार का सिनेमा मात्र मनोरंजन नहीं था। उनकी फिल्मों में सामाजिक सन्देश, राष्ट्रप्रेम और मानवीय करुणा का अद्वितीय संगम था।

'रोटी कपड़ा और मकान' (1974) ने बेरोजगारी, गरीबी और व्यवस्था के प्रति निराशा को संवेदनशील तरीके से दर्शाया। यह फिल्म आज भी प्रासंगिक मानी जाती है।

'पूरब और पश्चिम' (1970) ने भारतीय संस्कृति और पाश्चात्य प्रभावों के टकराव को जिस

संतुलन के साथ प्रस्तुत किया, वह आज के दौर में भी उतना ही समीचीन लगता है।

'क्रांति' (1981) में उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम की भावना को एक भव्य और भावनात्मक रूप में जीवंत किया। यह फिल्म भी ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण मानी जाती है।

गीतों में संवेदना और विचार

मनोज कुमार की फिल्मों के गीत महज़ मनोरंजन का साधन नहीं थे, वे विचारों की अभिव्यक्ति थे। जैसेः

₹बस यही अपराध मैं हर बार करता हूँ, आदमी हूँ आदमी से प्यार करता हूँ₹ – मानवता का उद्घोष।

₹कसमें वादे प्यार वफ़ा सब बातें हैं बातों का क्या₹ – प्रेम और पीड़ा की गहराई।

इन गीतों ने न केवल फिल्म को हिट बनाया, बल्कि पीढ़ियों तक के दिलों को छुआ। मनोज कुमार का सिनेमा इसलिए अमर है क्योंकि उसमें शब्दों से अधिक भावों का स्थान था।

व्यक्तित्व – पर्दे से परे

जहाँ एक ओर वे राष्ट्रभक्त नायक थे, वहीं दूसरी ओर वास्तविक जीवन में भी वे उतने ही सरल, सहज और विनम्र थे। उद्योग में उनके साथ काम करने वाले सभी लोग उनके आत्मीय व्यवहार के साक्षी रहे हैं।

वे लोकप्रियता के शिखर पर होते हुए भी दिखावटी जीवन से दूर रहे। पुरस्कारों के प्रति उनका दृष्टिकोण भी विनम्र था – उन्होंने कई बार सरकारी सम्मान लेने से भी परहेज़ किया। यह उनके आदर्शवादी दृष्टिकोण और निष्ठा को दर्शाता है।

सम्मान और पुरस्कार

मनोज कुमार को 1992 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया।

उन्हें दादा साहब फाल्के पुरस्कार (2016) से भी नवाजा गया, जो भारतीय सिनेमा का सर्वोच्च सम्मान है।

इसके अलावा उन्हें कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी प्राप्त हुए।

अंतिम विदाई – एक युग का अंत

4 अप्रैल 2025 की सुबह, जब यह समाचार आया कि मनोज कुमार नहीं रहे, तो देश भर से शोक संदेश आने लगे। राजनेता, अभिनेता, लेखक, पत्रकार – सभी ने उन्हें श्रद्धांजलि दी।

उनके निधन के साथ भारतीय सिनेमा का वह अध्याय समाप्त हुआ, जिसमें सिनेमा केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज का दर्पण था।

आज जब देश 'न्यू इंडिया' की बात करता है, तब भी मनोज कुमार का सिनेमा 'रियल इंडिया' की याद दिलाता है – वह भारत जो गाँव में बसता है, जो मिट्टी से जुड़ा है, जो मानवीय मूल्यों को सर्वोपरि मानता है।

निष्कर्ष – स्मृति शेष नहीं, प्रेरणा शेष

मनोज कुमार अब शारीरिक रूप से हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी आत्मा उनके गीतों, फिल्मों और विचारों में जीवित है। वे एक कलाकार से कहीं बढ़कर, एक विचारधारा थे। उनके जैसा संयोजन – अभिनेता, लेखक, निर्देशक और राष्ट्रप्रेमी – अब विरल होता जा रहा है।

हम उन्हें मन, वचन और कर्म से नमन करते हैं।

उनकी जीवन-यात्रा हम सबके लिए प्रेरणा का स्रोत रहेगी।

भारत कुमार अमर रहें।

सिनेमा का सच्चा सिपाही: मनोज कुमार को श्रद्धांजलि

मनोज कुमार—एक ऐसा नाम, जो भारतीय सिनेमा के विशाल आकाश में स्वर्णिम किरणों से अंकित है। वे महज एक अभिनेता नहीं थे, बल्कि देशभक्ति की धधकती ज्योति और सांस्कृतिक गौरव का एक ऐसा प्रतीक थे, जिसने सिल्वर स्क्रीन को एक नया आयाम, एक नई आत्मा दी। जब भी सिनेमा के फलक पर राष्ट्रप्रेम की बात होगी, मनोज कुमार का नाम गर्व की गूंज और श्रद्धा की सुगंध के साथ उभरेगा। 4 अप्रैल को उनके निधन की खबर ने हर हृदय को मर्मांतक पीड़ा से भर दिया, मानो सिनेमा का एक तेजस्वी नक्षत्र अनंत आकाश की गहराइयों में समा गया हो। वे एक कलाकार से कहीं ऊँचे थे—एक ऐसी प्रेरणा, जिसने अपनी कला को देश के सम्मान की मशाल और समाज की जागृति का दर्पण बना दिया।

24 जुलाई 1937 को हरिकृष्ण गिरि गोस्वामी के रूप में जन्मे मनोज कुमार का जीवन एक प्रेरक कथा है। दिलीप कुमार के अभिनय से प्रभावित होकर उन्होंने 'शबनम' फिल्म के किरदार 'मनोज' को अपने नाम के रूप में चुना। शुरुआती दिनों में कठिनाइयों का सामना करने के बावजूद, उन्होंने हार नहीं मानी। धीरे-धीरे अपनी मेहनत और प्रतिभा के बल पर वे भारतीय सिनेमा के शीर्ष कलाकारों में शामिल हो गए। उनका यह सफर न केवल उनकी लगन का प्रमाण है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि सच्ची प्रतिभा किसी परिचय की मोहताज नहीं होती।

मनोज कुमार की खासियत उनकी फिल्मों का वह अनूठा अंदाज था, जो उन्हें समकालीन कलाकारों से अलग करता था। जब सिनेमा में ग्लैमर और हल्के-फुल्के मनोरंजन का बोलबाला बढ़ रहा था, तब उन्होंने अपनी कृतियों से एक नया रास्ता दिखाया। उनकी फिल्में केवल कहानियाँ नहीं थीं, बल्कि देशप्रेम और सामाजिक जागरूकता की एक जीवंत तस्वीर थीं। 'शहीद' में उन्होंने भगत सिंह की शहादत को इस कदर जीवंत किया कि दर्शकों के रोंगटे खड़े हो गए। यह फिल्म आजादी के लिए बलिदान की भावना को फिर से जागृत करने वाली एक मशाल बन गई।

1965 में भारत-पाक युद्ध के दौरान प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री का नारा 'जय जवान, जय किसान' मनोज कुमार के दिल में इस कदर उतर गया कि उन्होंने 'उपकार' का निर्माण किया। इस फिल्म में उन्होंने एक किसान और सैनिक की दोहरी भूमिका निभाई,

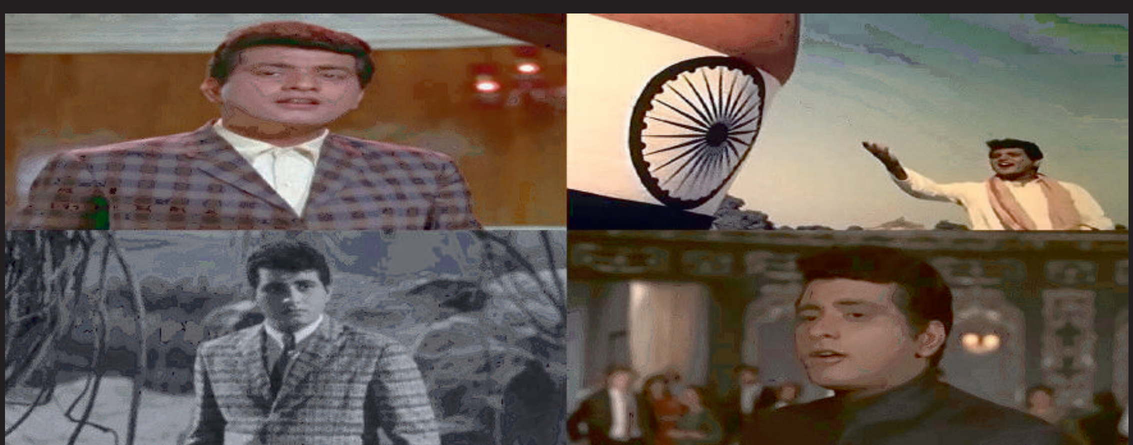

जो देश की नींव—इसके अन्नदाता और रक्षक—का प्रतीक बनी। उनकी संवेदनशीलता और गहरी सोच ने इस फिल्म को एक ऐतिहासिक कृति बना दिया। 'उपकार' की सफलता के बाद उन्हें 'भारत कुमार' की उपाधि मिली—एक ऐसा सम्मान, जो उनके सिनेमा के प्रति समर्पण और देश के प्रति उनकी निष्ठा का प्रतीक बन गया।

'पूरब और पश्चिम' में मनोज कुमार ने भारतीय संस्कृति की महानता को वैश्विक मंच पर स्थापित किया। इस फिल्म के जरिए उन्होंने पश्चिमी प्रभावों के बीच अपनी पहचान को बचाए रखने का संदेश दिया। वहीं, 'क्रांति' में उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम की ज्वाला को फिर से सुलगाया। इन फिल्मों में उनके संवाद इतने प्रभावशाली थे कि वे दर्शकों के दिलों में गहरे उतर गए। उनकी हर कृति में एक उद्देश्य था—समाज को प्रेरित करना और उसे सोचने के लिए मजबूर करना। उनकी आंखों में झलकती दृढ़ता और आवाज में बसी गहराई ने उन्हें सिनेमा का एक ऐसा नायक बनाया, जो केवल पर्दे पर नहीं, बल्कि लोगों के मन में भी बसा।

मनोज कुमार केवल अभिनय तक सीमित नहीं रहे। वे एक कुशल लेखक और संवेदनशील निर्देशक भी थे। उनकी फिल्मों में जो विचारधारा झलकती थी, वह उनकी गहन चिंतनशीलता का परिणाम थी। उन्होंने सिनेमा को एक नई दिशा दी—एक ऐसा मंच, जहाँ मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा और प्रेरणा भी मिले। जब सिनेमा में चमक-दमक और भव्यता का दौर शुरू हुआ, तब भी वे अपनी सादगी और मूल्यों से कभी समझौता नहीं किए। उनकी यह अटल निष्ठा ही थी, जिसने उन्हें दर्शकों के बीच एक खास मुकाम दिलाया।

उनका योगदान सिनेमा की सीमाओं से परे था। उनकी फिल्मों ने न केवल मनोरंजन किया, बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव की नींव भी रखी। 'रोटी, कपड़ा और मकान' जैसी फिल्मों में उन्होंने आम आदमी की जिंदगी की सच्चाइयों को उजागर किया। उनकी कृतियाँ केवल कहानियाँ नहीं थीं, बल्कि एक दर्पण थीं, जो समाज को उसका चेहरा दिखाती थीं। यही कारण है कि उनकी फिल्मों को सिर्फ कला के नजरिए से नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना के एक मजबूत आधार के रूप में देखा जाता है।

मनोज कुमार का व्यक्तित्व उनकी फिल्मों जितना ही प्रेरक था। वे हमेशा भारतीय संस्कृति और मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहे। सादगी उनकी पहचान थी, और यही सादगी उनकी कला में भी झलकती थी। वे उन गिने-चुने कलाकारों में से थे, जिन्होंने अपनी शर्तों पर सिनेमा को जिया। उनकी फिल्मों में जो संदेश थे, वे आज भी प्रासंगिक हैं। चाहे वह देशभक्ति हो, संस्कृति का सम्मान हो या सामाजिक जागरूकता—उनकी हर कृति आज की पीढ़ी के लिए एक सबक है।

मनोज कुमार की अद्वितीय कला और योगदान को 'पद्मश्री' और 'दादा साहेब फाल्के पुरस्कार' जैसे प्रतिष्ठित सम्मानों से सजाया गया। मगर इन अलंकारों से कहीं अधिक अनमोल था वह असीम स्नेह और अपार सम्मान, जो दर्शकों ने उन्हें अपने दिलों की गहराइयों से अर्पित किया। उनकी फिल्मों के संवाद आज भी लोगों की जुबान पर नृत्य करते हैं, मानो समय की धारा को चुनौती दे रहे हों। 'मेरे देश की धरती सोना उगले' जैसे गीत आज भी हर भारतीय के हृदय में देशभक्ति की ज्वाला प्रज्वलित करते हैं—एक ऐसी मधुर धुन, जो आत्मा को झंकृत कर देती है। ये गीत और संवाद उनकी अमर विरासत के वह रत्न हैं, जो युगों-युगों तक चमकते रहेंगे।

मनोज कुमार का निधन किसी युग का समापन नहीं, बल्कि एक अनंत प्रेरणा का सूरज है, जो अपनी किरणों से हमेशा हमें आलोकित करता रहेगा। उनकी कृतियाँ और विचार समय की सीमाओं को लाँघकर आज भी हमारे बीच जीवंत हैं। उनकी फिल्में नई पीढ़ी के लिए एक मशाल बनकर उभरती हैं, जो यह सिखाती हैं कि सिनेमा केवल मन को बहलाने की कला नहीं, बल्कि समाज को झकझोरने, प्रेरित करने और नवनिर्माण का एक अजेय हथियार भी हो सकता है। आज जब हम उनकी स्मृति में सिर झुकाते हैं, तो यह महज एक रस्म नहीं, बल्कि उनके प्रति हमारी असीम कृतज्ञता का वह भाव है, जो शब्दों से परे है।

मनोज कुमार कोई साधारण नाम नहीं, बल्कि एक ऐसी विचारधारा थे, जिसने सिनेमा को देश के गौरव और समाज के उत्थान का दर्पण बना दिया। वे एक ऐसे महानायक थे, जिनकी कला में देशभक्ति की धड़कन थी, सोच में मूल्यों की गहराई थी और विरासत में प्रेरणा का खजाना था। भले ही वे आज हमारे सामने न हों, लेकिन उनकी फिल्मों की वह गूंज—जो कभी 'जय जवान, जय किसान' के नारे में ढली, तो कभी 'मेरे देश की धरती' की मिठास में बसी—वह कभी क्षीण नहीं होगी। उनके संदेशों की वह रोशनी, जो अंधेरों को चीरती है, हमेशा हमें रास्ता दिखाती रहेगी। ऐसे अप्रतिम रत्न को कोटि-कोटि नमन।

मनोज कुमार चले गए माटी का कर्ज चुका कर....

दिग्गज अभिनेता मनोज कुमार ने 87 साल की उम्र में अंतिम सांस ली। लोगों के दिलों में हमेशा उनकी अमिठ यादें बसी रहेंगी। अभिनेता मनोज कुमार काफी समय से बीमार से चल रहे थे। उनके बेटे कुणाल ने देशवासियों के साथ यह दुखद खबर साझा की थी। आइए जानते हैं मनोज कुमार की कहानी कहां से शुरू हुई थी।

दशकों पहले की बात है। बंटवारे के बाद दिल्ली आ बसे पंजाबी रिफ्यूजियों की एक बस्ती किंग्सवे कैंप के एक मोहल्ले में मात्र एक घर में टेलीविजन था। हफ्ते में एक बार कोई फिल्म आती या फिल्मी गानों का कार्यक्रम 'चित्रहार', तो बच्चों-बड़ों की भीड़ वहीं जुटती। लेकिन जब कभी अभिनेता मनोज कुमार का कोई गाना या फिल्म दिखाई जाती तो बड़ी उम्र के दर्शकों में खासा उत्साह नजर आता। कोई न कोई बुजुर्ग तो बोल ही देता-'यह तो अपना हरिकृष्ण है, हमारे साथ खेला करता था।' वहां मौजूद बच्चे यह बात हैरानी से सुनते। तब किसे पता था कि हैरान होते उन बच्चों में से एक आगे चल कर फिल्म पत्रकारिता का रास्ता अपनाएगा और ऐसा भी दुख भरा दिन आएगा कि उसे उन्हीं हरिकृष्ण गोस्वामी यानी मनोज कुमार को श्रद्धांजलि देता आलेख लिखना पड़ेगा। 4 अप्रैल, 2025 वही दुख भरा दिन है जिसकी सुबह यह मनहूस खबर लेकर आई कि मनोज कुमार अब दैहिक रूप से हमारे बीच नहीं रहे। लेकिन मनोज कुमार जैसे लोग कहीं जाते नहीं हैं। अपने सिनेमा से वह हमारे दिलों में तो सदा ही रहेंगे-भारत कुमार बन कर।

सिनेमा से प्यार

हरिकृष्ण को सिनेमा से प्यार तो बचपन में ही हो चला था। दस बरस की उम्र में उन्होंने 'जुगनू' फिल्म देखी जिसका नायक सूरज फिल्म के अंत में मर जाता है। इसके कुछ ही समय बाद उन्होंने उसी चेहरे को एक और फिल्म के होर्डिंग पर देखा तो हैरान हुए। बाल-सुलभ जिज्ञासा उपजी और पता चला कि फिल्मों में किसी का 'मरना' असल में मरना नहीं होता और 'जुगनू' के नायक दिलीप कुमार ही अब 'शहीद' के हीरो बन कर आ रहे हैं। यह तो बढ़यि है-बालक हरिकृष्ण ने सोचा कि बड़े होकर यही काम किया जाए ताकि हर बार एक नई जिंदगी, एक नया किरदार जीने को मिल सके। यहां से सिनेमा के प्रति आसक्ति बढ़ी और हरिकृष्ण फिल्में देखने व उनमें डूबने लगे। कुछ बरस बीते और एक दिन उन्हें दिल्ली में हुए फिल्म 'टांगा वाली' के प्रीमियर शो में जाने का अवसर मिला जिसके निर्देशक लेखराज भाकरी उनके रिश्तेदार थे। प्रीमियर में सज-संवर कर पहुंचे हरिकृष्ण को देख कर लेखराज बोले-अरे, तुम तो हीरो लगते हो! हरिकृष्ण ने खट से जवाब दिया-तो बना दीजिए हीरो। घर-परिवार में विचार-विमर्श हुआ और दो महीने बाद वह अपना बोरिया-बिस्तर बांध कर तब के बंबई शहर जा पहुंचे-हीरो बनने के लिए।

मुश्किल डगर का राही

फिल्मी दुनिया में उनके कजिन लेखराज भाकरी मौजूद तो थे लेकिन फिल्मों की राह आसान नहीं थी। भाकरी ने उन्हें अपनी अगली फिल्म 'फैशन' में एक रोल भी दिया और इस तरह से 19 साल की उम्र में उन्होंने 90 साल के आदमी का किरदार निभा कर अपना अभिनय सफर आरंभ किया। इसके बाद भी छुटपुट फिल्मों में उन्हें काम मिला और पढ़ने-लिखने के अपने शौक के चलते उन्होंने कुछ फिल्मी लेखकों के लिए घोस्ट-राइटिंग भी की, मगर पैर जमा कर लगाई जाने वाली ऊंची छलांग अभी बाकी थी। इस बीच सलाह मिली कि हरिकृष्ण जैसा नाम किसी फिल्मी हीरो पर नहीं जंचेगा तो उन्होंने अपने प्रिय अभिनेता दिलीप कुमार की फिल्म 'शबनम' में उनके किरदार मनोज के नाम पर अपना नाम मनोज कुमार रख लिया। समय ने पलटी मारी और एक ही हफ्ते में उन्हें 'कांच की गुड़यि' व 'पिकनिक' जैसी दो फिल्में मिल गईं। यहां से गाड़ी चली और विजय भट्ट की 'हरियाली और रास्ता' की सफलता से इस गाड़ी ने रफ्तार पकड़ ली।

देश की बात

'हरियाली और रास्ता' की कामयाबी के बाद मनोज कुमार के प्रचारक मित्र केवल पी. कश्यप ने उनके साथ एक फिल्म बनाने की इच्छा प्रकट की। मनोज ने बताया कि उनके पास एक आइडिया है। वह आइडिया हर किसी को पसंद आया और मनोज ने उस पर रिसर्च शुरू कर दी। इस तरह से जो फिल्म बन कर सामने आई उसका नाम था-'शहीद'। इस फिल्म को शहीद भगत सिंह पर बनी तमाम फिल्मों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। यहां तक कि भगत सिंह की माता विद्यावती ने भी मनोज कुमार पर अपना भरपूर प्यार बरसाया और वह अपने अंतिम समय तक मनोज कुमार को अपने बेटे की तरह मानती रहीं। 'शहीद' ने मनोज कुमार को एक और भी अनन्य प्रशंसक दिया। एक रात उनके फोन की घंटी बजी और एक महान व्यक्तित्व ने 'शहीद' में उनके काम की सराहना करते हुए उन्हें अपने घर पर आमंत्रित किया। अगले ही दिन मनोज कुमार दिल्ली में थे जहां उनके सामने बैठे थे देश के महान सपूत और तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री। शास्त्री जी ने उनसे अपने दिए नारे 'जय जवान जय किसान' पर सिनेमा जैसे अत्यंत प्रभावी माध्यम के द्वारा देश की आम जनता तक उनका संदेश पहुंचाने के लिए कोई फिल्म बनाने का आग्रह किया। बताते हैं कि उसके बाद मनोज कुमार ने दिल्ली से मुंबई की रेल-यात्रा में इस विषय पर एक फिल्म की स्क्रिप्ट तैयार कर ली थी। एक

गरीबों के लिए दान दी गई संपत्तियों पर चैरिटेबल अस्पताल, स्कूल-कॉलेज, स्टेडियम और आश्रय स्थल बनने चाहिए - : राजेश खुराना

वक्फ संपत्तियों और गरीबों के लिए दिये दान के पैसे का इस्तेमाल असहाय, महिलाओं और गरीबों की भलाई के लिए होना चाहिए - : राजेश खुराना

अपील --- भ्रम और देश विरोधी राजनीति छोड़कर असहाय गरीबों के वास्तविक विकास पर ध्यान दें और इस ऐतिहासिक बदलाव को सकारात्मक रूप से स्वीकार करें, ताकि गरीबों की भलाई हो सके और संविधान की मर्यादा बनी रहे - : राजेश खुराना

आगरा, संजय साग़र सिंह। संसद में वक्फ संशोधन बिल (उम्मीद) के पास होने के ऐतिहासिक फैसले पर वरिष्ठ समाजसेवियों राजेश खुराना ने मोदी सरकार को बधाई दी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार व्यक्त किया।

इस ऐतिहासिक अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवियों राजेश खुराना ने कहा, ₹आज एक ऐतिहासिक पल है, जब वक्फ बोर्ड के नाम पर माफियाओं द्वारा कब्जाई गई ज़मीन से देश को मुक्ति मिली है। आज इस मौके को हम सभी सनातनी लोग उत्सव के रूप में मना रहे हैं, और अपने देश के गौरवशाली प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कोटि-कोटि धन्यवाद करते हैं।"

उन्होंने इस बिल को "आधुनिक, पारदर्शी और समावेशी₹ बताते हुए कहा कि यह न केवल कानूनी सुधार है, बल्कि दशकों से चली आ रही अतिक्रमण और अनियंत्रित शक्तियों की व्यवस्था का अंत है। इससे न केवल वक्फ बोर्ड की अनियंत्रित शक्तियों पर लगाम लगेगी, बल्कि समाज के सभी वर्गों को न्याय मिलने की संभावना भी बढ़ेगी। ₹यह बिल न केवल वक्फ बोर्ड के दुरुपयोग को रोकेगा, बल्कि देश में समरसता और पारदर्शिता की नई शुरुआत करेगा। इस बिल को मोदी सरकार की तरफ से एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में देखा जा रहा है, जो वक्फ संपत्तियों और उनके दुरुपयोग को नियंत्रित करने की दिशा में एक ठोस कदम है। आज का दिन न केवल वक्फ बोर्ड के सुधार का, बल्कि भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों और हमारे संबिधान की जीत का प्रतीक है।

उन्होंने आगे कहा, "यह कानून उन लोगों के लिए भी एक चेतावनी है, जो वक्फ संपत्तियों और गरीबों के लिए दिए गए दान के पैसे का दुरुपयोग कर रहे थे। यह बिल वक्फ बोर्ड के कार्यों में जवाबदेही और पारदर्शिता सुनिश्चित करेगा, जिससे दान के पैसे का सही और उचित उपयोग हो सकेगा।"

श्री खुराना ने जोर देते हुए कहा कि ₹वक्फ बोर्ड के नाम पर वर्षों से भू-माफिया हिंदुस्तान की पवित्र ज़मीन पर कब्जा किए बैठे थे और गरीबों के भले के लिए दिए गए दान (जकात) के पैसों और संपत्ति को अपना बना लिया था। आज, मोदी जी के नेतृत्व में इन माफियाओं से भारत की ज़मीन को असहाय, जरुरतमंद, यतिम, वैवा, महिलाओं और गरीबों का भला करने का सुनहरा अवसर मिला है। इसलिए वक्फ संपत्तियों और दान के पैसों का सही उपयोग असहाय गरीबों की भलाई के लिए किया जाना चाहिए। गरीबों के लिए दान दी गई संपत्तियों पर चैरिटेबल अस्पताल, स्कूल-कॉलेज, स्टेडियम और आश्रय स्थल बनने चाहिए, ताकि असहाय और पिछड़े समाज को शिक्षा, स्वास्थ्य और खेलों में समान अवसर मिल सके।₹ उनका मानना था कि इस कदम से गरीब और पिछड़े समाज को आत्मनिर्भर बनने में मदद मिलेगी।

वरिष्ठ समाजसेवी ने 1947 के भारत विभाजन का हवाला देते हुए कहा, ₹ सब को मालूम हैं कि गरीबों के दान का पैसा खाने वालों कि सभी समुदायों की जमीन पर नजर गड़ाए हैं। देश 1947 में ही धर्म के आधार पर विभाजन झेल चुका है और अब जमीन के नाम पर एक और विभाजन नहीं चाहिए। जो ₹देश विरोधी संविधान की प्रति हाथ में लेकर घूमते हैं, लेकिन उनकी नियत और नीतियां हमेशा संविधान और सनातन समाज के खिलाफ ही जाती हैं। डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर का सपना एक मजबूत संविधान का था, लेकिन देश के टुकड़े-टुकड़े करने वाले देश विरोधी तत्वों ने दो निशान बनाए। अब यह तय करना होगा कि हम संविधान के साथ रहेंगे या फिर उन लोगों के साथ जो गरीबों के दान का पैसा और संपत्ति खा रहे हैं।₹उन्होंने जोर देकर कहा, ₹यह विधेयक किसी धर्म के खिलाफ नहीं है, बल्कि यह दान की चोरी, भ्रष्टाचार, धोखे और धार्मिक सामंतवाद के खिलाफ है। जब तक बाबा साहेब का संविधान है, तब तक दान की चोरी, भ्रष्टाचार, घोटाले, धोखे और तुष्टिकरण की राजनीति नहीं चलेगी।"

साथ ही, उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि गरीब लोग इस कानून के समर्थन में हैं, जबकि इसका विरोध वे लोग कर रहे हैं, जिन्होंने अवैध रूप से वक्फ संपत्तियों और गरीबों के लिए दिये गए दान पर कब्जा कर रखा है। उन्होंने कहा, ₹यह कानून बहुत पहले आ जाना चाहिए था, लेकिन वोट की राजनीति करने वालों ने इसे कभी लागू नहीं किया। सरकार अब गरीबों के ठोस विकास के लिए प्रतिबद्ध है और यह उम्मीद (कानून) उसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।"

उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि गरीब विरोधी हमेशा असहाय गरीबों के विकास में रुकावट डालते रहे हैं। ₹वे कभी नहीं चाहते कि गरीब समाज मुख्यधारा में जुड़कर तरक्की करे। लेकिन यह संशोधन वक्फ संपत्तियों को संगठित और नियमित करेगा, जिससे उनका सही उपयोग सुनिश्चित किया जा सकेगा। उन्होंने यह भी बताया कि वक्फ अमेंडमेंट एक्ट से वक्फ बोर्ड की ऑडिटिंग और दस्तावेजीकरण किया जाएगा, जिससे अवैध कब्जे हटाए जा सकेंगे। इसके अलावा, वक्फ बोर्ड में महिलाओं और ग़रीब कमजोर वर्ग की भागीदारी बढ़ाई जाएगी, जिससे असहायों को मजबूती मिलेगी।

उन्होंने यह भी कहा, ₹इस अवसर पर विपक्ष में बैठे लोग, जो कभी गरीबों के दान के पैसों को खाने वालों के पक्षधर रहे हैं, चुप हैं। वे मोदी जी के गरीबों के भले के लिए किए गए फैसले का विरोध कर रहे हैं। वहीं, जिन लोगों ने कभी असहाय गरीबों पर किए गए अत्याचारों पर मौन साध रखा था, वही लोग आज हिंदुस्तान के हित में वक्फ बोर्ड के पास होने में रोडा अटका रहे थे। लेकिन आज उनकी एक नहीं चली और वक्फ बोर्ड बिल गरीबों के हक में पास हो गया है।यह निर्णय देश के गरीबों के लिए एक बड़ी जीत साबित हुआ है, और वो इसे ऐतिहासिक कदम के उम्मीद के रूप में देखा रहे है।"

अंत में वरिष्ठ समाजसेवियों राजेश खुराना ने सभी से इस बिल का समर्थन करने की अपील की, कि अब भ्रम और देश विरोधी राजनीति छोड़कर असहाय गरीबों के वास्तविक विकास पर ध्यान दें और वे तुष्टिकरण की राजनीति को नकारते हुए, वक्फ संपत्तियों के सही और पारदर्शी इस्तेमाल में सहयोग करें,और इस ऐतिहासिक बदलाव को सकारात्मक रूप से स्वीकार करें जिससे वक्फ संपत्तियों की सुरक्षा और उनके सही प्रबंधन के लिए उठाए गए इस उम्मीद के कदम में सरकार को पूरा सहयोग मिल सके ताकि गरीबों की भलाई हो सके और संविधान की मर्यादा बनी रहे।

उन्होंने आग्रह करते हुए कहा, ₹सरकार को ऐसे और भी बड़े कदम उठाने चाहिए, जिससे समाज के हर गरीब वर्ग को न्याय मिले और देश में समरसता बनी रहे।"

जापानी मनोचिकित्सक डॉ हिदेकी वादा ने मार्च 2022 में "80 वर्षीय दीवार" "80-Year-Old-Wall" नामक पुस्तक प्रकाशित की

परिवहन विशेष न्यूज

जैसे ही यह पुस्तक जारी हुई, इसकी बिक्री 500,000 प्रतियों से अधिक हो गई और यह उस समय की सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तक बन गई। यदि यह गति जारी रही, तो इसकी बिक्री 10 लाख प्रतियों को पार कर जाएगी, जिससे यह जापान में सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तकों में से एक बन जाएगी।

डॉ. वादा, अभी 64 वर्ष के हैं और बुजुर्गों में मानसिक रोगों के विशेषज्ञ हैं। ये अभी तक 500 से अधिक पुस्तकें लिख चुके हैं।

उन्होंने 80 वर्षीय लोगों के ₹सौभाग्यशाली व्यक्ति₹ बनने के रहस्यों को *₹44 वाक्यों₹* में संकलित किया, जो इस प्रकार हैं:

1. चलते रहें
2. जब चिड़चिड़ाहट महसूस हो, गहरी सांस लें
3. शरीर को अकड़न महसूस न हो, इतनी मात्रा में व्यायाम करें
4. गर्मियों में एयर कंडीशनर का उपयोग करते समय अधिक पानी पिएं
5. ₹डायपर₹ चलने-फिरने की क्षमता बढ़ाने में बहुत सहायक होते हैं
6. जितना अधिक चबाएंगे, उतना ही शरीर और मस्तिष्क ऊर्जावान रहेगा
7. याददाश्त की कमी उम्र बढ़ने के कारण नहीं, बल्कि मस्तिष्क के लंबे समय तक उपयोग न करने के कारण होती है
8. बहुत अधिक दवाएं लेने की कोई आवश्यकता नहीं
9. रक्तचाप और रक्त शर्करा के स्तर को जानबूझकर कम करने की जरूरत नहीं
10. अकेले रहना अकेलापन नहीं है, बल्कि आरामदायक समय का आनंद लेना है
11. आलसी होना कोई शर्म की बात नहीं
12. ड्राइविंग लाइसेंस के लिए भुगतान करने की कोई आवश्यकता नहीं (क्योंकि बुजुर्गों के लिए मोटर वाहन चलाना अधिक खतरनाक हो सकता है, जापान ने बुजुर्गों से लाइसेंस शुल्क लेने के लिए एक आंदोलन चुपचाप शुरू कर दिया है)
13. केवल वही करें जो आपको पसंद हो, जो नापसंद हो उसे न करें
14. वृद्धावस्था में भी सभी प्राकृतिक इच्छाएं बनी रहती हैं
15. चाहे जो हो, हमेशा घर में न रहें
16. जो मन करे वही खाएं, हल्का मोटापा बिल्कुल ठीक है
17. हर काम सावधानी से करें
18. जिन लोगों को आप नापसंद करते हैं, उनसे संबंध न रखें
19. हर समय टीवी न देखें
20. बीमारी से अंत तक लड़ने के बजाय, उसके साथ सह-अस्तित्व में रहना बेहतर है
21. *₹जब गाड़ी पहाड़ पर पहुंचेगी, तब रास्ता मिल ही जाएगा₹* – यह जादुई मंत्र बुजुर्गों को खुश रखता है
22. ताजे फल और सलाद खाएं
23. नहाने का समय 10 मिनट तक सीमित रखें
24. यदि नींद नहीं आ रही हो, तो खुद पर ज़ोर न डालें
25. खुश रहने वाले काम करना मस्तिष्क की सक्रियता बढ़ाने के लिए सबसे अधिक लाभदायक है
26. जो कहना है, खुलकर कहें, ज्यादा चिंता न करें
27. जितनी जल्दी हो सके, एक *₹पारिवारिक डॉक्टर₹* ढूंढ लें
28. ज्यादा सहनशील न बनें और खुद पर ज़बरदस्ती न करें, *₹बुरे बूढ़े आदमी₹* बनने में कुछ भी गलत नहीं है
29. कभी-कभी अपने शब्द बदल लेना भी ठीक है
30. जीवन के अंतिम चरण में डिमेंशिया ईश्वर का एक उपहार है
31. सीखना बंद कर देंगे तो आप जल्दी बूढ़े हो जाएंगे
32. शोहरत की लालसा न करें, जो कुछ भी आपके पास है, वही पर्याप्त है
33. मासूमियत बुजुर्गों का विशेषाधिकार है
34. जो चीजें ज्यादा झंझट वाली लगती हैं, वे उतनी ही दिलचस्प होती हैं
35. धूप सेंकना लोगों को खुश करता है
36. दूसरों के लिए अच्छा करने वाले कार्य करें
37. आज को आरामदायक तरीके से जिएं
38. इच्छाएं ही लंबी उम्र का स्रोत हैं
39. हमेशा आशावादी रहें
40. सहजता से सांस लें
41. जीवन के नियम आपके अपने हाथों में हैं
42. हर चीज़ को शांत मन से स्वीकार करें
43. हंसमुख स्वभाव वाले लोग बहुत लोकप्रिय होते हैं
44. एक मुस्कान सौभाग्य लेकर आती है

*सभी बुजुर्गों के साथ साझा करें

लक्ष्मण कुमार

आईपीएल का अंधेरा पहलू: खिलाड़ी नहीं, जुआरी गढ़ रहे हैं हम
क्रिकेट के बहाने जुआ: गाँव-गाँव में बर्बादी का स्कोरबोर्ड

हर गांव की गलियों में कभी एक जीवंत संगीत गूंजता था—गेंद की ठप्प, बल्ले की सधी हुई खनक, और बच्चों की उन्मुक्त चीखें—"छक्का"। सपना था साफ और दिलकश- मैदान की धूल से उठकर देश का नाम रोशन करना। फिर आया आईपीएल—एक ऐसा मंच, जिसने हर गाँव से २-३ सितारे चमकाने का वादा किया। मगर अब उन गलियों की कहानी बदल चुकी है। सपनों की वो गर्माहट स्क्रीन की ठंडी चमक में खो गई। हर कोने से सैकड़ों जुआरी उभर आए—न मैदान पर जीत की गूंज, न तालियों की गड़गड़ाहट; बस फैंटेसी ऐप्स की आभासी दुनिया में हार की राख में सुलगते चेहरे। क्रिकेट, जो कभी दिलों का जुनून था, अब जुए की चालों का आडंबर बनकर रह गया है।

आईपीएल का आगाज़ २००८ में हुआ—एक ऐसा मंच जो क्रिकेट को नई उड़ान देना चाहता था, गाँवों और छोटे शहरों की मिट्टी से अनगढ़ हीरे तराशना चाहता था। सचिन, धोनी, कोहली जैसे सितारों ने दिखाया कि ये सपना हकीकत में ढल सकता है। मगर इस चमचमाती राह पर कुछ ऐसा उभरा, जिसका अंदाज़ा किसी को नहीं था—फैंटेसी गेमिंग। Dream11, My11Circle जैसे नाम पहले खेल के दीवानों के लिए रोमांच लेकर आए। "अपनी टीम चुनो, लाखों जीतो" का नारा ऐसा गूंजा कि ये क्रिकेट का हिस्सा-सा लगने लगा। लेकिन वक्त के साथ ये हिस्सा नहीं, एक कड़वी सच्चाई बन गया—एक ऐसी लहर, जो अब गाँव-गाँव में जंगल की आग-सी फैल रही है।

कभी गलियों में गेंद के पीछे बच्चों की भागमभाग गूंजती थी। आज वही बच्चे मोबाइल की स्क्रीन पर उंगलियाँ घिस रहे हैं। मैदान सूने पड़े हैं, बल्ले की जगह फोन ने हथिया ली है, और हर रात एक नया "मैच" शुरू होता है—जो असल ज़िंदगी में सिर्फ खालीपन और हताशा की सौगात लाता है। ये फैंटेसी लीग अब खेल नहीं, एक खतरनाक लत है—एक ऐसा नशा जो नौजवानों को अपनी गिरफ्त में जकड़ रहा है। स्कूल का मासूम बच्चा हो, कॉलेज का जोशीला छात्र, या बेरोज़गार युवा—सबको लगता है कि क्रिकेट की मामूली समझ और जेब में थोड़ा-सा पैसा उन्हें रातोंरात मालामाल कर देगा। मगर हकीकत में ये "खेल" लालच और किस्मत का एक अंधा जुआ है—जिसमें जीत का झूठा सपना चमकता है, और हार का स्याह साया गहरा होता जाता है।

आंकड़े चीख-चीखकर एक डरावनी सच्चाई बयां करते हैं। एक

रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में फैंटेसी गेमिंग का बाजार २०२५ तक ३ बिलियन डॉलर की ऊँचाइयों को छू सकता है। मगर इस चकाचौंध के पीछे का सच कालिख-सा काला है। हर साल लाखों युवा कर्ज के दलदल में डूबते जा रहे हैं। कुछ अपनी किताबें छोड़ चुके हैं, कुछ घर की चहारदीवारी से चोरी की राह पर चल पड़े हैं, तो कुछ अपनी जिंदगी तक को दांव पर लगाने से नहीं हिचक रहे—सिर्फ इसलिए कि "अगली बार जीत" का भूत उनके दिलो-दिमाग पर हावी है। गाँवों में कभी माँ-बाप अपने बच्चों को मैदान पर गेंद थामे देख सीना चौड़ा करते थे; आज वही माँ-बाप रातों की नींद हराम कर आँसुओं में डूबे हैं—उनका लाड़ला अब फोन की स्क्रीन का गुलाम बन चुका है।

ये फैंटेसी लीग का जाल इतना घना और खतरनाक है कि ये न सिर्फ अनपढ़ या तंगहाल को जकड़ रहा है, बल्कि पढ़े-लिखे, सपनों से भरे नौजवानों को भी लील रहा है। विज्ञापनों में चमकते सितारे—कोहली, धवन, रैना, गांगुली—फोन थामे जोश भरे नारे लगाते हैं, "खेलो और जीतो!" मगर वो ये नहीं बताते कि एक चमकीली जीत के पीछे हज़ारों हार का सन्नाटा दफन है। एक स्टडी चुपके से खुलासा करती है कि इन ऐप्स पर 90% से ज़्यादा लोग लंबे वक्त में अपनी जेबें खाली कर बैठते हैं। फिर भी ये लालच का मायावी तिलिस्म टूटने का नाम नहीं लेता—क्योंकि हर हार के बाद "अगली बार" का सपना आँखों में चमक बनकर टिमटिमाता रहता है।

क्रिकेट कभी हमारी एकता का प्रतीक था। 1983 का विश्व कप हो या २011 की वो ऐतिहासिक जीत—हर गली-नुक्कड़ पर तालियों की गड़गड़ाहट और खुशी की लहर दौड़ पड़ती थी। मगर आज वही क्रिकेट डिजिटल जुए का धारदार हथियार बन चुका है। जो खेल कभी बच्चों को अनुशासन की राह दिखाता था, मेहनत का मोल सिखाता था, और टीमवर्क की ताकत से जोड़ता था, वही अब उन्हें लालच की भट्ठी में झोंक रहा है, हताशा के कुएँ में धकेल रहा है, और अकेलेपन की ठंडी बाहों में सौंप रहा है। गाँव, जो कभी सचिन और कोहली जैसे चमकते सितारों की पौधशाला हुआ करते थे, अब जुआरियों की काली करखाने में तब्दील हो रहे हैं।

इसका इलाज महज़ कानून की सख्ती से नहीं होगा। बेशक, सरकार को अपनी कमर कसनी चाहिए—इन ऐप्स की बेलगाम दौड़ पर नकेल डालनी चाहिए, उनके चमकदार झूठे वादों और भ्रामक विज्ञापनों पर ताला लगाना चाहिए। मगर असली क्रांति समाज की गहराइयों से जन्म लेगी। हमें अपने बच्चों के हाथों में फिर से बल्ला और गेंद थमानी होगी, खेल को उसकी खोई हुई मासूमियत और शुद्धता लौटानी होगी। स्कूलों की कक्षाओं में फैंटेसी गेमिंग के छिपे खतरों की किताब खोलनी होगी, डिजिटल दुनिया की समझ और वित्तीय साक्षरता का सबक पढ़ाना होगा। हर माँ-बाप को अपने जिगर के टुकड़े से दिल खोलकर बात करनी होगी—उन्हें आँखें खोलकर दिखाना होगा कि हर चमकती स्क्रीन के पीछे एक गहरा धोखा लुका हो सकता है, जो सपनों को नहीं, जिंदगियों को तबाह करता है।

आईपीएल ने हमें नायाब रत्न सौंपे—रांची से धोनी, दिल्ली से कोहली, गलियों से गावस्कर। मगर अगर हम खामोश रहे, तो ये लीग सितारों की चमक नहीं, सिर्फ बिखरे सपनों की राख हमारे हाथों में थमाएगी। एक पूरी पीढ़ी, जो मैदान पर अमर कहानियाँ रच सकती थी, स्क्रीन की चकाचौंध में गुमनाम हार का शिकार बनकर रह जाएगी। क्रिकेट को फिर से उसका असली रूप लौटाना होगा—सपनों का सुनहरा रास्ता, न कि सट्टे की अंधेरी गली।

अब वक्त है नींद से जागने का। उस मासूम बच्चे के हाथ में फिर से बल्ला पकड़ाने का, जो गली के कोने पर खड़ा बड़े-बड़े सपने संजो रहा है। उसे फैंटेसी की भटकती भूलभुलैया में धकेलने के बजाय, असली मैदान पर कदम रखने की हिम्मत देनी होगी। ताकि अगली बार जब गेंद हवा में तैरती हुई उड़े, तो स्क्रीन की बेजान चमक में नहीं, बल्कि स्टेडियम की गूंजती दीवारों के बीच "छक्का" का नाद गूंजे। क्रिकेट को जिंदा रखना है, तो जुए की जहरीली जड़ों को काटना होगा—वरना हमारा खेल, हमारी नई पीढ़ी, और हमारा गर्व, सब कुछ इस लालच के दांव में जलकर खाक हो जाएगा।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

6 वाँ बिम्सटेक शिखर सम्मेलन थाईलैंड 2025 में भारत का आगाज़

दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) की निष्क्रियता, अमेरिका चीन में मची खींचतान, बांग्लादेश चीन संबंधों के बीच भारत के लिए बिम्सटेक अति महत्वपूर्ण– **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर दुनियाँ में मची गुटबाजी, वैश्विक मंचों पर अपना दबदबा दिखाने की होड़ व अभी 4 अप्रैल सेअमेरिका द्वारा जारी टैरिफ बम जिसमें कनाडा और मेक्सिको को छोड़ दिया गया है, के बीच यह ज़रूरी हो गया है कि,अब क्षेत्रीय देशों को अपने संबंधों व व्यापार में रणनीति साझेदारी बढ़ाने पर जोर देना चाहिए। इसी कड़ी में भारत का छठवें बिम्सटेक शिखर सम्मेलन में थाईलैंड का दो दिवसीय दौरा काफी महत्वपूर्ण हो जाता है,जहां 6 प्रमुख क्षेत्र में रणनीतिक सहयोग साझेदारी पर हस्ताक्षर हुए, जो रेखांकित करने वाली बात है।चूँकि दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) की निष्क्रियता,अमेरिकी चीन में मची खींचतान, बांग्लादेश -चीन संबंधों के बीच भारत के लिए बिम्सटेक अति महत्वपूर्ण है,इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे,6 वें बिम्सटेक शिखर सम्मेलन थाईलैंड 2025 में भारत का आगाज़।

साथियों बात अगर कर हम बिम्सटेक भारत के लिए अति महत्वपूर्ण होने की करें,अमेरिका -चीन के बीच मची खींचतान के कारण एशिया में अस्थिरता बढ़ रही है। चीन अपनी समुद्री और नौसैनिक क्षमताओं का विस्तार कर रहा है। इससे बंगाल की खाड़ी एक बार फिर विवादित क्षेत्र बन रही है। इससे हिंद महासागर क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला करने में बिमस्टेस भारत के लिए महत्वपूर्ण हो गया है। इस क्षेत्र के देशों को मिलाकर बनाया गया दूसरा संगठन दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संघ (सार्क) पाकिस्तान की हरकतों के कारण निष्क्रिय पड़ा हुआ है। वहीं, चीनी कर्ज के तले दबा श्रीलंका खुद को बीजिंग से दूर कर रहा है। जबकि, बांग्लादेश की अंतरिम सरकार चीन के इशारों पर नाच रही है। ऐसे हालात में बिम्सटेक शिखर सम्मेलन को अहम माना जा रहा है। (1)चीन के बढ़ते प्रभाव को रोकने की रणनीति-चीन लगातार अपनी नौसैनिक शक्ति और समुद्री गतिविधियों को बढ़ा रहा है, जिससे बंगाल की खाड़ी रणनीतिक रूप से और भी महत्वपूर्ण हो गई है।बिम्सटेक के जरिए भारत हिंद महासागर क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने की कोशिश कर रहा है (2) सार्क की निष्क्रियता का विकल्प दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत करने के लिए (सार्क) संगठन बनाया गया था, लेकिन पाकिस्तान की नीतियों और आतंकवाद को समर्थन देने की वजह से यह संगठन लगभग निष्क्रिय हो चुका है,ऐसे में बिम्सटेक भारत के लिए एक बेहतर और मजबूत विकल्प बनकर उभर रहा है।(3)श्रीलंका और बांग्लादेश के साथ समीकरण -श्रीलंका, जो चीन के कर्ज के बोझ तले दबा था, अब धीरे-धीरे भारत की ओर झुकाव दिखा रहा है। दूसरी ओर, बांग्लादेश में राजनीतिक अस्थिरता के बीच चीन का प्रभाव बढ़ता जा रहा है. ऐसे में बिम्सटेक भारत को अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंध मजबूत करने का बेहतरीन मंच देता है (4) व्यापार और निवेश के लिए अहम मंच-भारत बिम्सटेक को व्यापार, तकनीकी सहयोग और कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण संगठन मानता है। इसमें सदस्य देशों के साथ सीमा पार व्यापार, ऊर्जा सहयोग और बुनियादी ढांचे के विकास को प्राथमिकता दी जा रही है।बिम्सटेक संगठन भारत के लिए रणनीतिक,आर्थिक और कूटनीतिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण है।जहां एक ओर यह भारत को चीन के बढ़ते दबदबे का मुकाबला करने का अवसर देता है, वहीं दूसरी ओर यह दक्षिण एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच व्यापार और सहयोग को भी बढ़ावा देता है।पीएम और विदेश मंत्री की इस बैठक में भागीदारी यह दर्शाती है कि भारत बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में अपने प्रभाव को और मजबूत करना चाहता है। आने वाले वर्षों में यह संगठन भारत की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन सकता है।

साथियों बात अगर हम थाईलैंड के साथ भारत के रणनीतिक साझेदारी की करें तो,पीएम ने कहा,हमने नवीकरणीय ऊर्जा, डिजिटल टेक्नोलॉजी, ई- व्हीकल, रोबोटिक्स, अंतरिक्ष, जैव-प्रौद्योगिकी और स्टार्ट-अप में सहयोग को मजबूत करने का निर्णय लिया। भौतिक संपर्क बढ़ाने के अलावा, दोनों देश फिनटेक संपर्क को बढ़ावा देने के लिए भी काम करेंगे।पीएमने कहा कि वार्ता में भारत-थाईलैंड रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने के तरीकों पर चर्चा हुई जिसमें रक्षा, सुरक्षा, समुद्री सुरक्षा और जल विज्ञान जैसे रणनीतिक क्षेत्र शामिल हैं। पीएमने कहा, हमने आतंकवाद, मनी लॉन्ड्रिंग और अन्य चुनौतियों से निपटने के लिए मिलकर काम करने की अपनी प्रतिबद्धता भी दोहराई।अपने संबोधन में पीएम ने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारत की एक्ट ईस्ट नीति और थाईलैंड की एक्ट वेस्ट नीति एक -दूसरे की पूरक हैं और कई क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग के अवसर खोलती हैं। पीएम ने थाई पीएम के साथ संयुक्त प्रेस वक्तव्य में कहा, हमने थाईलैंड और भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के बीच पर्यटन, संस्कृति, शिक्षा के क्षेत्र मेंसहयोग पर जोर दिया। हमने बढ़ते आपसी व्यापार, निवेश और व्यापारिक आदान-प्रदान पर चर्चा की। एमएसएमई, हथकरघा और हस्तशिल्प के क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देने के लिए भी समझौते किए गए।भारत और थाईलैंड ने गुरुवार को दोनों देशों के समकक्ष बीच व्यापक चर्चा के दौरान द्विपक्षीय संबंधों को रणनीतिक साझेदारी तक बढ़ाने पर सहमति जताई। दोनों नेताओं ने द्विपक्षीय सहयोग के विभिन्न क्षेत्रों पर चर्चा की। बाद में कई महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए। भारत- थाईलैंड सामरिक साझेदारी की स्थापना पर संयुक्त घोषणा के अलावा, डिजिटल टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में सहयोग पर एक समझौता हुआ। इस संबंध में थाईलैंड के डिजिटल अर्थव्यवस्था और समाज मंत्रालय तथा भारत के इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए।भारत के बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्रालय के सागरमाला डिविजन तथा थाईलैंड के ललित कला विभाग, संस्कृति मंत्रालय के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। यह समझौता गुजरात के लोथल में राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर (एनएमएचसी) के विकास को लेकर है।

साथियों बात अगर हम थाईलैंड मैं आयोजित 6 वें बिम्सटेक शिखर सम्मेलन में भारत के आगाज की करें तो माननीय पीएम ने कहा भारत की एक्ट ईस्ट नीति में थाईलैंड का विशेष महत्व है।हम विस्तारवाद में नहीं, बल्कि विकासवाद में विश्वास करते हैं।पीएम ने बैंकॉक में अपने थाई समकक्ष के साथ प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता की और दोनों नेताओं ने भारत- थाईलैंड संबंधों को रणनीतिक साझेदारी के स्तर तक बढ़ाने का निर्णय लिया और विनाशकारी भूकंप के दौरान हुई जनहानि पर संवेदना भी व्यक्त की। बिम्सटेक ने पिछले एक दशक में बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में क्षेत्रीय विकास, संपर्क और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के रणनीतिक महत्व पर भी जोर दिया। पीएम ने कहा,आज हमने अपने संबंधों को रणनीतिक स्तर की साझेदारी तक बढ़ाने का फैसला किया है। हम अपनी सुरक्षा एजेंसियों के बीच रणनीतिक संवाद स्थापित करने पर भी सहमत हुए हैं। पीएम ने दोनों देशों के बीच सदियों पुराने सांस्कृतिक संबंधों पर भी प्रकाश डाला और 18वीं सदी के रामायण भित्ति चित्रों पर आधारित एक विशेष डाक टिकट जारी करने के लिए थाई प्रधानमंत्री पैतोंगटार्न शिनावात्रा का आभार व्यक्त किया। सहयोग और मजबूत करने के लिए चर्चाओं में शामिल होने के लिए उत्सुकउन्होंने कहा,मैं बिम्सटेक देशों के नेताओं से मिलने और हमारे लोगों के हितों को सबसे आगे रखते हुए हमारे सहयोग को और मजबूत करने के लिए सार्थक चर्चाओं में शामिल होने के लिए उत्सुक हूं।पीएम के स्वागत के लिए थाईलैंड के पीएम ने रॉयल हाउस का दरवाजा खोला। इस मौके पर पीएम को थाई पीएम की ओर से द वर्ल्ड टिपिटका: सज्जया ध्वन्यात्मक संस्करण भेंट किया गया।

साथियों बात अगर हम बिम्सटेक को अतीत के झरोखे से देखें तो,बिम्सटेक का पूरा नाम बंगाल की खाड़ी बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग पहल (बिमस्टेक) है। यह एक क्षेत्रीय संगठन है जिसमें बंगाल की खाड़ी के आसपास स्थित सात सदस्य देश शामिल हैं। इस उप-क्षेत्रीय संगठन की स्थापना 6 जून 1997 को बैंकॉक घोषणा के माध्यम से की गई थी। सात सदस्य देशों में दक्षिण एशिया के पांच देश- बांग्लादेश, भूटान, भारत, नेपाल और श्रीलंका- और दक्षिण-पूर्व एशिया के दो देश- म्यांमार और थाईलैंड शामिल हैं। मूल रूप से, इस ब्लॉक की शुरुआत चार सदस्य देशों के साथ हुई थी, जिसका नाम बिमस्टेक (बांग्लादेश, भारत, श्रीलंका और थाईलैंड आर्थिक सहयोग) था।22 दिसंबर 1997 को, म्यांमार बैंकॉक में एक विशेष मंत्रिस्तरीय बैठक के दौरान शामिल हुआ, जिसके परिणामस्वरूप समूह का नाम बदलकर 'बिमस्टेक (बांग्लादेश, भारत, म्यांमार, श्रीलंका और थाईलैंड आर्थिक सहयोग) कर दिया गया। छठी मंत्रिस्तरीय बैठक (फरवरी 2004, थाईलैंड) में नेपाल और भूटान को शामिल करने के परिणामस्वरूप संगठन का वर्तमान नाम 'बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल' (बिमस्टेक) रखा गया। बिम्सटेक के सदस्य देश व्यापार, निवेश और विकास; कृषि, मत्स्य पालन और पशुधन; पर्यटन; सुरक्षा; पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन; और विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार सहित विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग करते हैं। थाईलैंड 2022 से अध्यक्ष है और बांग्लादेश अगले स्थान पर है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि 6 वाँ बिम्सटेक शिखर सम्मेलन थाईलैंड 2025 में भारत का आगाज़ भारत व थाईलैंड संबंधों को रणनीतिक साझेदारी तक बढ़ाने पर सहमत- प्रमुख क्षेत्रों में समझौतों पर हस्ताक्षर

दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) की निष्क्रियता, अमेरिका चीन में मची खींचतान, बांग्लादेश चीन संबंधों के बीच भारत के लिए बिम्सटेक अति महत्वपूर्ण हैं।

हुंडई कार पर बंपर डिस्काउंट, वेन्यू पर मिली रही 70,000 तक की छूट

हुंडई ने अप्रैल 2025 के लिए अपनी गाड़ियों के लिए डिस्काउंट ऑफर की घोषणा कर दी है। अप्रैल में कंपनी अपनी Grand i10 Nios i20 Venue Exter Verna और Tucson पर जबदस्त डिस्काउंट दे रही है। इस ऑफर में नकद छूट एक्सचेंज/स्क्रैपेज बोनस और कॉर्पोरेट ऑफर शामिल है। आइए हुंडई गाड़ियों पर मिलने वाले छूट के बारे में जानते हैं।

नई दिल्ली। Hyundai मोटर इंडिया ने भारतीय बाजार में फिर से अपनी दूसरे स्थान पर पहुंच गई है। वहीं, कंपनी की Hyundai Creta SUV सेगमेंट में सबसे ज्यादा बिकने वाली गाड़ी भी बन गई है। हुंडई ने अपनी स्थिति को बरकरार रखने के लिए अप्रैल 2025 के लिए डिस्काउंट ऑफर लेकर आई है। इस डिस्काउंट ऑफर के तहत Grand i10 Nios, i20, Venue, Exter, Verna और Tucson पर छूट दी जा रही है। इन मॉडलों पर 70,000 रुपये तक की छूट मिल रही है, जिसमें नकद छूट, एक्सचेंज/स्क्रैपेज बोनस और कॉर्पोरेट ऑफर तक शामिल है। आइए जानते हैं कि Hyundai कारों पर अप्रैल 2025 में कितना डिस्काउंट मिल रहा है।

Hyundai Venue

हुंडई की इस कॉम्पैक्ट एसयूवी पर अप्रैल 2025 में 70,000 रुपये तक का डिस्काउंट दिया जा रहा है। इसके N लाइन वेरिएंट्स पर 35,000 रुपये तक का डिस्काउंट दिया जा रहा है। इसे 1.5-लीटर डीजल इंजन, 1.2-लीटर पेट्रोल इंजन और 1.0-लीटर टर्बोचार्ज्ड इंजन ऑप्शन के साथ पेश किया जाता है।

Hyundai Grand i10 Nios

हुंडई कई यह एंट्री-लेवल हैचबैक है। इसपर अप्रैल 2025 में 68,000 रुपये तक की छूट दी जा रही है। इसे 1.2-लीटर पेट्रोल इंजन और फैक्ट्री-फिटेड CNG किट के साथ ऑफर किया जाता है। इसे बेहतर फ्यूल एफिशिएंसी के लिए जाना जाता है।

Hyundai i20

अप्रैल 2025 में Hyundai i20 पर 65,000 रुपये तक की छूट मिल रही है। इसके i20 N लाइन ट्रिम्स पर 45,000 रुपये तक का डिस्काउंट दिया जा रहा है। इसे 1.2-लीटर पेट्रोल इंजन के साथ ऑफर किया जाता है, जबकि i20 के N लाइन वेरिएंट्स में 1.0-लीटर थ्री-सिलेंडर टर्बो-पेट्रोल इंजन दिया जाता है।

Hyundai Tucson

यह हुंडई की फ्लैगशिप एसयूवी है। अप्रैल 2025 में Tucson पर 50,000 रुपये तक का डिस्काउंट मिल रहा है। इसे दो इंजन ऑप्शन के साथ पेश किया जाता है, जो 2.0-लीटर डीजल इंजन और 2.0-लीटर नैचुरली एस्पिरेटेड पेट्रोल इंजन है।

Hyundai Verna

अप्रैल 2025 में Verna पर 50,000 रुपये तक का डिस्काउंट दिया जा रहा है। कंपनी अपनी इस सेडान को दो पेट्रोल इंजन के साथ ऑफर करती है, जो 1.5-लीटर नैचुरली एस्पिरेटेड पेट्रोल इंजन और 1.5-लीटर टर्बो-पेट्रोल इंजन है।

Hyundai Exter

Verna की तरह ही Hyundai Exter पर भी 50,000 रुपये तक की छूट दी जा रही है। इसमें भी Grand i10 Nios की तरह ही 1.2-लीटर पेट्रोल इंजन के साथ ऑफर किया जाता है। आप इसे एंट्री-लेवल एसयूवी के लिए डुअल-सिलेंडर CNG किट को खरीद सकते हैं।

Hyundai Aura

हुंडई की Aura पर 48,000 रुपये तक डिस्काउंट दिया जा रहा है। इसमें भी Exter और Grand i10 Nios की तरह ही 1.2-लीटर पेट्रोल इंजन दिया जाता है। इसे CNG किट के साथ भी ऑफर किया जाता है।

हुंडई क्रेटा ने छोड़ा सभी सस्ती गाड़ियों को पीछे, बनी भारत की सबसे ज्यादा बिकने वाली कार

हुंडई इंडिया के लिए वित्तीय वर्ष 2024-25 काफी बेहतर रहा। इसके साथ ही कंपनी के लिए मार्च 2025 काफी शानदार रहा जिसकी वजह से हुंडई ने Mahindra को पीछे छोड़कर देश की दूसरी सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी बन गई है। इतना ही नहीं कंपनी की Hyundai Creta भारत की सबसे ज्यादा बिकने वाली कार भी बन गई।

नई दिल्ली। हुंडई मोटर इंडिया लिमिटेड (HMIL) एक बार फिर से गाड़ियों की बिक्री में दूसरे स्थान पर पहुंच गई है। इसे फिर से दूसरे नंबर पर पहुंचाने का काम कंपनी की पॉपुलर SUV, Hyundai Creta ने किया है। इतना ही नहीं, यह भारतीय ऑटोमोबाइल उद्योग में सबसे ज्यादा बिकने वाली मॉडल बन गई है। साथ ही यह भारत में SUV सेगमेंट में नए मानक स्थापित करते हुए वित्तीय वर्ष 2024-25 की चौथी तिमाही (जनवरी-मार्च) में देश की सबसे ज्यादा बिकने वाली गाड़ी भी बन गई है। आइए जानते हैं कि Hyundai Creta की मासिक और सालाना बिक्री कैसी रही है और इसके बिक्री बढ़ने की वजह क्या रही?

मार्च 2025 में रिकॉर्ड तोड़ बिक्री

Hyundai Creta की मार्च 2025 में 18,059 यूनिट की बिक्री हुई। इससे क्रेटा ने भारतीय ऑटोमोबाइल बाजार में अपनी बादशाहत कायम की है। वहीं, वित्तीय वर्ष 2024-25 की अंतिम तिमाही में इसकी 52,898 यूनिट की बिक्री हुई है, जिससे यह भारत की सबसे पसंदीदा एसयूवी भी बन गई है।

वित्तीय वर्ष 2024-25 में शानदार प्रदर्शन

मासिक बिक्री के साथ ही क्रेटा की वार्षिक बिक्री भी शानदार रही। वित्तीय वर्ष 2024-25 में 1,94,871 क्रेटा की बिक्री हुई, जिससे 20% की साल-दर-साल वृद्धि देखने के लिए मिली। इस बिक्री के साथ क्रेटा भारत में तीसरा सबसे ज्यादा बिकने वाली पैसेंजर वाहन बनी है।

बिक्री में बढ़ोतरी की वजह

Hyundai Creta को पहले नंबर लाने का काम इसके टॉप वेरिएंट ने किया है। इसके ICE वर्जन का बिक्री में 24% का योगदान, तो Electric का बिक्री में 71% का योगदान रहा। Creta के सनरूफ वाले वेरिएंट का बिक्री में 69% तक का योगदान रहा। वहीं, इसके कनेक्टेड फीचर्स ने कुल बिक्री में 38% तक का योगदान रहा, जो यह बताता है कि भारतीय ग्राहक स्मार्ट और तकनीकी रूप से एडवांस फीचर्स की तरफ आकर्षित हो रहे हैं।

Hyundai Creta के फीचर्स

भारतीय बाजार में Hyundai Creta को 11.11 लाख रुपये से लेकर 20.50 लाख रुपये की कीमत में ऑफर किया जाता है। इसे डीजल, पेट्रोल और इलेक्ट्रिक ऑप्शन में खरीदा जा सकता है। इसका इलेक्ट्रिक वर्जन हाल में लॉन्च हुआ है। इसे कई वेरिएंट में पेश किया जाता है। हुंडई क्रेटा में पैनोरमिक सनरूफ, 360-डिग्री कैमरा और ADAS के साथ 10.25-इंच डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले, डुअल-जोन क्लाइमेट कंट्रोल के साथ एसी, वायरलेस फोन चार्जर, वेंटिलेटेड फ्रंट सीट्स और 8-स्पीकर बोस साउंड सिस्टम के साथ 6 एयरबैग व TPMS सहित कई बेहतरीन सेफ्टी फीचर्स के साथ ऑफर किया जाता है।

3-सिलेंडर और 4-सिलेंडर इंजन में क्या होता है अंतर? कौन-सा आपके लिए बेहतर

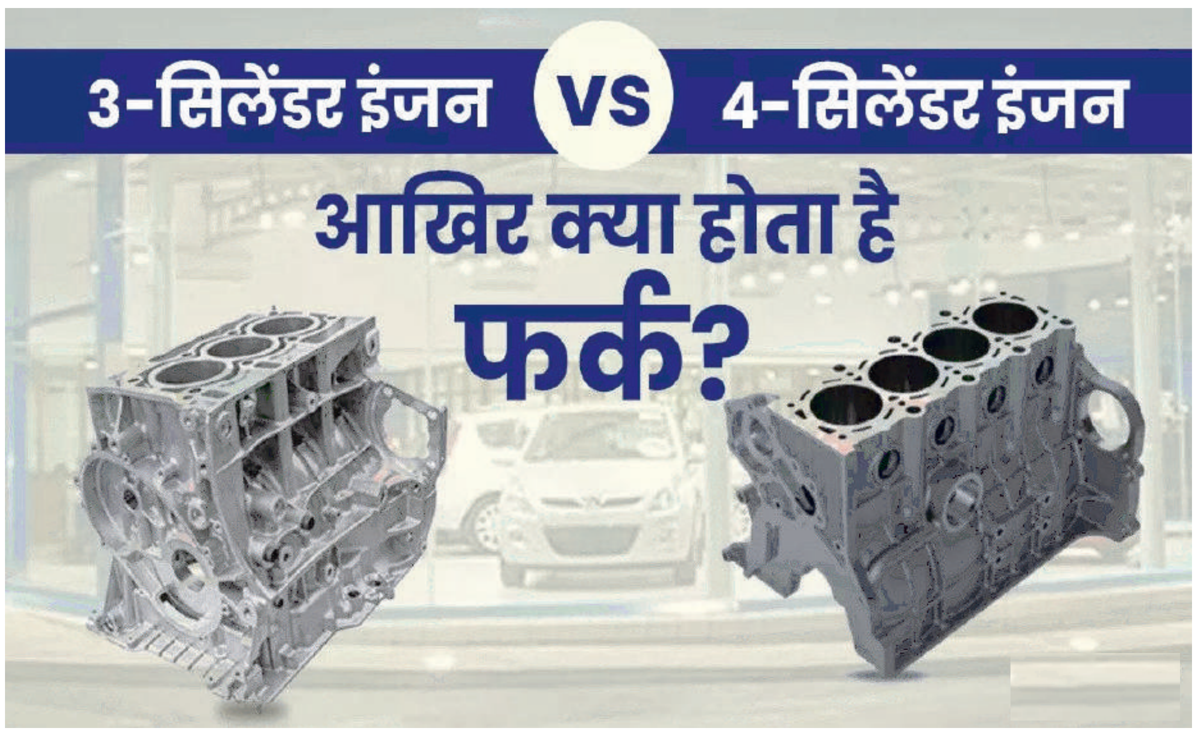

भारतीय बाजार में कई तरह के इंजन ऑप्शन के साथ गाड़ियां आती है। कई लोग को 4-सिलेंडर इंजन अच्छा लगता है जबकि 3-सिलेंडर इंजन वाली कार अच्छी लगती है। हम यहां पर आपको इन दोनों की तुलना करते हुए बता रहे हैं कि आपके लिए कौन-सा इंजन बेहतर रहने वाला है। साथ ही इनके क्या फायदे और नुकसान है यह भी बता रहे हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में ऑटोमेकर 3 सिलेंडर से 8 सिलेंडर इंजन वाली गाड़ियां पेश करती हैं। इनमें से सबसे ज्यादा 3-सिलेंडर और 4-सिलेंडर इंजन पॉपुलर है। कार खरीदने के समय अक्सर लोग इस बारे में सोचते हैं कि उनके लिए कौन-सा इंजन वाली कार बेहतर होगी। दोनों इंजन में कुछ समानताएं है तो कुछ अंतर भी है। हम यहां पर आपको 3-सिलेंडर और 4-सिलेंडर इंजन के बीच के अंतर को समझाते हुए यह भी बता रहे हैं कि कौन-सा इंजन आपे लिए बेहतर रहेगा?

3-सिलेंडर इंजन

ऐसे इंजन में तीन सिलेंडर होते हैं। यह इंजन छोटे और हल्के होते हैं, जिससे कार की कुल वजन कम होती है। इसकी वजह से इस इंजन से चलने वाली गाड़ियां बेहतर फ्यूल एफिशिएंसी देती है, जो शहरी यातायात और छोटे यात्रा के लिए काफी बेहतरीन मानी जाती है।

फायदे

फ्यूल एफिशिएंसीः इसमें ज्यादा फ्यूल एफिशिएंसी मिलती है। वहीं, यह कम फ्यूल की खपत करती है, जिसकी वजह से इसे चलाना सस्ता होता है।

हल्का वजनः 3-सिलेंडर इंजन का वजन कम होता है, जिसकी वजह से कार का कुल वजन भी कम हो जाता है। इस वजह से कार में हैंडलिंग और माइलेज बेहतर मिलती है।

कम लागतः आमतौर पर जिन गाड़ियों में 3-सिलेंडर इंजन का इस्तेमाल किया जाता है उनकी कीमत कम होती है, जिससे यह बजट-फ्रेंडली होती है।

नुकसान

कम पावरः इस इंजन पर चलने वाली गाड़ियों में 4-सिलेंडर इंजन के मुकाबले कम पावर मिलती है। अगर आपको ज्यादा पावर चाहिए, तो यह इंजन आपको लिए सही नहीं हो सकता है।

वाइब्रेशन और शोरः इनसे चलने वाली गाड़ियोम में ज्यादा वाइब्रेशन और शोर का सामना करना पड़ सकता है, खासकर हाई रेव्स के दौरान।

4-सिलेंडर इंजन

इसमें चार सिलेंडर का इस्तेमाल किया जाया है, जो ज्यादा पावर और स्मूद ड्राइविंग अनुभव देता है। इस इंजन का इस्तेमाल अख्सर बड़े और ज्यादा पावरफुल गाड़ियों में किया जाता है, जो हाई स्पीड और ज्यादा भार सहन करने के लिए सक्षम होते हैं।

फायदे

ज्यादा पावरः इस इंजन वाली गाड़ियों में 3-सिलेंडर के मुकाबले ज्यादा पावर और टॉर्क मिलता है, जो कार को तेज स्पीड में चलाने में मदद करता है।

कम वाइब्रेशनः 4-सिलेंडर इंजन से चलने वाली कारों में कम वाइब्रेशन का सामना करना पड़ता है, जिससे यह ज्यादा आरामदायक और स्मूद चलती है।

बेहतर परफॉर्मेंसः 4-सिलेंडर इंजन वाली गाड़ियां ज्यादा वजह और तेज स्पीड सहन करने में कैपेबल होती हैं, जिससे यह बड़े शहरों और लंबी यात्राओं के लिए आदर्श होते हैं।

नुकसान

कम फ्यूल एफिशिएंसीः इनमें 3-सिलेंडर के मुकाबले कम फ्यूल एफिशिएंसी मिलती है। इसका सीधा मतलब है कि यह ज्यादा फ्यूल की खपत करती है।

ज्यादा लागतः 4-सिलेंडर इंजन की कीमत ज्यादा होती है, जिसकी वजह से यह गाड़ी की कीमत को भी बढ़ा देती है।

कौन-सा इंजन आपके लिए बेहतर?

अगर आप शहरी यातायात में सफर करते हैं और बजट को प्राथमिकता देते हैं, तो 3-सिलेंडर इंजन आपके लिए एकदम सही हो सकता है। यह कम कीमत और बेहतर माइलेज के साथ आती है।

अगर आप लंबी दूरी का सफर करते हैं और आपको ज्यादा पावर और बेहतर परफॉर्मेंस चाहिए, तो आप 4-सिलेंडर इंजन वाली कार खरीद सकते हैं। यह ज्यादा पावर और स्मूद ड्राइविंग अनुभव के साथ आती है।

आपके लिए सही इंजन का चुनाव आपके उपयोग और प्राथमिकताओं पर निर्भर करेगा।

टाटा मोटर्स कार पर 1.35 लाख तक की छूट; अल्ट्रोज, हैरियर और सफारी पर सबसे ज्यादा डिस्काउंट

अप्रैल 2025 के लिए टाटा मोटर्स डिस्काउंट ऑफर लेकर आया है। इस ऑफर के तहत कंपनी उपभोक्ता छूट स्क्रैपेज और एक्सचेंज बोनस दे रही है। अप्रैल में टाटा की Nexon Punch Altroz Harrier और Safari पर 1.35 लाख रुपये तक की छूट दी जा रही है। आइए जानते हैं कि टाटा मोटर्स की किस कार पर कितना डिस्काउंट मिल रही है।

नई दिल्ली। भारत की प्रमुख कार कंपनियों में से एक टाटा मोटर्स ने अप्रैल 2025 के लिए अपनी कई कारों पर शानदार डिस्काउंट और ऑफर की घोषणा की है। कंपनी की तरफ से दी जा रही छूट में उपभोक्ता छूट, स्क्रैपेज और एक्सचेंज बोनस शामिल है। टाटा मोटर्स के MY24 मॉडल्स पर बंपर डिस्काउंट दिया जा रहा है। कंपनी ने अप्रैल 2025 के महीने के लिए ग्राहकों को 1.5 लाख रुपये तक की छूट दे रही है। आइए जानते हैं कि Tata Motors की कारों पर अप्रैल 2025 में बंपर छूट दी जा रही है।

Tata Punch

यह टाटा मोटर्स की सबसे ज्यादा बिकने वाली कार है। अप्रैल में Tata Punch पर सबसे कम छूट मिल रही है। इसके सभी वेरिएंट के MY24 मॉडल और MY25 मॉडल पर 25,000 रुपये तक की छूट दी जा रही है।

Tata Curvv

टाटा मोटर्स अपनी नई SUV Tata Curvv के MY24 मॉडल पर छूट दे रही है। कंपनी इसके MY24 मॉडल पर 30,000 रुपये तक का डिस्काउंट ऑफर कर रही है। इसपर केवल उपभोक्ता छूट मिल रही है। इसपर किसी तरह का स्क्रैपेज या एक्सचेंज बोनस नहीं दिया जा रहा है।

Tata Tiago

टाटा मोटर्स की सबसे किफायती हैचबैक Tiago को हाल ही में मिड-लाइफ अपडेट दिया गया है। इसके पुराने मॉडल पर 35,000 रुपये तक का डिस्काउंट दिया जा रहा है। वहीं, इसके MY25 वेरिएंट पर 25,000 रुपये तक का डिस्काउंट ऑफर किया जा रहा है। इसके बेस XE वेरिएंट पर कोई छूट नहीं दी जा रही है।

Tata Tigor

Tiago और Tigor दोनों को ही एक साथ मिड-लाइफ अपडेट दिया गया है। इसक पुराने वेरिएंट पर 45,000 रुपये तक का डिस्काउंट मिल रहा है, जिसमें उपभोक्ता छूट 30,000 रुपये और स्क्रैपेज और एक्सचेंज बोनस 15,000 रुपये तक शामिल है। इसके MY25 वेरिएंट पर 30,000 रुपये तक का डिस्काउंट दिया जा रहा है।

Tata Nexon

टाटा मोटर्स अपनी Nexon पर 45,000 रुपये तक का डिस्काउंट दे रही है। इसके MY24 मॉडल्स के सभी इंजन ऑप्शन पर 5,000 रुपये की उपभोक्ता छूट और 10,000 रुपये का एक्सचेंज या स्क्रैपेज बोनस दिया जा रहा है। इसके MY25 वेरिएंट्स पर केवल 15,000 रुपये का डिस्काउंट मिल रहा है।

Tata Harrier और Tata Safari

टाटा मोटर्स की Harrier और Safari प्रमुख SUV है। इनपर अप्रैल 2025 में 75,000 रुपये तक का डिस्काउंट दिया जा रहा है। इस छूट को इनके 2024 मॉडल पर दिया जा रहा है,

जबकि 2025 मॉडल पर 50,000 रुपये की छूट मिल रही है।

Tata Altroz

टाटा मोटर्स अप्रैल 2025 में Altroz पर सबसे ज्यादा छूट दी जा रही है। इसके पेट्रोल, डीजल और CNG वेरिएंट्स के MY24 मॉडल्स पर 1 लाख रुपये तक का डिस्काउंट दिया जा रहा है। इसके Altroz Racer वेरिएंट पर 1.35 लाख रुपये तक का डिस्काउंट दिया जा रहा है, जबकि वेरिएंट्स पर 45,000 रुपये तक की छूट दी जा रही है।

नोटः छूट की राशि शहर के हिसाब से अलग-अलग हो सकती है और यह स्टॉक की उपलब्धता पर निर्भर करती है। सही राशि जानने के लिए कृपया अपने नजदीकी डीलर से संपर्क करें।

कृषि उत्पाद में दखल का बाजार

विजय गर्ग

अमेरिका चाहता है कि कृषि उत्पाद के लिए भारतीय बाजार खुले और उन पर शुल्क भी कम हो। अगर भारत ऐसा कोई समझौता करता है, तो ब्रिटेन और यूरोपीय संघ भी मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) के लिए दबाव बनाएंगे। यूरोपीय संघ 'चीज' और अन्य दुग्ध उत्पाद पर शुल्क कटौती की इच्छा जता चुका है।

अमेरिकी दबाव के बावजूद भारत अपने कृषि उत्पाद का बाजार खोलने के पक्ष में नहीं दिख रहा है। दरअसल, भारत की सत्तर करोड़ से अधिक आबादी कृषि उपज, दुग्ध उत्पादन, मछली पालन और अन्य समुद्री उत्पाद पर आश्रित है। हालांकि भारत सरकार इनकी आर्थिक स्थिति मजबूत बनाने की दृष्टि से मुफ्त अनाज, खाद्य सबसिडी और किसानों को छह हजार रुपए प्रतिवर्ष अनुदान के रूप में देती है। भारत की सत्तर फीसद अर्थव्यवस्था का मूल आधार कृषि और उससे जुड़े उत्पाद हैं। अब अमेरिका इस परिप्रेक्ष्य में भारत पर द्विपक्षीय बातचीत का दबाव बना रहा है। अमेरिका चाहता । है कि कृषि उत्पाद के लिए भारतीय बाजार खुले और उन पर शुल्क भी कम हो। अगर भारत ऐसा कोई समझौता करता है, तो ब्रिटेन और यूरोपीय संघ भी मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) के लिए दबाव बनाएंगे। यूरोपीय संघ 'चीज' और अन्य दुग्ध उत्पाद पर शुल्क कटौती की इच्छा जता चुका है। । मगर भारत के लिए कृषि में बाहरी दखल एक संवेदनशील मसला है, क्योंकि हमारे किसान विदेशी पूंजीपतियों से प्रतिस्पर्धा करने की स्थिति में नहीं हैं। भारत में कृषि केवल आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक सांस्कृतिक तरीका भी है। जबकि अमेरिका और यूरोपीय देश कृषि को मुनाफे का उद्योग मानते हैं। एक रपट के अनुसार 2024 में अमेरिका का कृषि निर्यात 176 अरब डालर था, जो उसके कुल व्यापारिक निर्यात का लगभग दस फीसद है। बड़े पैमाने पर मशीनीकृत खेती और भारी सरकारी सबसिडी के साथ अमेरिका और अन्य विकसित देश भारत को अपने निर्यात का विस्तार करने के लिए आकर्षक बाजार के रूप में देखते हैं। जबकि भारत अपने कृषि क्षेत्र को मध्यम से उच्च शुल्क की कल्याणकारी योजनाओं द्वारा संरक्षित किए हुए है, ताकि किसानों को अनुचित प्रतिस्पर्धा से बचाया जा सके कृषि क्षेत्र को मुक्त बाजा बाजार बनाने का मतलब है, आयात प्रतिबंधों और शुल्कों को कम करना। कृषि को बाहरी सबसिडी वाले विदेशी आयातों के लिए खोलने का अर्थ होगा, सस्ते खाद्य उत्पादों का भारत में आना। यह खुलापन भारतीय किसानों की आय और आजीविका को गंभीर रूप से प्रभावित करेगा।

ऐसा ही दबाव भारत पर विश्व व्यापार संगठन (डब्लूटीओ) ने 2022 हुई जेनेवा बैठक में बनाया था। यहां तक कि अमेरिका और अन्य यूरोपीय देशों ने भारतीय किसानों को दी जाने वाली कृषि सबसिडी का जबर्दस्त विरोध किया था। ये देश चाहते हैं कि किसानों को जो सालाना छह हजार रुपए की आर्थिक मदद और न्यूनतम समर्थन मूल्य पर अनाज खरीदने की सुविधा दी जा रही है, भारत उसे तत्काल बंद करे। दरअसल, देशों का मानना है कि सबसिडी की वजह से ही भारतीय किसान चावल और गेहूं का भरपूर उत्पादन करने में सक्षम हुए हैं और भारत इनके

अग्रणी देश बन गया है। बांग्लादेश, श्रीलंका, संयुक्त अरब अमीरात, इंडोनेशिया, फिलीपींस और नेपाल के अलावा 68 देश भारत से गेहूं आयात करते हैं। भारत दुनिया के डेढ़ सौ देशों को चावल का निर्यात करता है। अमेरिका को भारत की यह समृद्धि फूटी आंख नहीं सुहा रही है।

दरअसल, सकल फसल उत्पाद मूल्य की दस फीसद सबसिडी का निर्धारण 1986-88 की अंतरराष्ट्रीय कीमतों के आधार पर किया गया था। बीते साढ़े तीन दशक में मंहगाई ने कई गुना छलांग लगाई है। इसलिए इस सीमा का भी पुनर्निर्धारण जरूरी है। यही वह दौर था, जब भूमंडलीय आर्थिक उदारवाद की अवधारणा ने बहुत कम समय में यह प्रमाणित कर दिया कि वह उपभोक्तावाद को बढ़ावा देकर अधिकतम मुनाफा बटोरने का उपाय भर है। टीएफए की सबसिडी संबंधी शर्त, औद्योगिक देश और उनकी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के इसी मुनाफे में और इजाफा करने की दृष्टि लगाई गई है, ताकि लाचार आदमी की आजीविका के संसाधनों को दरकिनार कर उपभोक्तावादी वस्तुएं खपाई जा सकें। नवउदारवाद की ऐसी ही इकतरफा और विरोधाभासी नीतियों का नतीजा है कि अमीर और गरीब के बीच खाई लगातार बढ़ती जा रही है। दरअसल, देशी और विदेशी उद्योगपति पूंजी का निवेश दो ही क्षेत्रों में करते हैं। एक, उपभोक्तावादी उपकरणों के निर्माण और वितरण में, , दूसरे प्राकृतिक संपदा के दोहन में यही दो क्षेत्र धनार्जन के अहम स्रोत हैं।

अमेरिका जैसे विकसित देश भारत में किसानों को खाद और बिजली पर दी जाने वाली सबसिडी का भी विरोध कर रहे हैं। ये देश भारत के मछली पालन और उसके मांस के निर्यात में लगातार हो रही बढ़ोतरी से भी परेशान हैं। मछली पालकों को आर्थिक मदद मिलने से इसके उत्पादन में इजाफा हुआ है और मछली पालक वैश्विक बाजार में मांस निर्यात की प्रतिस्पर्धा में विकसित देशों के मुकाबले में बराबरी करने लगे हैं। यही कारण है कि अमेरिका भारतीय मछुआरों को मिलने वाली सबसिडी को प्रतिबंधित करना चाहता है।

अमेरिका और यूरोपीय देशों की निगाह भारतीय दूध और दुग्ध उत्पाद व्यापार पर भी टिकी है। दुनिया की दूध का कारोबार करने वाली सबसे बड़ी कंपनी फ्रांस की लैक्टेल है। इसने हैदराबाद की 'तिरुमाला डेयरी' को खरीद लिया है। भारत की तेल कंपनी आयल इंडिया भी इसमें प्रवेश कर रही है, क्योंकि दूध का यह कारोबार 16 फीसद की दर से हर साल बढ़ रहा है। अमेरिका भी अपने देश में बने दूध के सह उत्पाद भारत में खपाने की तिकड़म में है। । हालांकि फिलहाल उसे सफलता नहीं मिली है। दरअसल, भारत के कृषि और डेयरी उद्योग को काबू लेना अमेरिका की प्राथमिकताओं में शामिल है, ताकि यहां बड़े और बुनियादी जरूरत वाले बाजार पर उसका कब्जा हो जाए। इसलिए जीएम प्रौद्योगिकी से जुड़ी कंपनियां और धन के लालची चंद कृषि वैज्ञानिक भारत समेत दुनिया में बढ़ती आबादी और खाद्य तेलों में आत्मनिर्भर हो जाने का बहाना बनाकर इस तकनीक की मार्फत खाद्य सुरक्षा की गारंटी का भरोसा जताते हैं। पर इस परिप्रेक्ष्य में भारत को सोचने की जरूरत है कि बिना जीएम बीजों का इस्तेमाल किए ही पिछले ढाई दशक में हमारे खाद्यान्न उत्पादन में पांच गुना बढ़ोतरी हुई है। मध्यप्रदेश में बिना जीएम बीजों के अनाज और फल-सब्जियों का उत्पादन बेतहाशा बढ़ा है। इसीलिए मध्यप्रदेश को पिछले कई साल से लगातार कृषि कर्मण सम्मान से सम्मानित किया जा रहा है। जाहिर है, हमारे परंपरागत बीज हा उन्नत किस्म के हैं और वे भरपूर फसल पैदा करने में सक्षम हैं। इसीलिए अब कपास के परंपरागत बीजों से खेती करने के लिए किसानों को कहा जा रहा है। आनुवंशिक परिवर्धित बीजों से खेती करने के बजाय, ह भंडारण की समुचित व्यवस्था करने की जरूरत है।' ऐसा न होने के कारण हर साल लाखों टन खाद्यान्न खुले में पड़ा रहने से सड़ जाता है। इन सब तथ्यों को रेखांकित करते हुए स्वामीनाथन ने कहा था कि तकनीकी अपनाने से पहले उसके नफा-नुकसान को ईमानदारी से आंकने की जरूरत है। बहरहाल, अमेरिका की भारतीय कृषि और दुग्ध कारोबार को हड़पने की दुर्भावनापूर्ण मंशा से बचने की जरूरत है।

भारत में दसवीं कक्षा के बाद राइट स्ट्रीम कैसे चुनें

विजय गर्ग

भारत में एक छात्र के रूप में, 10 वीं कक्षा के बाद सही स्ट्रीम चुनना एक कठिन काम हो सकता है। इतने सारे विकल्प उपलब्ध होने के साथ, अभिभूत और अनिश्चित महसूस करना आसान है कि कौन सा रास्ता लेना है। लेकिन डर नहीं ! यह मार्गदर्शिका यहां आपको विभिन्न धाराओं - विज्ञान, वाणिज्य और कला - और उनके संबंधित पेशेवरों और विपक्षों के माध्यम से नेविगेट करने में मदद करने के लिए है। इस लेख के अंत तक, आपको अपने हितों, कौशल और भविष्य के लक्ष्यों के लिए सही स्ट्रीम चुनने के तरीके की बेहतर समझ होगी। तो चलिए गोता लगाते हैं !

विभिन्न प्रकार की धाराएँ 10 वीं कक्षा पूरी करने के बाद, एक छात्र को जो सबसे महत्वपूर्ण निर्णय लेना है, वह है अपने भविष्य के अध्ययन के लिए एक स्ट्रीम चुनना। भारत में, मुख्य रूप से चुनने के लिए तीन धाराएँ हैं - विज्ञान, वाणिज्य और कला।

विज्ञान स्ट्रीम उन छात्रों के लिए उपयुक्त है जिनका भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान जैसे गणित और विज्ञान विषयों के प्रति झुकाव है। इस स्ट्रीम के साथ, छात्र इंजीनियरिंग या मेडिकल क्षेत्रों में डिग्री हासिल कर सकते हैं।

कॉमर्स स्ट्रीम में अन्य वैकल्पिक विषयों के साथ बिजनेस स्टडीज, इकोनॉमिक्स और अकाउंटेंसी का अध्ययन शामिल है। वाणिज्य के लिए चयन करने वाले छात्र चार्टर्ड अकाउंटेंसी (सीए), कंपनी सचिव (सीएस) या बैचलर ऑफ कॉमर्स (बी.कॉम) जैसे पाठ्यक्रमों को देख सकते हैं।

आर्ट्स स्ट्रीम में मानविकी से संबंधित विषय जैसे इतिहास, राजनीति विज्ञान, मनोविज्ञान आदि शामिल हैं। यह विकल्प छात्रों को पत्रकारिता और जनसंचार या होटल प्रबंधन जैसे अद्वितीय कैरियर विकल्पों का पता लगाने की अनुमति देता है।

प्रत्येक स्ट्रीम के अपने फायदे और नुकसान हैं, जो इस बात पर निर्भर करता है कि छात्र अधिक रुचि रखता है। यह महत्वपूर्ण है कि वे निर्णय लेने से पहले सभी कारकों पर विचार करें जो उनके भविष्य की शिक्षा और कैरियर पथ को प्रभावित करेंगे।

प्रत्येक स्ट्रीम के पेशेवरों और विपक्ष 10 वीं कक्षा के बाद एक स्ट्रीम चुनना कई छात्रों के लिए एक चुनौतीपूर्ण काम हो सकता है। सूचित निर्णय लेने से पहले प्रत्येक स्ट्रीम के पेशेवरों और विपक्षों को समझना आवश्यक है।

भारत में, विज्ञान निस्संदेह एक लोकप्रिय क्षेत्र है। विज्ञान चुनने के मुख्य लाभों में से एक यह है कि यह इंजीनियरिंग, चिकित्सा, वास्तुकला और अधिक जैसे विभिन्न कैरियर विकल्पों को खोलता है। हालांकि, इसका मतलब यह भी है कि अच्छे ग्रेड प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करना क्योंकि ये पाठ्यक्रम अत्यधिक प्रतिस्पर्धी हैं। इसके अतिरिक्त, विज्ञान को गणित और भौतिकी में एक मजबूत नींव की आवश्यकता होती है जो कुछ छात्रों के लिए कठिन हो सकती है।

वाणिज्य भारतीय छात्रों के बीच एक और लोकप्रिय विकल्प है क्योंकि यह चार्टर्ड अकाउंटेंसी, व्यवसाय प्रबंधन या वित्तीय विश्लेषण जैसे आकर्षक करियर प्रदान करता है। यह क्षेत्र आपको वित्त, अर्थशास्त्र और लेखांकन सिद्धांतों के बारे में जानने की अनुमति देता है जो आपको अपने भविष्य की नौकरियों में सफल होने में मदद करेंगे। हालांकि, वाणिज्य एक हाथ पर अनुभव प्रदान नहीं करता है जैसे विज्ञान प्रयोगशालाओं के साथ करेगा या उदार कला पाठ्यक्रम रचनात्मक परियोजनाओं के साथ करेंगे।

कला / मानविकी में इतिहास, साहित्य और भाषाएँ जैसे विषय शामिल हैं जो आपको अपने महत्वपूर्ण सोच कौशल में सुधार करते हुए सांस्कृतिक अध्ययन में देरी करने की अनुमति देते हैं। यहां लाभ पत्रकारिता या लेखन जैसे रचनात्मक करियर को आगे बढ़ाने के लिए अधिक अवसर प्रदान करने में निहित है, लेकिन अन्य क्षेत्रों की तुलना में नौकरी की सुरक्षा की कमी हो सकती है।

वास्तव में एक सर्वश्रेष्ठ स्ट्रीम नहीं है; प्रत्येक छात्र के अद्वितीय हित और कौशल सेट होते हैं जो व्यक्तिगत लक्ष्यों के आधार पर एक विकल्प को दूसरे से बेहतर बनाते हैं।

कैसे करने के लिए चुनते हैं-सही धारा के बाद 10वीं ग्रेड

1.। अपने हितों की पहचान करें आपकी 10 वीं कक्षा के बाद सही स्ट्रीम चुनने की दिशा में पहला कदम आपके हितों की पहचान करना है। आपकी रुचि यह निर्धारित करने में एक महत्वपूर्ण कारक है कि आपको कौन सा रास्ता लेना चाहिए, क्योंकि यह आपको अपनी शैक्षणिक यात्रा के दौरान प्रेरित रहने में मदद करेगा। अपने हितों की पहचान शुरू करने के लिए, अपने आप से पूछें कि आपको किन विषयों का अध्ययन करने में सबसे अधिक आनंद आता है और कौन सी गतिविधियाँ या शौक आपको साज़िश करते हैं। अपने पिछले अनुभवों पर चिंतन करें और इस बारे में सोचें कि आपने अकादमिक रूप से अच्छा प्रदर्शन कहां किया और आपने कहां संघर्ष किया।

2.। कैरियर परामर्श प्राप्त करें कैरियर परामर्श में आपके शैक्षणिक और पेशेवर विकल्पों के बारे में सूचित निर्णय लेने में मदद करने के लिए आपके हितों, कौशल, ताकत और कमजोरियों का आकलन करना शामिल है। एक अच्छा काउंसलर उपलब्ध विभिन्न धाराओं के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करेगा और वे आपके व्यक्तित्व लक्षणों के साथ कैसे संरेखित करेंगे। इसके अलावा, एक कैरियर काउंसलर आपको विभिन्न नौकरी के अवसरों की खोज करने की दिशा में भी मार्गदर्शन करेगा जो अध्ययन के चुने हुए क्षेत्र के लिए प्रासंगिक हैं। वे आगे की शिक्षा की संभावनाओं पर सलाह देंगे और अतिरिक्त कौशल या साख विकसित करने के तरीके सुझाएंगे जो बाद में रोजगार में वृद्धि कर सकते हैं।

3। भविष्य के कैरियर के अवसरों को देखें 10 वीं कक्षा के बाद एक प्रमुख का चयन करते समय कैरियर की संभावनाओं को ध्यान में रखा जाना चाहिए। याद रखें कि अभी आप जो निर्णय लेते हैं, वह आपके भविष्य को महत्वपूर्ण तरीकों से आकार देगा। नतीजतन, प्रत्येक स्ट्रीम के लिए नौकरी के अवसरों की जांच और समझ करना आवश्यक है। गतिशील या जल्द-से-विस्तार वाले बाजारों में बाजार की प्रवृत्ति की जांच करना भी शिक्षाप्रद हो सकता है। उद्योग के कागजात पढ़ना या क्षेत्र के विशेषज्ञों से बात करना आपको यह डेटा प्राप्त करने में मदद कर सकता है।

4। अपनी ताकत का पता लगाएं अपनी प्रतिभा का पता लगाना यह पता लगाने के बाद अगला कदम है कि आप किस बारे में भावुक हैं, संभावित करियर पर शोध कर रहे हैं, और विभिन्न पटरियों के बारे में सब सीख रहे हैं। यह एक महत्वपूर्ण कदम है क्योंकि किसी ऐसी चीज में महारत हासिल करना जो किसी की प्रतिभा के लिए खेलती है, जिसके परिणामस्वरूप आमतौर पर उच्च शैक्षणिक उपलब्धि और अधिक खुशी होती है। अपनी ताकत के बारे में सोचें और उन पर निर्माण करें। नेतृत्व क्षमता, एथलेटिक, संचार, महत्वपूर्ण सोच और समस्या-समाधान, साथ ही शैक्षणिक प्रदर्शन जैसी चीजों के बारे में सोचें। ध्यान रखें कि हर कोई तालिका में कुछ विशेष लाता है। दीर्घकालिक शैक्षणिक प्रदर्शन और भविष्य के पेशेवर अवसरों की कुंजी 10 वीं कक्षा के बाद एक ट्रैक चुन रही है जो आपके हितों और प्राकृतिक क्षमताओं के साथ संरेखित करता है।

5.। अपनी कमजोरियों का पता लगाएं 10 वीं कक्षा के बाद एक स्ट्रीम चुनना एक कठिन काम हो सकता है। हालांकि अपनी ताकत और हितों पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है, लेकिन अपनी कमजोरियों की पहचान करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। यह पता लगाना कि आप जो अच्छे नहीं हैं, वह आपको एक ऐसी धारा चुनने से बचने में मदद कर सकता है जो आपको लंबे समय तक सूट न करे। अपनी कमजोरियों का पता लगाने का एक प्रभावी तरीका कैरियर मूल्यांकन परीक्षण लेना है। ये परीक्षण आपके व्यक्तित्व लक्षण, दृष्टिकोण और सुधार के क्षेत्रों में अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं। वे किसी भी कौशल अंतराल या चुनौतियों को उजागर करने में भी मदद कर सकते हैं जिन्हें आपको दूर करने की आवश्यकता हो सकती है।

निष्कर्ष आपके शैक्षणिक ध्यान के बारे में दसवीं कक्षा के बाद आपका निर्णय आपके भविष्य के अवसरों को प्रमुखता से प्रभावित करेगा। निर्णय लेने से पहले, आपकी प्राथमिकताओं, कौशल और दीर्घकालिक उद्देश्यों का मूल्यांकन करना महत्वपूर्ण है। कोई भी जल स्रोत दूसरों से स्वाभाविक रूप से श्रेष्ठ नहीं है। प्रत्येक विकल्प में लाभ और कमियां हैं; अपने लक्ष्यों को सबसे अच्छा फिट करने वाले को चुनना आवश्यक है। विभिन्न विकल्पों पर अपना होमवर्क करें और यदि आवश्यक हो तो अपने लोगों, प्रशिक्षकों और मार्गदर्शन परामर्शदाताओं से सलाह लें। याद रखें कि 10 वीं कक्षा के बाद अपने प्रमुख को बदलना मुश्किल हो सकता है, लेकिन असंभव नहीं है। ब्याज, क्षमता, कैरियर के अवसरों आदि सहित तत्वों का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन यह तय करते समय आवश्यक है कि दसवीं कक्षा पूरी करने के बाद कौन सा शैक्षणिक मार्ग आगे बढ़ाया जाए। ध्यान रखें कि अब आप जो विकल्प बनाते हैं, उसका आपकी भविष्य की उपलब्धियों पर स्थायी प्रभाव पड़ेगा। अल्फा अकादमी जैसी अनुभवी अकादमी के साथ हाथ मिलाने का सुझाव दिया गया है जो आपकी यात्रा के माध्यम से आपका मार्गदर्शन कर सकती है और आपके करियर को एक अकादमिक शुरुआत दे सकती है।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार
गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

सबसे महत्वपूर्ण और लोकप्रिय विज्ञान पत्रिकाएँ : विजय गर्ग

यदि आप विज्ञान के साथ एक आकर्षण है और कैसे ब्रह्मांड काम करता है के साथ पेचीदा हैं, तो आप इस आकर्षण ईंधन और वैज्ञानिक ज्ञान के अपने दायरे का विस्तार करने के तरीके खोजने के लिए देखना चाहिए । अब, हम जानते हैं कि इंटरनेट आपको 'वैज्ञानिक जानकारी' के भार तक पहुंच प्रदान करता है जिसे आप एक साधारण गूगल खोज के साथ एक्सेस कर सकते हैं।

हालांकि, हमें यह बताना चाहिए कि इन दावों का बैकअप लेने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान और स्थापित प्रयोगों के बिना इस 'वैज्ञानिक जानकारी' का एक बहुत कुछ उपलब्ध कराया गया है। यही कारण है कि केवल प्रतिष्ठित और भरोसेमंद संस्थानों, व्यक्तियों और प्रयोगशालाओं द्वारा किए गए वैज्ञानिक डेटा और अनुसंधान पर भरोसा करना आवश्यक है।

दुनिया भर से नवीनतम वैज्ञानिक घटनाओं के साथ अपने आप को अद्यतित रखने का सबसे अच्छा तरीका विश्वसनीय वैज्ञानिक जानकारी के भरोसेमंद स्रोत में टैप करना है। हमने शीर्ष 10 सबसे महत्वपूर्ण और लोकप्रिय वैज्ञानिक पत्रिकाओं की एक सूची एक साथ रखी है जो आपको नवीनतम खोजों, आविष्कारों, प्रयोगों और निष्कर्षों तक पहुंच प्रदान करेगी।

इन पत्रिकाओं का आनंद कौन लेगा ? हमारी शीर्ष 10 सूची में छपी पत्रिकाएँ लंबे समय से हैं और वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय द्वारा व्यापक रूप से सम्मानित की जाती हैं। चाहे आप सिर्फ उत्सुक हों और विज्ञान के बारे में अधिक जानना चाहते हों या क्या आप बनाने में वैज्ञानिक हैं, ये पत्रिकाएं आपको विशेषज्ञ जानकारी, सलाह और आंकड़े प्रदान करेंगी जो विज्ञान के आपके ज्ञान को एक नए स्तर पर ले जाएंगी।

हमारी शीर्ष 10 सबसे महत्वपूर्ण और लोकप्रिय विज्ञान पत्रिकाओं को महत्व के क्रम में स्थान दिया गया है। शॉर्टलिस्ट बनाने के लिए हम जिन मानदंडों का उपयोग करते थे, उनमें से कुछ वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय में उनकी प्रतिष्ठा, उनके आसपास की संख्या, उनके सोशल मीडिया निम्नलिखित, वैज्ञानिक सामग्री की गुंजाइश और गुणवत्ता और वैश्विक अपील शामिल हैं।

नेशनल ज्योग्राफिक नेशनल ज्योग्राफिक टीवी चैनल में दुनिया भर के लाखों दर्शक हैं जो पर्यावरण विज्ञान को कवर करने वाले कुछ सबसे मंत्रमुग्ध करने वाले कार्यक्रमों को देखने के लिए दैनिक आधार पर ट्यून करते हैं और उन सभी की खोज जो पुराने और नए दोनों हैं।

नेशनल ज्योग्राफिक टीवी चैनल की लोकप्रियता ने निश्चित रूप से नेशनल ज्योग्राफिक पत्रिका की लोकप्रियता को बढ़ाने में मदद की है और यह एक कारण है कि हमारे पास यह पहली बार हमारी सूची में है। पत्रिका सामग्री भारी नहीं है और इसलिए केवल विज्ञान में आने वालों के लिए एकदम सही है।

नेशनल ज्योग्राफिक ज्यादातर प्राकृतिक विज्ञानों पर ध्यान केंद्रित करता है और हम जिस दुनिया में रहते हैं, उसके बारे में शानदार तस्वीरें और जानकारी प्रदान करता है, अंतरिक्ष, जानवर और आविष्कार। यह पत्रिका प्रिंट और डिजिटल रूप दोनों में उपलब्ध है और इसे सभी उम्र तक पढ़ा जा सकता है। पत्रिका मासिक आधार पर जारी की जाती है और इसमें सदस्यता शुल्क होता है।

यदि आप अपने बच्चों या भव्य बच्चों को विज्ञान में रुचि लेना चाहते हैं, तो ऐसा करने का एक शानदार तरीका उन्हें उपहार के रूप में राष्ट्रीय भौगोलिक पत्रिका सदस्यता देना है।

पत्रिका की खोज करें यदि आप वैज्ञानिक ज्ञान और तथ्यों के साथ थोड़ा भारी होना चाहते हैं, तो अगला कदम निश्चित रूप से डिस्कवर पत्रिका है। यह पत्रिका 1980 के दशक से आसपास है और सभी आधारों को कवर करने के लिए सभी विभिन्न विज्ञानों पर केंद्रित है। विभिन्न पत्रिका संस्करण विभिन्न वैज्ञानिक विषयों के लिए समर्पित हैं जो गणित और भौतिकी, चिकित्सा और स्वास्थ्य, विकास, जीवन विज्ञान, आविष्कार और स्थान से लेकर हैं।

डिस्कवर पत्रिका सभी उम्र के लिए है और डिजिटल और प्रिंट फॉर्म दोनों में उपलब्ध है। हमारी राय में यह पत्रिका युवा वयस्कों और उससे अधिक के लिए सबसे अनुकूल है क्योंकि सामग्री भारी है।

यदि आप किसी विशेष विषय पर शोध कर रहे हैं या सिर्फ अपने वैज्ञानिक ज्ञान का विस्तार करना चाहते हैं, तो आपको डिस्कवर की सदस्यता प्राप्त करने के बारे में सोचना चाहिए।

यदि आप निश्चित नहीं हैं कि डिस्कवर की सदस्यता लें या नहीं, तो आप डिस्कवर वेबसाइट की जांच कर सकते हैं और भौतिक विज्ञान, प्राकृतिक विज्ञान और पर्यावरण विज्ञान को कवर करने वाले कुछ मुफ्त लेख पढ़ सकते हैं। वेबसाइट पर गहराई से और अच्छी तरह से शोध किए गए लेख भी मौजूद हैं लेकिन उन्हें हर दो सप्ताह में जारी किया जाता है। आप इन लेखों के साथ अपनी वैज्ञानिक भूख को मिटा सकते हैं और फिर तय कर सकते हैं कि क्या आप डिस्कवर की सदस्यता लेना चाहते हैं।

लोकप्रिय विज्ञान सूची में होना चाहिए क्योंकि यह सबसे पुरानी वैज्ञानिक पत्रिकाओं में से एक है जो अभी भी मजबूत हो रही है। लोकप्रिय विज्ञान 1872 से लगभग है और पिछले 148 वर्षों में काफी विकसित हुआ है। इस पत्रिका में एक महिला निम्नलिखित की तुलना में एक बड़ा पुरुष है और इसका एक कारण इस तथ्य के कारण है कि पत्रिका प्रौद्योगिकी, गैजेट्स, कारों और DIY वस्तुओं पर बहुत ध्यान केंद्रित करती है।

जबकि ये विषय प्रमुख हैं, लोकप्रिय विज्ञान भी गहरा जाता है और लाइलाज बीमारियों और नवीनतम अत्याधुनिक अनुसंधान और प्रयोगों के लिए डेटा हैकिंग, अंतरिक्ष, जीन-आधारित उपचार खोजों जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर केंद्रित है। पत्रिका प्रिंट और डिजिटल रूप दोनों में उपलब्ध है। हम इसे अपने पुरुष और महिला दोनों पाठकों के लिए सुझाते हैं क्योंकि यह विभिन्न विषयों पर जानकारी का खजाना प्रदान करता है।

जबकि ये विषय प्रमुख हैं, लोकप्रिय विज्ञान भी गहरा जाता है और लाइलाज बीमारियों और नवीनतम अत्याधुनिक अनुसंधान और प्रयोगों के लिए डेटा हैकिंग, अंतरिक्ष, जीन-आधारित उपचार खोजों जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर केंद्रित है। पत्रिका प्रिंट और डिजिटल रूप दोनों में उपलब्ध है। हम इसे अपने पुरुष और महिला दोनों पाठकों के लिए सुझाते हैं क्योंकि यह विभिन्न विषयों पर जानकारी का खजाना प्रदान करता है।

यदि हमारी महिला पाठकों को लगता है कि यह पत्रिका बहुत अधिक पुरुष उन्मुख हो सकती है, तो हमारा सुझाव है कि आप डिजिटल संस्करण की जांच करें और कुछ लेख पढ़ें जो आपकी रुचि रखते हैं क्योंकि लोकप्रिय विज्ञान पत्रिका ने हाल के वर्षों में अनुभव की गई रूढ़िवादिता के कारण कुछ महान जानकारी को याद कर सकते हैं।

वैज्ञानिक अमेरिकी पत्रिका का नाम आपको यह बताने देता है कि यह अमेरिकी बाजार पर केंद्रित है, लेकिन वैज्ञानिक अमेरिकी किसी के लिए भी उपयोगी पठन करता है जो विज्ञान की दुनिया में नवीनतम अनुसंधान, आविष्कार, खोजों और प्रयोगों के बारे में अधिक जानने के लिए उत्सुक है। यह पत्रिका डिजिटल और प्रिंट फॉर्म दोनों में उपलब्ध है।

हमारा मानना है कि यह पत्रिका उन लोगों के लिए उपयुक्त है जो विज्ञान से परिचित हैं और विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अपने शोध या अध्ययन को आगे बढ़ाना चाहते हैं। यदि आप अभी शुरू कर रहे हैं, तो यहां पाई गई जानकारी और सामग्री थोड़ी बहुत भारी हो सकती है। हालांकि, लेखक पाठकों के लिए इसे समझना आसान बनाने के लिए अपनी जानकारी और अंतर्दृष्टि को प्रस्तुत करने और तोड़ने में बहुत अच्छा काम करते हैं।

यदि आप सोच रहे हैं कि क्या आपको वैज्ञानिक अमेरिका की सदस्यता लेनी चाहिए, तो हमारा सुझाव है कि आप उनकी ऑनलाइन वेबसाइट देखें और उनके ब्लॉग की जाँच करने में थोड़ा समय बिताएं जो बहुत जानकारी है। यह आपको एक विचार देगा कि आप पत्रिका में किस प्रकार के वैज्ञानिक विषयों और सामग्री को खोजने की उम्मीद कर सकते हैं।

स्मिथसोनियन यह एक और विज्ञान पत्रिका है जिसमें बहुत मजबूत अमेरिकी प्रभाव हैं लेकिन विज्ञान और अनुसंधान से प्यार करने वाले किसी भी व्यक्ति का ध्यान आकर्षित करेंगे। पत्रिका चित्रों, साहित्य, इतिहास और विज्ञान से लेकर विभिन्न विषयों पर विस्तृत शोध पर बनाई गई है।

यह पत्रिका उन व्यक्तियों के लिए एकदम सही है जिन्हें विस्तृत शोध तक पहुंच की आवश्यकता है। यदि आप एक आकस्मिक पाठक हैं, तो आप इस पत्रिका को थोड़ा बहुत भारी और विस्तृत उन्मुख पा सकते हैं। हालांकि, पत्रिका में 'सबसे लोकप्रिय' अनुभाग आकस्मिक पाठक के लिए ठीक होना चाहिए और उन्हें दिलचस्प जानकारी प्रदान करना चाहिए जो उन्हें रात के खाने की मेज पर सुपर-बुद्धिमान दिखाई देगा।

इसलिए यदि आप एक पत्रिका की तलाश कर रहे हैं जो विज्ञान पर केंद्रित है और साथ ही विभिन्न विषयों पर विस्तृत शोध प्रदान करती है, तो स्मिथसोनियन आपके लिए एकदम सही होगा। आप स्मिथसोनियन को ऑनलाइन सब्सक्राइब कर सकते हैं।

वैज्ञानिक यदि आप वैज्ञानिक बनना चाहते हैं, तो आपको वैज्ञानिक पत्रिका की सदस्यता लेने के बारे में निश्चित रूप से सोचना चाहिए। यदि आप पहले से ही एक वैज्ञानिक हैं, लेकिन इस पत्रिका के बारे में कभी नहीं सुना है, तो जानने के लिए पढ़ें कि यह आपके लिए क्यों पढ़ना चाहिए।

जीवन विज्ञान पेशेवर इस पत्रिका का आनंद लेंगे जो सटीक, तथ्यात्मक और मनोरंजक वैज्ञानिक सामग्री प्रदान करने पर जोर देता है। विषय आणविक जीव विज्ञान, स्टेम सेल अध्ययन, आनुवंशिकी और जीवन विज्ञान हितों की एक श्रृंखला से लेकर हैं। द साइंटिस्ट की टीम अत्यधिक योग्य है और दुनिया भर में अपनाए जा रहे नवीनतम अनुसंधान विधियों, वैज्ञानिक खोजों, नवीनतम प्रौद्योगिकी और नवीन प्रक्रियाओं के साथ पाठकों को प्राप्त करती है।

यदि आप वैज्ञानिक के बारे में एक झलक प्राप्त करना चाहते हैं, तो ऑनलाइन वेबसाइट देखें क्योंकि पूरे सप्ताह में कई लेख पोस्ट किए गए हैं। वैज्ञानिक पत्रिका फेसबुक पेज भी दिलचस्प जानकारी प्रदान करता है और वर्तमान में २ मिलियन से अधिक अनुयायी हैं।

नई वैज्ञानिक पत्रिका इस पत्रिका की जड़ें यूनाइटेड किंगडम में हैं और 1956 से लगभग हैं। न्यू साइंटिस्ट खुद को दुनिया में सबसे लोकप्रिय साप्ताहिक विज्ञान और तकनीक पत्रिका के रूप में बढ़ावा देता है। पत्रिका का यूके, ऑस्ट्रेलिया और संयुक्त राज्य अमेरिका सहित दुनिया के कई हिस्सों में एक बढ़ता प्रशंसक आधार है। पत्रिका ऑनलाइन और प्रिंट मोड दोनों में उपलब्ध है।

इस पत्रिका द्वारा संबोधित कुछ सामान्य विषयों में मानव होने के लिए क्या शामिल है ? जीवन के प्रश्न और वैज्ञानिक उत्तर, नवीनतम वैज्ञानिक खोज और उद्योग में नवीनतम वैज्ञानिक समाचार।

नए वैज्ञानिक के ऑनलाइन संस्करण की जांच करें क्योंकि कई लेख दैनिक आधार पर पोस्ट किए जाते हैं जो आपको दुनिया भर में सबसे महत्वपूर्ण वैज्ञानिक अनुसंधान और सफलताओं पर अद्यतित रखते हैं। नई वैज्ञानिक पत्रिका में ३.६ मिलियन से अधिक प्रशंसकों और ३ मिलियन से अधिक के ट्विटर के साथ एक संपन्न फेसबुक पेज है।

ब्रह्मांड पत्रिका यह सब कुछ के विज्ञान पर केंद्रित है और उन लोगों के लिए एकदम सही है जो विज्ञान के विशाल महासागर के साथ-साथ उन कट्टर विज्ञान nerds के लिए भी अपने पैर गीला कर रहे हैं। पत्रिका में मुख्य विज्ञान, स्वास्थ्य, प्रकृति, पृथ्वी, अंतरिक्ष, प्रौद्योगिकी और इतिहास से लेकर कई अलग-अलग विषय शामिल हैं।

कॉस्मॉस मैगज़ीन में सभी के लिए कुछ न कुछ है क्योंकि लेखकों ने अपनी बढ़ती सदस्यता की सूची में अपील करने के लिए प्रकाश और भारी सामग्री डाली। कॉसमॉस मैगज़ीन की जड़ें ऑस्ट्रेलिया में हैं और २००५ से लगभग हैं। आप मुफ्त समाचार पत्र के लिए साइन अप कर सकते हैं या आगे बढ़ सकते हैं और पत्रिका की सदस्यता ले सकते हैं।

कॉस्मॉस मैगज़ीन ऑनलाइन सब्सक्राइबर्स को अभिलेखागार में जाने और पुराने मुद्दों को खोदने का अवसर देगी जो उन्हें लंबे समय तक व्यस्त रखेंगे। कॉस्मॉस पत्रिका फेसबुक पेज के वर्तमान में 500,000 से अधिक अनुयायी हैं।

लोकप्रिय यांत्रिकी यह पॉप-साइंस पत्रिका निश्चित रूप से एक पुरुष दर्शकों का पक्ष लेती है क्योंकि यह 'आपकी दुनिया कैसे काम करती है' पर केंद्रित है। विषय आउटडोर, प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रॉनिक्स और विज्ञान से संबंधित विषयों को कवर करने वाले अपने आप को कई विषयों को कवर करते हैं। सामग्री उन पाठकों से अपील करने के लिए हल्की और भारी दोनों हो सकती है जो बहुत अधिक हाथ नहीं हैं और साथ ही जो डीआईवाई मॉडल को जल्दी से समझ सकते हैं। पत्रिका 1902 से लगभग रही है और प्रासंगिक और मांग में बने रहने के लिए विकसित होती रही है। पत्रिका के अमेरिकी संस्करण में प्रति वर्ष केवल 10 संस्करण हैं। पत्रिका अंग्रेजी और रूसी दोनों में उपलब्ध है। पाठक जो नवीनतम गैजेट्स, टूल, स्पेस और एविएशन के बारे में अधिक जानना चाहते हैं, वे इस पत्रिका का आनंद लेंगे। लोकप्रिय यांत्रिकी ने 1986 और २००८ में राष्ट्रीय पत्रिका पुरस्कार जीता है। यदि आप लोकप्रिय यांत्रिकी के बारे में अधिक जानना चाहते हैं, तो इसकी वेबसाइट देखें क्योंकि दो पॉडकास्ट हैं जो पत्रिका द्वारा कवर किए गए विषयों पर अधिक प्रकाश डालते हैं।

विज्ञान समाचार यह पत्रिका 1921 में स्थापित की गई थी और तब से विज्ञान, चिकित्सा और प्रौद्योगिकी पर नवीनतम समाचारों के साथ दुनिया भर के पाठकों को प्रदान करती रही है। पत्रिका को सदस्यता शुल्क की आवश्यकता होती है क्योंकि टैगलाइन यह स्पष्ट करती है कि भरोसेमंद पत्रकारिता एक कीमत पर आती है। यह पत्रिका सभी पाठकों के लिए उपयुक्त है क्योंकि पत्रिका का ध्यान विज्ञान के बारे में पाठकों को प्रेरित, सूचित और शिक्षित करना है। पत्रिका को प्रिंट और डिजिटल रूप में एक्सेस किया जा सकता है। यदि आप हाल के हफ्तों में प्रकाशित की गई कुछ विज्ञान समाचारों की जांच करना चाहते हैं, तो ऑनलाइन वेबसाइट देखें। आपको अंतरिक्ष, भौतिकी, पृथ्वी, जीवन और मनुष्यों जैसे विषयों पर ब्रेकिंग न्यूज मिलेगी।

पत्रिका सोसाइटी फॉर साइंस एंड द पब्लिक द्वारा प्रकाशित की गई है और पत्रिका के लिए एक वार्षिक सदस्यता आपको सोसायटी में 12 महीने की मुफ्त सदस्यता देती है। साइंस न्यूज की वार्षिक सदस्यता आपको २२ मुद्दों तक पहुंच प्रदान करती है। एक मुफ्त डिजिटल समाचार पत्र भी है जो आपके इनबॉक्स में दिया जाता है जो आपको नवीनतम वैज्ञानिक समाचारों की सुर्खियाँ और सारांश प्रदान करता है

चिंताजनक है वनों पर अतिक्रमण (सम-सामयिक मुद्दा)

वन क्षेत्र संकट में हैं। इन पर अतिक्रमण हो रहा है, यह केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय की रिपोर्ट कहती है। पाठकों को बताता चलूं कि केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार, देश के 25 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में 13,056 वर्ग किमी वन क्षेत्र पर अतिक्रमण हुआ है, जो दिल्ली के कुल क्षेत्रफल से भी अधिक है, यह चिंताजनक है। जानकारी मिलती है कि मध्य प्रदेश में सबसे अधिक 5,460.9 वर्ग किमी वन भूमि पर कब्जा है, जबकि 409 वर्ग किमी भूमि अतिक्रमण मुक्त की जा चुकी है। कहना ग़लत नहीं होगा कि केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय हरित अधिकरण को सौंपी गई रिपोर्ट कहीं न कहीं देश में वनों के अतिक्रमण की भयावह स्थिति को उजागर करती है। ऐसे में, सरकारों का इस मुद्दे पर गंभीर होना जितना जरूरी है, उतना ही जरूरी है कि हम भी पर्यावरण के प्रति जागरूक बनें। 13,056 वर्ग किलोमीटर वन क्षेत्र पर चिंताजनक इसलिए भी है क्यों कि आज हम लगातार ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्या से जूझ रहे हैं। जानकारी के अनुसार यह इतना बड़ा क्षेत्र है कि इतने में नौ दिल्ली (कुल क्षेत्रफल 1,484 वर्ग किमी.) बसाई जा सकती हैं। यह जमीन दिल्ली, सिक्किम और गोवा के कुल भौगोलिक क्षेत्र से भी अधिक है। रिपोर्ट बताती है कि मार्च 2024 तक 25 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में कुल 13,05,668.1 वन क्षेत्र पर अतिक्रमण था। पाठकों को बताता चलूं कि अभी 10 राज्यों ने आंकड़े प्रस्तुत नहीं किए हैं। एनजीटी ने पिछले साल एक मीडिया रिपोर्ट पर स्वतः संज्ञान लिया था, जिसमें सरकारी आंकड़ों का हवाला देते हुए यह बताया गया था कि देश में 7,50,648 हेक्टेयर (या 7506.48 वर्ग किमी.) वन क्षेत्र अतिक्रमण के अधीन है, जो दिल्ली के आकार की तुलना में पांच गुना अधिक है। हमें यह कतई नहीं भूलना चाहिए कि वन हैं तो हम हैं। कहना ग़लत नहीं होगा वन जहां प्रदूषण को नियंत्रित करने में अहम भूमिका का निर्वहन करते हैं, वहीं दूसरी ओर वन वैश्विक जल चक्र में अहम भूमिका निभाते हैं, ये वर्षा तथा सूखे को नियंत्रित करते हैं। वनों से भोजन, दवाइयां, विभिन्न उत्पाद, लकड़ी, गोंद तो प्राप्त होते ही हैं, वहीं साथ ही साथ ये कई जीवों के लिए प्राकृतिक आवास हैं तथा वनों से हमें रोज़गार भी मिलता है।ये मिट्टी के कटाव को रोकते हैं, मिट्टी को समृद्ध और संरक्षित करते हैं। इतना ही नहीं, वन समुदायों को भूस्खलन और बाढ़ से भी बचाते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो वन हमारे पारिस्थितिकीय तंत्र का मुख्य आधार हैं, जो जैव-विविधता को तो संरक्षित रखते ही हैं, जलवायु में आ रहे बदलावों से निपटने और कार्बन उत्सर्जन को कम करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, जल चक्र को संतुलित रखते हैं और अनगिनत प्रजातियों को आश्रय भी देते हैं। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि हाल ही में आई रिपोर्ट में जिन राज्यों के आंकड़ों के बारे में जानकारी दी गई है, उनमें अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, असम, अरुणाचल प्रदेश, आंध्र प्रदेश, चंडीगढ़, छत्तीसगढ़, दादरा एवं नगर हवेली और दमन एवं दीव, केरल, लक्षद्वीप, महाराष्ट्र, ओडिशा, पुडुचेरी, पंजाब, तमिलनाडु, त्रिपुरा, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, झारखंड, सिक्किम, मध्यप्रदेश, मिजोरम और मणिपुर शामिल हैं तथा जिन राज्यों और केंद्र-शासित प्रदेशों ने अभी भी वन अतिक्रमण का विवरण प्रस्तुत नहीं किया है, उनमें बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, तेलंगाना, पश्चिम बंगाल, नगालैंड, दिल्ली, जम्मू-कश्मीर और लद्दाख शामिल हैं। यहां यह उल्लेखनीय है कि वन क्षेत्र या रिकॉर्डेड फॉरेस्ट एरिया (आरएफए) में सरकार द्वारा आधिकारिक तौर पर वन के रूप में नामित भूमि शामिल होती है, भले ही उस पर पेड़ न हों। गौरतलब है कि आरएफए को क्रमशः तीन श्रेणियों आरक्षित वन (जिन्हें पूर्ण संरक्षण प्राप्त है और जहां शिकार और चराई जैसी गतिविधियों पर आमतौर पर प्रतिबंध है) संरक्षित वन (जहां कुछ गतिविधियों की अनुमति है, जब तक कि उन्हें विशेष रूप से प्रतिबंधित न किया गया हो) तथा अवर्गीकृत वन (जिन्हें आरक्षित या संरक्षित के रूप में वर्गीकृत नहीं किया गया है) को शामिल किया गया है। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि मंत्रालय की रिपोर्ट के मुताबिक, मार्च 2024 तक मध्यप्रदेश में सबसे अधिक 5,460.9 वर्ग किलोमीटर वन क्षेत्र पर अतिक्रमण था। इसमें कहा गया है कि असम में 3,620.9 वर्ग किलोमीटर, कर्नाटक में 863.08 वर्ग किलोमीटर, महाराष्ट्र में 575.54 वर्ग किलोमीटर, अरुणाचल प्रदेश में 534.9 वर्ग किलोमीटर, ओडिशा में 405.07 वर्ग किलोमीटर, उत्तर प्रदेश में 264.97 वर्ग किलोमीटर, मिजोरम में 247.72 वर्ग किलोमीटर, झारखंड में 200.40 वर्ग किलोमीटर और छत्तीसगढ़ में 168.91 वर्ग किलोमीटर वन भूमि पर अतिक्रमण है। कहना चाहूंगा कि आज देश में वनों की अवैध और अंधाधुंध कटाई के कारण पर्यावरण और पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुंचा है। पिछले कुछ सालों से देश के कृषि क्षेत्र में भी अभूतपूर्व विस्तार हुआ है, इससे भी वन क्षेत्रों में कहीं न कहीं कमी आई है। शहरीकरण और औधोगिकीकरण से भी वन क्षेत्रों पर कहीं न कहीं प्रभाव पड़ा ही है। आज देश में खनन कार्य हो रहें हैं, बांध व सड़कें बनाई जा रही हैं। कहना चाहूंगा कि खनन और बुनियादी ढांचे के विकास के नाम पर जिस तेजी से वनों का दोहन बढ़ रहा है, वह वाकई चिंता का विषय है।सच तो यह है कि आज हम पर्यावरण संरक्षण पर उस अनुरूप ध्यान नहीं दे पा रहे हैं,जिस अनुरूप उस पर ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है।सच तो यह है कि पर्यावरण पर ध्यान देने के लिए, हमें अपने व्यवहार में बदलाव लाने होंगे। इसके लिए, हमें पर्यावरण के बारे में जागरूक होना होगा और पर्यावरण संरक्षण के लिए अपने यथेष्ठ व नायाब कदम उठाने होंगे और यह तभी संभव हो सकता है जब हम पर्यावरण संरक्षण के प्रति कृतसंकल्पित हों। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज हम पर्यावरण संरक्षण को लेकर कहीं न कहीं लापरवाही बरत रहे हैं, जबकि हमें अपनी धरती के पर्यावरण और पारिस्थितिकी तंत्र के प्रति हमेशा सजग व जागरूक होना चाहिए। अन्यथा आने वाली पीढ़ियां हमें कोसेंगी। संस्कृत में पेड़ों/वनों का महत्व बताते हुए खूबसूरत शब्दों में क्या खूब कहा गया है कि -'इह पुष्पिताः फलवन्तः च मानवान्तर्पयन्ति, वृक्षाः वृक्षदं पुत्रवत परत्र च तारयन्ति।' इसका मतलब यह है कि फल और फूल देने वाले पेड़ मनुष्यों को तृप्त करते हैं, लेकिन आज हम वनों का अतिक्रमण कर रहे हैं, यह ठीक नहीं है। हाल फिलहाल, चिंता इस बात को लेकर भी है कि बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और राजस्थान समेत करीब दस राज्यों ने तो अभी वन अतिक्रमण क्षेत्र की जानकारी तक नहीं उपलब्ध कराई है। जाहिर है कि इन राज्यों में वनों के अतिक्रमण के आंकड़े जुड़ने के बाद तो देश में वनों की स्थिति और भी अधिक भयावह हो सकती है।मंत्रालय की रिपोर्ट यह तो बताती है कि 409 वर्ग किलोमीटर वन भूमि को अतिक्रमण से मुक्त कराया जा चुका है (जैसा कि ऊपर भी इस लेख में यह जानकारी दे चुका हूं), लेकिन यह स्पष्ट नहीं करती कि क्या यह क्षेत्र मार्च, 2024 तक हुए अतिक्रमण में शामिल है या नहीं ? बहरहाल, यहां सवाल यह उठता है कि इतने बड़े क्षेत्र पर आखिर अतिक्रमण कैसे संभव हुआ ? इस अतिक्रमण के लिए जिम्मेदार कौन हैं ? सवाल यह भी है कि क्या यह कोई नीतिगत खामियों का हिस्सा है अथवा स्थानीय प्रशासन की लापरवाही अथवा नाकामी ? बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि भारत की राष्ट्रीय वन नीति के मुताबिक, देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 33% हिस्सा वन होना चाहिए। यह वन और वृक्षों से आच्छादित होना चाहिए। वास्तव में, इस नीति का मकसद पर्यावरणीय स्थिरता बनाए रखना और देश की प्राकृतिक विरासत को बचाना है, लेकिन आज वनों पर अतिक्रमण होने से वन क्षेत्र कम हो रहें हैं, यह संवेदनशील है। कहना ग़लत नहीं होगा कि वनों में कमी से जलवायु संबंधी अनेक जोखिम पैदा होते हैं। जलवायु जोखिम सूचकांक-2025 बताता है कि भारत सर्वाधिक प्रभावित देशों में छठे स्थान (1993-2022) पर है, जहाँ चरम मौसमी घटनाओं के कारण 80,000 मौतें (विश्व की 10%) हुई हैं तथा कुल वैश्विक आर्थिक नुकसान (180 बिलियन अमेरिकी डॉलर) का 4.3% नुकसान हुआ है।सच तो यह है कि आज वनों की कटाई, वन क्षेत्र के अतिक्रमण, चरागाहों में लगातार कमी और अनियंत्रित औधोगिकीकरण और शहरीकरण ने मौसम चक्र को असंतुलित किया है, जिससे मौसम संबंधी असामान्य घटनाएं भारत समेत पूरी दुनिया में बढ़ी हैं।भारत तो पहले ही जलवायु परिवर्तन के गंभीर प्रभावों का सामना कर रहा है। पिछले दो सालों से तापमान में लगातार बढ़ोतरी दर्ज की जा रही है। कहना ग़लत नहीं होगा कि वनों के अंधाधुंध दोहन, अतिक्रमण से और अधिक जलवायु परिवर्तन होंगे। पाठक जानते हैं कि वनों के अतिक्रमण से जलवायु असंतुलन, बाढ़, भू-स्खलन और सूखे जैसी आपदाएं बढ़ सकती हैं। यदि वन नहीं होंगे तो बारिश नहीं होगी। कार्बन अवशोषण की क्षमता कम होने से वायु प्रदूषण और ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में वृद्धि होगी। ऐसे में, आज जरूरत इस बात की है कि केंद्र और राज्य सरकारें मिलकर एक व्यापक रणनीति बनाएं। आज आधुनिक तकनीक और सूचना क्रांति का जमाना है।वन क्षेत्रों की सतत व माकूल निगरानी के लिए सैटेलाइट इमेजरी और ड्रोन इत्यादि का उपयोग बढ़ाया जा सकता है और वनों का संरक्षण किया जा सकता है। वनों के संरक्षण के लिए वनों की कटाई को नियंत्रित किया जाना चाहिए। वनों को अतिक्रमण से बचाया जाना चाहिए।वनों की आग (दावानल) से बचाव किए जाने की जरूरत है। अधिकाधिक वनरोपण करने की आवश्यकता है। जो भी पौधारोपण किया जाए, उनकी सतत निगरानी की व्यवस्था होनी चाहिए, क्यों कि वनों को भी छोटे बच्चों की तरह पालना पड़ता है तभी जाकर वन क्षेत्र विकसित होते हैं। आज पौधारोपण अभियान तो चलते हैं लेकिन जो पेड़-पौधे लगाए जाते हैं, उनकी सतत निगरानी नहीं हो पाती, इसलिए पेड़ समय से पहले ही मर जाते हैं। आज जरूरत इस बात की भी है कि हम वनों को रोगों से बचाएं।वनों के महत्व के बारे में अधिकाधिक लोगों को जागरूक करें।सामाजिक वानिकी को बढ़ावा दें।वन संरक्षण से जुड़े नियमों और कानूनों का पालन करें।बाँध और बहुउद्देशीय योजनाओं, विकास योजनाओं आदि को बनाते समय वन संरक्षण का ध्यान रखें।स्थानीय समुदायों को वन संरक्षण में शामिल करें। अंत में कहना चाहूंगा कि अगर हम वनों के संरक्षण के प्रति समय रहते नहीं चेते तो यह मानवजाति ही नहीं अपितु समस्त धरती के प्राणियों के बहुत ही विनाशकारी सिद्ध हो सकता है। हमें यह बात अपने जेहन में रखनी चाहिए कि वन हमारी राष्ट्रीय धरोहर हैं और इन्हें बचाना हम सबकी सामूहिक और नैतिक जिम्मेदारी भी है।मत्स्यपुराण में कहा गया है कि 'दशकूपसमावापी दशवापी समो ह्रदः। दशह्रदसमः पुत्रो दशपुत्रसमो द्रुमः।।' तात्पर्य यह है कि दस कुओं के बराबर एक बावड़ी होती है, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र है और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष होता है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

'बिन तेरे बेचैन' — हरियाणवी सिनेमा में प्रेम, जुनून और मानसिक उथल-पुथल की अनोखी कहानी

यह फिल्म हरियाणवी सिनेमा के बदलते परिदृश्य को दर्शाती है, जो पारंपरिक कहानियों से आगे बढ़कर नए विषयों को अपनाने का प्रयास कर रही है। 'बिन तेरे बेचैन' प्रेम की लत और उसके नकारात्मक प्रभावों पर केंद्रित है, जिसमें मुख्य किरदार अपने जुनून में खुद को खो देता है। फिल्म न केवल एक मनोरंजक कहानी प्रस्तुत करती है, बल्कि प्रेम के अंधकारमय पक्ष को भी उजागर करती है। इसका संगीत, विशेष रूप से टाइटल ट्रैक, दर्शकों की भावनाओं को गहराई से जोड़ता है। हरियाणवी सिनेमा अब केवल हास्य और पारंपरिक प्रेम कहानियों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि मनोवैज्ञानिक और सामाजिक पहलुओं पर भी ध्यान दे रहा है। फिल्म प्रेम की लत और मानसिक अस्थिरता पर सवाल उठाती है, जिससे यह केवल एक प्रेम कहानी न होकर एक मनोवैज्ञानिक यात्रा भी बन जाती है। इसे STAGE ऐप पर देखा जा सकता है। यह हरियाणवी सिनेमा में एक नया आयाम जोड़ती है और दर्शकों को सोचने पर मजबूर करती है कि क्या उनका प्रेम वास्तव में संतुलित है या एक लत बन चुका है।

डॉ. सत्यवान सौरभ*

हरियाणवी फिल्म इंडस्ट्री धीरे-धीरे अपनी सीमाओं को तोड़ रही है और पारंपरिक कहानियों से आगे बढ़ रही है। इसी दिशा में 'बिन तेरे बेचैन' एक अनूठी फिल्म है, जो प्रेम की लत और उसके गहरे प्रभावों को टटोलती है। यह फिल्म राजराही प्रोडक्शन के तहत बनी है और इसके नायक विनोद मेहरा (वी एम बेचैन) हैं।

हरियाणवी सिनेमा का बदलता परिदृश्य

पारंपरिक रूप से हरियाणवी फिल्में मुख्य रूप से ग्रामीण जीवन, हास्य और सांस्कृतिक मूल्यों पर केंद्रित रही हैं। लेकिन हाल के वर्षों में, इंडस्ट्री ने नई कहानियों और आधुनिक मुद्दों की ओर ध्यान देना शुरू किया है। 'बिन तेरे बेचैन' इसी नई लहर का हिस्सा है, जो एक अनछुए विषय—प्रेम की लत—को परखने का प्रयास करती है। यह फिल्म सिर्फ एक साधारण प्रेम कहानी नहीं है, बल्कि यह उस जुनून और अस्थिरता को भी दिखाती है, जो कभी-कभी प्यार के नाम पर लोगों की जिंदगी को बर्बाद कर सकती है।

एक अलग कहानी, एक अलग दृष्टिकोण

आमतौर पर प्रेम कहानियां रोमांस और खुशहाल अंत तक सिमटी रहती हैं, लेकिन 'बिन तेरे बेचैन' एक असामान्य राह पकड़ती है। यह फिल्म दिखाती है कि प्रेम केवल खुशी नहीं, बल्कि एक लत भी बन सकता है – एक ऐसा जुनून, जो व्यक्ति को उसकी वास्तविकता से काट सकता है। प्रेम और जुनून के इस अंधकारमय पक्ष को फिल्म बड़े ही प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करती है।

फिल्म का मुख्य किरदार एक ऐसा शख्स है, जो अपने प्रेम को पाने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार है। लेकिन जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, वह खुद को एक ऐसी दुनिया में फंसा पाता है, जहां प्रेम केवल दर्द और पीड़ा का कारण बन जाता है। यह कहानी उन कई लोगों की वास्तविकता को दर्शाती है, जो प्रेम में खुद को खो देते हैं और अपनी पहचान तक मिटा देते हैं।

संगीत – दर्द और जुनून का मेल

फिल्म का टाइटल सॉन्ग 'बिन तेरे बेचैन' अपनी संवेदनशील धुन और गहरे बोलों के कारण पहले ही दर्शकों के दिलों में जगह बना चुका है। साउंडक्लाउड और यूट्यूब पर उपलब्ध यह गाना प्रेम के जुनून और उसके दर्द को खूबसूरती से व्यक्त करता है। फिल्म का संगीत कहानी की भावना को और गहराई देता है।

हरियाणवी सिनेमा में संगीत का विशेष महत्व है, क्योंकि यह दर्शकों को कहानी से जोड़ने का सबसे प्रभावी माध्यम है। इस फिल्म के गाने केवल मनोरंजन के लिए नहीं बनाए गए हैं, बल्कि वे फिल्म की थीम और भावना को भी दर्शाते हैं। टाइटल ट्रैक के अलावा, फिल्म के अन्य गाने भी दर्शकों को भावनात्मक रूप से जोड़ते हैं।

हरियाणवी सिनेमा का नया चेहरा

'बिन तेरे बेचैन' हरियाणवी सिनेमा के लिए एक नया प्रयोग है। यह केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि एक ऐसा अनुभव है जो दर्शकों को सोचने पर मजबूर कर देता है। यह फिल्म एक स्पष्ट संकेत है कि हरियाणवी सिनेमा अब केवल कॉमेडी और पारंपरिक कथाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह नए और असामान्य विषयों को भी अपनाने को तैयार है।

हरियाणवी फिल्म इंडस्ट्री के विकास को देखते हुए, यह कहना गलत नहीं होगा कि अब यह बॉलीवुड और अन्य क्षेत्रीय सिनेमा के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए तैयार हो रही है। 'बिन तेरे बेचैन' जैसी फिल्में इस बदलाव का प्रमाण हैं, जो यह दर्शाती हैं कि हरियाणवी सिनेमा में भी विविधता और नवाचार की कोई कमी नहीं है।

प्रेम की लत – एक अनदेखा पहलू

अधिकांश प्रेम कहानियों में प्यार को एक सकारात्मक भावना के रूप में दिखाया जाता है, लेकिन इस फिल्म में प्रेम के नशे और उसकी लत पर ध्यान केंद्रित किया गया है। यह एक ऐसा विषय है, जिस पर बहुत कम फिल्में बनी हैं। प्रेम की लत एक वास्तविक समस्या है, जिसे आमतौर पर नजरअंदाज कर दिया जाता है।

कई लोग प्यार में इस हद तक डूब जाते हैं कि वे अपने करियर, परिवार और यहां तक कि खुद की पहचान को भी भुला देते हैं। यह फिल्म एक चेतावनी के रूप में काम करती है और दर्शकों को यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या उनका प्रेम वास्तव में उन्हें खुश कर रहा है या सिर्फ उनकी मानसिक और भावनात्मक स्थिरता को नुकसान पहुंचा रहा है।

फिल्म के किरदार और उनकी गहराई

फिल्म में मुख्य किरदार को एक जटिल और गहरे व्यक्तित्व के रूप में दिखाया गया है। यह किरदार प्रेम में पूरी तरह डूबा हुआ है और उसकी दुनिया केवल उसके प्रेमी के इर्द-गिर्द घूमती है। लेकिन जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, हम देखते हैं कि उसका यह जुनून उसे धीरे-धीरे बर्बाद कर देता है।

फिल्म का खलनायक कोई बाहरी व्यक्ति नहीं, बल्कि खुद मुख्य किरदार की मानसिकता और उसकी लत है। यह एक अनोखा दृष्टिकोण है, जो दर्शकों को सोचने पर मजबूर करता है कि असली दुश्मन कौन है – समाज, परिस्थितियाँ या खुद उनकी अपनी इच्छाएँ?

देखें और खुद तय करें

अगर आप एक ऐसी फिल्म देखना चाहते हैं जो हरियाणवी सिनेमा की पारंपरिक धारा से हटकर है, तो 'बिन तेरे बेचैन' आपके लिए हो सकती है। आप इसे STAGE ऐप पर ऑनलाइन देख सकते हैं और खुद अनुभव कर सकते हैं कि प्रेम की यह यात्रा कितनी गहरी और अनूठी हो सकती है।

फिल्म की सिनेमैटोग्राफी, बैकग्राउंड स्कोर और अभिनय इसे एक संपूर्ण अनुभव बनाते हैं। अगर आप भावनात्मक कहानियों और मनोवैज्ञानिक विषयों में रुचि रखते हैं, तो यह फिल्म निश्चित रूप से आपके लिए एक बेहतरीन विकल्प होगी।

निष्कर्ष

'बिन तेरे बेचैन' हर किसी के लिए नहीं है – यह उन लोगों के लिए है जो प्रेम की परछाइयों को समझने का साहस रखते हैं। यह फिल्म प्रेम के जश्न से ज्यादा उसकी कड़वाहट पर केंद्रित है, और यही इसे खास बनाता है। यह न केवल एक प्रेम कहानी है, बल्कि यह एक मनोवैज्ञानिक यात्रा भी है, जो प्रेम और उसकी लत के विभिन्न पहलुओं को उजागर करती है।

हरियाणवी सिनेमा के इस नए प्रयोग को लेकर आपकी क्या राय है? क्या आपको लगता है कि इस तरह की और फिल्में बननी चाहिए जो पारंपरिक ढर्रे से हटकर हों?

जहांगीरपुरी में पानी आ रहा है गंदा, परेशान है हर एक बंदा:राघव

नई दिल्ली: सराय पीपल थला ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भारत सिंह राघव ने बताया कि जहांगीरपुरी क्षेत्र में गंदा पानी आने की वजह से यहां के लोगों को परेशान होना पड़ रहा है।

उन्होंने आगे बताया कि सरकार बदली है, लेकिन दिल्ली में अभी भी हालात जस के तस है। दिल्ली की जनता कई समस्याओं से जूझ रही है। जहां एक ओर जाम की समस्या से दिल्ली की जनता को दो-चार होना पड़ता है। वहीं दिल्ली की जनता गंदे पानी की समस्या से जूझ रही है। श्री राघव ने आगे बताया कि जहांगीरपुरी के कई ब्लॉको में गंदा पानी आने की वजह से लोगों को परेशान होना पड़ रहा है। जनता को बाजार से मंहगें दामों पर पानी खरीद कर पीना पड़ रहा है। उन्होंने दिल्ली में शासित भाजपा सरकार से मांग करते हुए कहा कि सरकार को पानी की समस्या पर ध्यान देने की जरूरत है, जिससे की जनता को परेशान न होना पडे। उन्होंने बताया कि सरकार की जिम्मेवारी बनती है कि वह जनता को शुद्ध जल मुहैया करवाएं।

लेखक की स्वतंत्रता बनाम संपादकीय नीति: बहस के नए आयाम

संपादक आमतौर पर अनूठी और मौलिक रचनाएँ चाहते हैं ताकि उनकी पत्रिका की विशिष्टता बनी रहे। दूसरी ओर, लेखकों को यह स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वे अपनी रचनाएँ अधिक से अधिक स्थानों पर भेज सकें, खासकर जब संपादक बिना किसी समयसीमा के रचनाओं को स्वीकार या अस्वीकार करने का अधिकार रखते हैं। साहित्य और प्रकाशन की दुनिया में संपादकों और लेखकों दोनों की भूमिका महत्वपूर्ण है। यदि पारदर्शिता और संतुलन बनाया जाए, तो यह दोनों के लिए लाभकारी होगा और साहित्य का उद्देश्य—विचारों का प्रसार—पूरी तरह से साकार हो सकेगा।

डॉ. सत्यवान सौरभ

साहित्यिक प्रकाशन जगत में यह बहस लंबे समय से जारी है कि लेखक को अपनी रचनाएँ एक से अधिक पत्रिकाओं में भेजने की स्वतंत्रता होनी चाहिए या नहीं। जबकि संपादक किसी भी रचना को छापने या न छापने के लिए स्वतंत्र होते हैं और उन पर कोई समयसीमा लागू नहीं होती, तो लेखक को भी यह अधिकार क्यों नहीं मिलना चाहिए कि वह अपनी रचना जितनी चाहें जगहों पर भेजे? यह प्रश्न आज के डिजिटल युग में और भी प्रासंगिक हो गया है, जहाँ सूचना और सामग्री के प्रसार की गति अत्यधिक तेज हो चुकी है।

संपादकीय दृष्टिकोण: अनूठेपन की चाह

अधिकांश संपादक यह मानते हैं कि किसी पत्रिका की साख और प्रतिष्ठा इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें प्रकाशित सामग्री मौलिक और अनूठी हो। यदि कोई रचना पहले से ही किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित हो चुकी है, तो पाठकों को वह पहले ही पढ़ने को मिल चुकी होगी, जिससे नई पत्रिका की विशिष्टता प्रभावित हो सकती है। संपादकों का यह भी मानना है कि यदि एक ही रचना कई जगह प्रकाशित हो, तो पाठकों का भरोसा पत्रिका से कम हो सकता है।

इसके अलावा, संपादकीय दृष्टिकोण से एक और महत्वपूर्ण तर्क यह दिया जाता है कि यदि एक लेखक एक ही रचना को कई जगह भेजता है और वह कई संपादकों द्वारा स्वीकृत कर ली जाती है, तो इससे पत्रिकाओं के बीच असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इसलिए कई पत्रिकाएँ इस नीति का पालन करती हैं कि वे केवल वही रचनाएँ स्वीकार करेंगी जो पहले कहीं और प्रकाशित न हुई हों।

लेखक की स्वतंत्रता: अधिकार और सीमाएँ

लेखकों की दृष्टि से देखा जाए तो यह नीति कई बार अनुचित लगती है। जब संपादक को अपनी पत्रिका के लिए सर्वश्रेष्ठ सामग्री चुनने की स्वतंत्रता प्राप्त है, तो लेखक को भी यह अधिकार होना चाहिए कि वह अपनी रचना को अधिक से अधिक स्थानों पर भेजकर प्रकाशन के अवसर बढ़ा सके।

प्रकाशन में देरी

कई बार संपादक रचनाओं को महीनों तक रोककर रखते हैं और अंततः अस्वीकार कर देते हैं। इससे लेखक का कीमती समय नष्ट होता है और उनकी रचना लंबे समय तक अप्रकाशित रह जाती है। कई लेखक केवल एक पत्रिका में अपनी रचना भेजने के कारण महीनों या वर्षों तक इंतजार करते रहते हैं, लेकिन अगर अंत में उन्हें अस्वीकार कर दिया जाता है, तो उनके पास विकल्प सीमित रह जाते हैं।

विभिन्न पाठक वर्ग

हर पत्रिका का अपना अलग पाठक वर्ग होता है। यदि कोई रचना कई जगह छपती है, तो यह लेखक के लिए लाभदायक हो सकता है क्योंकि उसकी रचना अधिक से अधिक पाठकों तक पहुँचती है। यह भी देखा गया है कि विभिन्न पत्रिकाएँ विभिन्न विषयों पर केंद्रित होती हैं, जिससे लेखक की रचनाएँ अलग-अलग प्लेटफार्म पर सही पाठकों तक पहुँच सकती हैं।

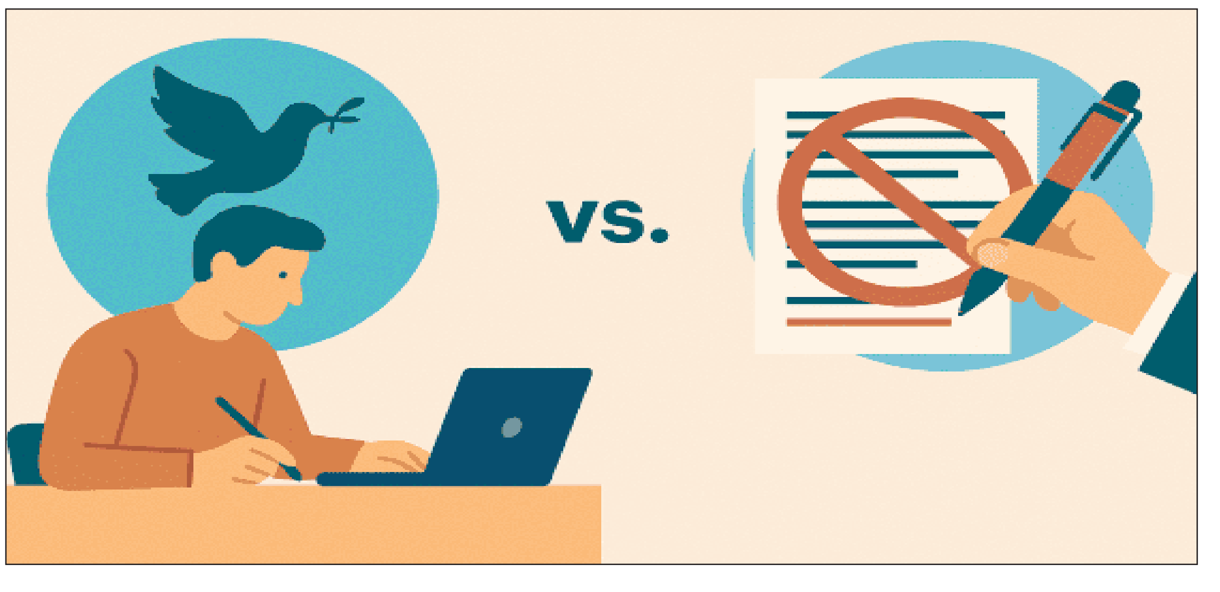

लेखक के अधिकार

जिस तरह संपादक को अपनी पत्रिका के लिए सर्वोत्तम रचनाएँ चुनने की स्वतंत्रता है, उसी तरह लेखक को भी यह स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वह अपनी रचना को जहाँ चाहे भेज सके। यदि संपादक को यह अधिकार है कि वे किसी भी समय रचना को अस्वीकार कर सकते हैं, तो लेखक को भी यह अधिकार होना चाहिए कि वह अपनी रचनाओं को विभिन्न मंचों पर भेजकर अधिक अवसर प्राप्त कर सके।

डिजिटल युग में बदलते नियम

आज के डिजिटल युग में, जहाँ ब्लॉग, ऑनलाइन पत्रिकाएँ और सोशल मीडिया प्लेटफार्मों की भरमार है, वहाँ इस बहस ने नया रूप ले लिया है। पहले जहाँ लेखकों को केवल प्रिंट पत्रिकाओं में छपने के लिए संघर्ष करना पड़ता था, वहीं अब वे विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफार्मों पर अपनी रचनाएँ प्रकाशित कर सकते हैं।

ऑनलाइन प्रकाशन की नई संभावनाएँ

अब कई ऑनलाइन पत्रिकाएँ और ब्लॉग ऐसे प्लेटफार्म उपलब्ध करा रहे हैं, जहाँ लेखक अपनी रचनाएँ बिना किसी रोक-टोक के प्रकाशित कर सकते हैं। इससे न केवल लेखकों को अधिक स्वतंत्रता मिल रही है, बल्कि पाठकों के लिए भी सामग्री की उपलब्धता बढ़ रही है।

कंटेंट सिंडिकेशन और क्रॉस-प्लेटफार्म प्रकाशन

कई बड़े मीडिया हाउस और डिजिटल प्रकाशन समूह अब ₹कंटेंट सिंडिकेशन₹ की प्रक्रिया अपना रहे हैं, जहाँ एक ही सामग्री को विभिन्न प्लेटफार्मों पर पुनः प्रकाशित किया जाता है। इससे लेखकों को अधिक व्यूअरशिप और पाठकों तक पहुँचने का अवसर मिलता है।

समाधान और संतुलन की आवश्यकता

इस बहस का समाधान संतुलन स्थापित करने में है। दोनों पक्षों की चिंताओं को ध्यान में रखते हुए कुछ संभावित समाधान निकाले जा सकते हैं:

पारदर्शी संपादकीय नीति

यदि कोई पत्रिका केवल मौलिक रचनाएँ ही प्रकाशित करना चाहती है, तो उसे स्पष्ट रूप से यह नियम बताना चाहिए और यह भी निर्दिष्ट करना चाहिए कि कितने समय में निर्णय लिया जाएगा। इससे लेखकों को यह स्पष्ट रहेगा कि वे अपनी रचना को कितने समय तक किसी पत्रिका के लिए आरक्षित रखें।

साझा प्रकाशन की अनुमति

कुछ पत्रिकाएँ यह नीति अपना सकती हैं कि वे ऐसी रचनाएँ स्वीकार करेंगी जो पहले सीमित पाठक वर्ग तक पहुँची हों, लेकिन व्यापक स्तर पर नहीं। यह एक मध्य मार्ग हो सकता है, जिससे लेखकों और संपादकों दोनों के हितों की रक्षा हो सके।

संपादन और पुनर्प्रकाशन की सुविधा

यदि कोई रचना पहले प्रकाशित हो चुकी है, तो उसे थोड़ा संशोधित और अद्यतन कर पुनः प्रकाशित करने की अनुमति दी जानी चाहिए। इससे न केवल पत्रिकाओं की विशिष्टता बनी रहेगी, बल्कि लेखकों को भी अपनी रचनाओं को दोबारा प्रस्तुत करने का अवसर मिलेगा।

साहित्य और प्रकाशन की दुनिया में लेखक और संपादक, दोनों का योगदान महत्वपूर्ण है। एक ओर संपादकों की जिम्मेदारी होती है कि वे अपने पाठकों को नई और मौलिक सामग्री दें, तो दूसरी ओर लेखकों के अधिकारों की भी रक्षा की जानी चाहिए। यदि एक स्वस्थ और पारदर्शी प्रणाली विकसित की जाए, तो यह दोनों पक्षों के लिए लाभदायक होगी। अंततः, साहित्य का उद्देश्य विचारों का प्रसार और ज्ञान का विस्तार करना है, और इसमें अनावश्यक प्रतिबंधों की जगह नहीं होनी चाहिए।

क्या एक आदर्श संतुलन संभव है?

इस प्रश्न का उत्तर आसान नहीं है, लेकिन यह बहस साहित्यिक समुदाय में पारदर्शिता और संवाद को प्रोत्साहित कर सकती है। यदि पत्रिकाएँ लेखकों के अधिकारों का सम्मान करें और लेखक संपादकीय नीतियों को समझते हुए उनके अनुरूप कार्य करें, तो एक बेहतर प्रकाशन संस्कृति का निर्माण किया जा सकता है।

संस्कारशाला: सेफ्टी पिन-सरलता में छिपी स्थिरता का जीवन पाठ

लेखिका: प्रियंका श्रीवास्तव

संस्कारशाला का उद्देश्य है जीवन के मूलभूत मूल्यों को आधुनिक संदर्भ में समझना और अगली पीढ़ी को सहज तरीक़े से जीवन के महत्वपूर्ण पाठ सिखाना। ऐसे ही एक प्रेरणादायक उदाहरण के माध्यम से आज हम बात करेंगे — सेफ्टी पिन की।

सेफ्टी पिन: एक छोटा आविष्कार, बड़ी सीख

1849 में वाल्टर हंट द्वारा बनाया गया सेफ्टी पिन दिखने में भले ही छोटा हो, लेकिन यह हमें सिखाता है कि हर चीज़ का मूल्य उसके आकार से नहीं, उसकी उपयोगिता से होता है। एक छोटा-सा उपकरण जो न केवल कपड़े जोड़ता है, बल्कि कई बार जीवन की अनपेक्षित परिस्थितियों में बड़ी राहत बन जाता है।

यह बात बच्चों को भी समझानी चाहिए — कि हर व्यक्ति, हर वस्तु और हर अनुभव का महत्व है, चाहे वह छोटा क्यों न हो। संस्कारशाला में यदि हम बच्चों को यह उदाहरण दें, तो वे जीवन को अधिक आत्मीयता और गहराई से समझ पाएंगे।

जीवन में सेफ्टी पिन जैसे मूलभूत सिद्धांत

1.सरलता सबसे बड़ी समझदारी है

जैसे सेफ्टी पिन का डिज़ाइन बहुत साधारण है, पर उसकी उपयोगिता असाधारण — वैसे ही हमारा जीवन जितना सरल होगा, उतना शांत और सुसंगत होगा। बच्चों को यह सिखाना चाहिए कि दिखावे से ज़्यादा जरूरी है सादगी और समझ।

2.स्थिरता और मूल्यों में विश्वास

सेफ्टी पिन में बदलाव की ज़रूरत कभी नहीं पड़ी — क्योंकि उसकी नींव मजबूत थी। जीवन के कुछ मूल्य भी ऐसे ही होते हैं — जैसे ईमानदारी, सहनशीलता, और निष्ठा — जिन्हें कभी बदलने की ज़रूरत नहीं होती।

3.हर परिस्थिति में उपयोगी बनो

सेफ्टी पिन कई तरीकों से काम आती है, उसी तरह हमें भी लचीला और बहुपयोगी बनना चाहिए — चाहे परिवार हो, समाज हो या कार्यक्षेत्र। जो व्यक्ति हर परिस्थिति में सकारात्मक रूप से योगदान देता है, वही जीवन में सच्चा सफल होता है।

4.छोटी चीज़ों की अहमियत सिखाओ

बच्चों को यह बताना ज़रूरी है कि कोई भी वस्तु या व्यक्ति तुच्छ नहीं होता। एक छोटी-सी सेफ्टी पिन की तरह, कई बार जिन लोगों को हम नज़रअंदाज़ कर देते हैं, वही हमारे जीवन में सबसे अधिक मददगार साबित होते हैं।

संस्कारों की भाषा में सेफ्टी पिन

बच्चों के मन में यदि हम यह भाव भर सकें कि "हर चीज़ का उद्देश्य होता है, और हर उद्देश्य का सम्मान जरूरी है," तो उन्हें भविष्य में जीवन के किसी भी क्षेत्र में दिशा देने के लिए बाहरी प्रेरणा की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

सेफ्टी पिन की तरह, वे स्वयं अपने विचारों से जुड़े रहेंगे, सुरक्षित रहेंगे और दूसरों को भी जोड़ने वाले बनेंगे।

संस्कारशाला की यह यात्रा हमें बार-बार यह याद दिलाती है कि असली शिक्षा केवल किताबों से नहीं, जीवन के अनुभवों और प्रतीकों से आती है। सेफ्टी पिन एक ऐसा ही प्रतीक है — जो हमें सिखाता है कि स्थिरता, सादगी, उपयोगिता और विनम्रता ही जीवन के मजबूत स्तंभ हैं।

आइए, अपने बच्चों को सिर्फ बड़े सपने देखना ही नहीं, बल्कि बड़ी सीखों को छोटे उदाहरणों से समझना भी सिखाएं। यही सच्ची संस्कारशाला है।

भाग्य नगर तेलंगाना ज्वैलर्स एवं पॉन ब्रोकर एसोसिएशन के अध्यक्ष बने मदनलाल रावल सचिव बने तुलसाराम सिन्दडॉ

मल्लापुर। भाग्य नगर तेलंगाना ज्वैलर्स एवं पॉन ब्रोकर ऐसोसिएशन के चुनाव शुक्रवार को मल्लापुर बढेर में सर्वसम्मति से संपन्न हुआ, वर्तमान अध्यक्ष कालुराम काग व सचिव बाबुलाल मुलेवा ने आम सदस्यों कि मिटिंग में चुनाव कराने का फैसला लिया एवं दो चुनाव अधिकारी नियुक्त किये गये नारायण लाल परिहार व चन्दप्रकाश गेहलोत दोनों ने अपने विवेक से बहुत अच्छा चुनाव प्रक्रिया पुर्ण कराई गई नवनिर्वाचित अध्यक्ष मदनलाल रावल, उपाध्यक्ष 1 मोहनलाल हाम्बड़, उपाध्यक्ष 2 महावीर जैन, उपाध्यक्ष 3 तेजाराम काग, उपाध्यक्ष 4 - राजु शर्मा, सचिव तुलसाराम सिन्दडॉ, सहसचिव हरीश शर्मा कोषाध्यक्ष - ओमप्रकाश पंवार मिडिया प्रभारी सुरेश सैणचा चुने गये, नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्रीमान मदनलाल जी रावल ने सभी सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

आर्ट निर्भर भारत: प्रेमचंद के फटे जूते से आज के कलाकारों तक

मुंशी प्रेमचंद, जिनकी लेखनी ने समाज का आईना दिखाया, अपने जीवन में आर्थिक कठिनाइयों से जूझते रहे। प्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई ने अपने निबंध ₹प्रेमचंद के फटे जूते₹ में इसी विडंबना को उजागर किया। यह सिर्फ एक साहित्यकार की गरीबी की कहानी नहीं, बल्कि समाज की उस मानसिकता का भी प्रतीक है, जो कला को महत्व तो देता है, लेकिन कलाकार को नहीं।

आज भी यही स्थिति बनी हुई है। कला की प्रशंसा होती है, लेकिन कलाकारों की आर्थिक स्थिति पर कोई ध्यान नहीं देता। मौजूदा दौर में ₹आर्ट निर्भर भारत₹ जैसी पहलें इस सोच को बदलने की कोशिश कर रही हैं। यह पहल डॉ. अंकुर शरण द्वारा शुरू की गई है, जिन्होंने बचपन से ही कला जगत की चुनौतियों को करीब से देखा है। उनका उद्देश्य उन कलाकारों को मंच देना है, जो आर्थिक कारणों से अपनी प्रतिभा को बड़ा रूप नहीं दे पाते।

प्रेमचंद से सीख और आज की प्रासंगिकता

प्रेमचंद के दौर में साहित्यकारों को जीविका चलाना मुश्किल था, और आज भी कई प्रतिभाशाली कलाकार बिना किसी उचित पहचान के संघर्ष कर रहे हैं। समाज में कला तभी जीवित रह सकती है, जब कलाकार आत्मनिर्भर हों। इस संदर्भ में, ₹आर्ट निर्भर भारत₹ कलाकारों को आर्थिक सशक्तिकरण के साथ-साथ एक व्यापक मंच देने की दिशा में काम कर रहा है।

समस्या की गहराई: कला और आर्थिक तंगी

प्रेमचंद को अपने जीवनयापन के लिए सरकारी नौकरी करनी पड़ी, क्योंकि लेखन से पर्याप्त कमाई नहीं हो रही थी।

आज भी कई लोक कलाकार, चित्रकार, मूर्तिकार, और शिल्पकार अपनी जीविका के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

कला को समर्थन तभी मिलता है जब वह व्यावसायिक हो जाती है, वरना कलाकारों को "Good for nothing" समझा जाता है।

Learn and then remove L to Earn.

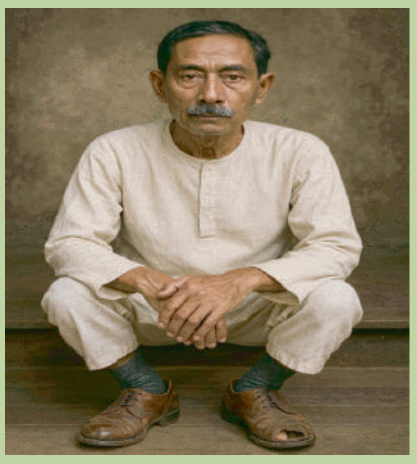

समाधान: कला को आत्मनिर्भर बनाना

कलाकारों को सही मंच और आर्थिक संसाधन मुहैया कराना जरूरी है।

डिजिटल युग में ऑनलाइन प्रदर्शनियों, NFT, और सोशल मीडिया के माध्यम से कलाकारों को वैश्विक पहचान दी जा सकती है।

सरकार और निजी संगठनों को कलाकारों के लिए योजनाएं बनानी चाहिए, जिससे वे अपने हुनर को पेशे में बदल सकें।

ग्लोबल कन्फेडरेशन ऑफ़ एनजीओज़ और वॉलंटियर्स के सहयोग से, ₹आर्ट निर्भर भारत₹ अभियान को व्यापक स्वीकृति मिल रही है। यह पहल युवाओं के बीच कला की खुशियों का जश्न मनाने और इसे मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों का अभिन्न हिस्सा बनाने की दिशा में कार्यरत है। आइए, अपनी जड़ों से जुड़ें और अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानें।

डॉ. अंकुर शरण के "आर्ट निर्भर भारत" अभियान की यही कोशिश है कि प्रेमचंद के फटे जूते अब किसी कलाकार की पहचान न बनें, बल्कि उसकी कला ही उसकी ताकत बने। क्या हम कला को सिर्फ सराहेंगे या कलाकारों को भी सहयोग देंगे? यही असली सवाल है।

मारवाड़ी युवा मंच सिकंदराबाद शाखा द्वारा अमृत धारा का शुभारंभ

सिकंदराबाद स्थित मारवाड़ी युवा मंच सिकंदराबाद शाखा मंत्री पन्नालाल भाटी द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार सिकंदराबाद शाखा अध्यक्ष पंकज राठौर की अध्यक्षता में राष्ट्रीय प्रकल्प अमृत धारा के तहत अपनी शाखा कि तृतीय अस्थाई अमृत धारा का शुभारंभ पोट मार्केट सिकंदराबाद में कि गई ।इस अवसर पर पोट मार्केट ज्वैलर्स असोसिएशन के महामंत्री सुरेश कोठारी व सह कोषाध्यक्ष कैलाश लोया प्रांतीय अध्यक्ष मनीष नाहर, सिकंदराबाद शाखा भूतपूर्व अध्यक्ष प्रदीप मंखाणा, मदनलाल सांखला , निवर्तमान अध्यक्ष जसवंत राज मुथा, वरिष्ठ नारायण चावड़ा, कैलाश वैष्णव, दिनेश गहलोत, दिनेश पूरी, गौतम भायल, आदि का सराहनीय योगदान रहा ।गौ सेवक स्व श्री केवलचन्द राठौड़ की स्मृति में उनके परिवार द्वारा अस्थायी टेंट प्रदान किया गया ।कार्यक्रम के अंत में पधारे हुए सभी अतिथियों का एवं सदस्यों गणों का शाखा के अमृत धारा संयोजक जीतू चावड़ा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

झारखंड के पूर्व मंत्री बन्ना गुप्ता के आप्त सचिव समेत इक्कीस इलाकों में ईडी का छापा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , ईडी ने शुक्रवार को झारखंड के पूर्व स्वस्थ मंत्री बन्ना गुप्ता के आप्त सचिव समेत राजधानी के दो ठिकानों के अलावे देश के कुल 21 इलाकों में आयुष्मान भारत योजना की गड़बड़ी पर छापा मारा है. यह छापा आयुष्मान भारत योजना में गड़बड़ी को लेकर भारत के महा लेखा परीक्षक द्वारा संसद में पेश रिपोर्ट के बाद इस बड़ी कारवाई को आज झारखंड में देखने को मिला है ।

रांची के बरयातू थाना क्षेत्र स्थित अरविंद मार्ग के रश्मि एनक्लेव और रामेश्वरम लेन के श्यामा एनक्लेव में थर्ड फ्लोर पर रहने वाले सुजीत यादव के ठिकानों पर यह रेड पड़ा है. इस दौरान सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किये गये हैं

आयुष्मान घोटाला से संबंधित मामले में ईडी ने जमशेदपुर के एनएच-33 मार्ग के बिग बाजार से पीछे स्थित नीलगिरी कॉलोनी में बन्ना गुप्ता के आप्त सचिव ओम प्रकाश सिंह गुड्डू के ठिकानों पर छापा मारा है. जमशेदपुर के कई इलाकों पर प्रर्वतन निदेशालय ने रेड मारी है, लेकिन इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हो सकी है. ईडी के अधिकारी ओम प्रकाश सिंह गुड्डू के परिजनों से पूछताछ कर रहे हैं. किसी को भी अंदर जाने की इजाजत नहीं दी जा रही है.दरअसल ईडी ने आयुष्मान भारत योजना के तहत झारखंड में हुई गड़बड़ियों को लेकर दर्ज ईसीआईआर की जांच शुरू की है. कुछ दिन पहले सीएजी रिपोर्ट में इसका खुलासा भी हुआ था. जिसमें कहा गया था कि कुछ अस्पताल फर्जी मरीजों का इलाज कर करोड़ों की राशि का भुगतान ले लिया. यहां तक कि कई ऐसे लोगों के नाम पर बिल बना दिया गया जिसकी पहले ही मौत हो चुकी है. इसके बाद प्रर्वतन निदेशालय ने झारखंड स्टेट हेल्थ सोसाइटी और स्वास्थ्य विभाग से रिपोर्ट मांगी थी. ऐसी संभावना जतायी जा रही है कि इसी रिपोर्ट के आधार पर ईडी ने जांच शुरू की और शुक्रवार को संदिग्ध लोगों के ठिकानों पर छापा मार दिया. कुल 200 से अधिक अस्पताल, इंश्योरेंस और दवा कंपनियां जांच के दायरे में है. ।

ओडिशा राज्य आपूर्ति सहायता संघ का राज्य सरकार को मांग पत्र

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़शा

भुवनेश्वर। संघ के संपादक संजीव कुमार दाश, संपादक अरुण कुमार बारिक, कोषाध्यक्ष मोतीलाल साहू और संघ के मुख्य प्रबंधन समिति के सदस्यों के साथ एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई ! इसमें वे बारह वर्षों तक उपेक्षित रहे तथा सरकारी नियुक्तियां मिलने के बावजूद अपने कार्य से संतुष्ट नहीं थे ! इसीलिए वे न्यूनतम मजदूरी से भी कम पर काम कर रहे थे और अधिक मजदूरी के लिए राज्य सरकार से शिकायत कर रहे थे ! पिछली सरकार को कई बार सूचित किया गया, लेकिन वह नहीं आई ! लेकिन अगर यह सरकार इन लोगों का वेतन बढ़ा दे और इन्हें स्थायी कर दे तो ये हमेशा के लिए सरकार के साथ रहेंगे !

सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 में बदलाव से आरटीआई कानून कमजोर भ्रष्टाचारियों को मिलेगी राहत

हिसार/ चण्डीगढ़/नई दिल्ली- सूचना का अधिकार अधिनियम-2005 को लोकतंत्र का सबसे मजबूत स्तंभ माना माना जाने लगा था। यह कानून नागरिकों को सार्वजनिक प्राधिकरणों या सरकारी तंत्र में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने का अधिकार देता है। लेकिन हाल ही में केंद्र सरकार द्वारा किए गए संशोधनों ने इस सशक्त कानून की मूल भावना को कमजोर कर दिया है।

अब आरटीआई के माध्यम से भ्रष्टाचार को उजागर करने, फर्ज़ी डिग्री पर नौकरी हासिल करने वालों को उजागर करने, सरकारी अधिकारियों की जवाबदेही सुनिश्चित करने और प्रशासनिक निर्णयों की जांच करने में बाधाएं उत्पन्न हो गई हैं।

क्यों कमजोर हुआ आरटीआई कानून?

हाल ही में केंद्र सरकार ने किए गए संशोधनों से इस कानून की मूल भावना कमजोर हो गई है।

भ्रष्टाचार या मानवाधिकार उल्लंघन के मामलों को छोड़कर, केंद्रीय और राज्य दोनों ही खुफिया और सुरक्षा संगठनों को आरटीआईअधिनियम से छूट दी गई है।

संशोधन कब और किसने किया?

22.07.2019 केंद्र सरकार ने सूचना का अधिकार (संशोधन) विधेयक-2019 को लोकसभा में पेश किया। उसके बाद दिनांक 25.07.2019 को यह विधेयक राज्यसभा में पारित हुआ तथा दिनांक 01.08.2019 को राष्ट्रपति ने इस विधेयक को मंजूरी दी, जिसके बाद यह कानून बन गया। दिनांक 24.10.2019 को सरकार ने इसे आधिकारिक तौर पर लागू कर दिया। इसके बाद, 2023 में डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम के माध्यम से एक और बड़ा संशोधन किया गया। इसे अगस्त 2023 में पारित किया गया और राष्ट्रपति की मंजूरी के साथ लागू कर दिया गया।

धारा 8(1)(जे) में संशोधन के तहत, अब किसी भी व्यक्ति की व्यक्तिगत जानकारी को आरटीआई के माध्यम से प्राप्त करना असंभव हो गया है। भले ही सूचना जनहित में क्यों न हो, फिर भी उसे गोपनीयता के नाम पर रोका जा सकेगा।

संशोधन का क्या होगा असर?

व्यक्तिगत जानकारी का खुलासा बंद, राज्य सूचना आयोग पर केंद्र का नियंत्रण एवं सूचना आयुक्तों की स्वतंत्रता समाप्त।

संशोधन का किसे होगा नुकसान?

न्यायपालिका, खोजी पत्रकार, आरटीआई एक्टिविस्ट, पत्रकार एवं आम नागरिक।

संशोधन का किसे होगा फायदा?

राजनेता, सत्ताधारी सरकार, भ्रष्ट अधिकारी एवं कंपनियां।

इन संशोधनों के परिणामस्वरूप, आरटीआई कार्यकर्ताओं और नागरिकों को सरकारी सूचनाएं प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है, जिससे भ्रष्टाचारियों को राहत मिल सकती है।

नरेश गुणपाल आरटीआई एक्टिविस्ट

वक्फ बोर्ड पर बीजेडी का यू-टर्न

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़शा

भुबनेश्वर : पार्टी प्रमुख नवीन पटनायक ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि उनका भाजपा के साथ गुप्त रिश्ता है। बीजद द्वारा वॉकथ्रू संशोधन विधेयक पर अपना रुख बदलने के बाद यह बात एक बार फिर स्पष्ट हो गई है। बीजद ने शुरू में इस विधेयक का विरोध करने की घोषणा की थी, लेकिन अंतिम समय में उसने यू-टर्न ले लिया, जिससे बीजद नेताओं और कार्यकर्ताओं को निराशा हुई ।बुधवार को लोकसभा में वक्फ संशोधन विधेयक पेश किए जाने से पहले बीजद ने अपना रुख स्पष्ट कर दिया। इसने घोषणा की कि वह इस विधेयक का विरोध करेगी। चूंकि पार्टी का लोकसभा में एक भी सदस्य नहीं है, इसलिए समर्थन या विरोध में कोई अंतर नहीं था। लेकिन आज, जब राज्यसभा में वक्फ संशोधन विधेयक पर चर्चा हो रही है, तो बीजद की भूमिका सामने आएगी। क्योंकि राज्यसभा में बीजद के 7 सदस्य हैं। यह संख्या मतदान परिणामों में अंतर लाने की क्षमता रखती है।

गुरुवार को चर्चा में भाग लेते हुए बीजद सांसद मुन्ना खान ने वक्फ विधेयक का विरोध किया। इसलिए, पार्टी के दृष्टिकोण के बारे में किसी को कोई संदेह नहीं था। लेकिन शाम 5:59 बजे बीजद के राज्यसभा नेता डॉ. सस्मित पात्रा का एक ट्वीट (X) आया। इसमें उन्होंने बताया कि वक्फ संशोधन विधेयक पर फैसला सांसदों के विवेक पर छोड़ दिया गया है। यदि विधेयक पर मतदान होता है, तो पार्टी अपने सदस्यों को न्याय, सद्भाव और सभी समुदायों के अधिकारों के लिए अपने विवेक का प्रयोग करने की जिम्मेदारी सौंप रही है। उन्होंने स्पष्ट किया कि पार्टी ने इस संबंध में कोई व्हिप जारी नहीं किया है। इसलिए, समिति ने पार्टी के संशोधित निर्णय को तोड़-मरोड़ कर पेश किया कि बीजद वक्फ संशोधन विधेयक का विरोध नहीं करेगी।

लाठीचार्ज से युवक मृत , बोकारो स्टील को लोगों ने घेरा, तोड़फोड़, आगजनी

झारखंड की सैकडो कंपनियां रैयत दाताओं, विस्थापितों को लोली पोप देने में माहिर

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची। झारखंड की प्रायः कंपनियां मुलवासी , रैयत दाताओ., इलाके के युवाओं को रोजगार दे पाने में आज असफल रहीं है । जिसके अनेकों खबर आये दिनों दिखता रहा है।इस क्रम में बोकारो स्टील में विस्थापित अप्रेंटिस संघ पर पुलिस व सीआई एप एफ द्वारा लाठीचार्ज से एक युवक की मौत होने पर लोगों में आक्रोश फूटा है .शुक्रबार सुबह से ही बोकारो स्टील प्लांट के सभी गेट को बंद कर दिया गया. कई प्रमुख सड़कों को लोगों ने जाम लगा दिया. आक्रोशित लोगों ने गाड़ियों में तोड़फोड़ की और आगजनी भी की. बंद समर्थकों में बीएसएल के खिलाफ आक्रोश देखा जा रहा है. इस बाबत एक प्रबंधक स्तर के एक अधिकारी की गिरफ्तारी की खबर भी आ रही है ।

आज आजसू के बोकारो बंद का असर देखा गया. कोई गाड़ी नहीं चली. सड़क जाम से आवागमन प्रभावित रहा. आजसू के कार्यकर्ता सुबह से ही बोकारो के प्रमुख चौक-चौराहों पर पहुंचे और बंद का समर्थन करने की अपील की. सड़क जाम से आवागमन ठप हो गया. उन्होंने बीसीएल प्रबंधन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की. जोधाडीह मोड़ और चास का तेलमोच्चो पुल समेत कई जगहों पर आजसू के कार्यकर्ताओं ने रोड जाम कर दिया. इसके साथ ही पेट्रोल पंप को भी बंद करा दिया.

सनद रहे कि बोकारो स्टील प्लांट में अप्रेंटिस का प्रशिक्षण लेनेवाले विस्थापितों का आंदोलन 3 अप्रैल 2025 को हिंसक हो गया था. शाम लगभग पांच बजे बैरिकेडिंग तोड़कर इस्पात भवन के अंदर प्रवेश करने की कोशिश करने पर सीआईएसएफ के जवानों ने लाठी चार्ज कर दिया था. इसमें चार विस्थापित घायल हो गए थे. इनमें से एक की बीजीएच में इलाज के दौरान मौत हो गयी थी. मृतक प्रेम महतो (32 वर्ष) हरला थाना क्षेत्र के शिबूटांड़ गांव का रहनेवाला था . गुस्साये युवाओं ने एक बस व बाईक पर आग लगा दी ।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023